अन्फ़ाख़-ए-क़ुदसिया
(अमृत वचन)

प्रकाशक
नज़ारत नश्र-व-इशाअत
सदर अंजुमन अहमदिय्या क़ादियान

अन्फ़ाख़-ए-क़ुदसिया

(अमृत वचन)

भाषण हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी-ए-मा'हूद अलैहिस्सलाम

अवसर

जलसा सालाना 1897 ई. जमाअत अहमदिया

स्थान

क़ादियान

प्रकाशक

नज़ारत नश्र व इशाअत

क़ादियान, ज़िला गुरदासपुर, पंजाब

नाम किताब : **अन्फ़ाख़-ए-क़ुदसिया (अमृत-वचन)**

भाषण : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी मा'हूद

अनुवादक : अन्सार अहमद बी.ए.बी.एड, मौलवी फ़ाज़िल

प्रकाशन वर्ष : मार्च 2012 ई.

संख्या : 1000

प्रकाशन : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान

प्रकाशक

नज़ारत नश्र व इशाअत

क़ादियान-143516

ज़िला गुरदासपुर, पंजाब (भारत)

ISBN - 081-7912-093-7

प्रकाशक की ओर से

हज़रत अक़दस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीहे मौऊद व महदी-ए-मा'हूद अलैहिस्सलाम ने 1897 ई. के जल्सा सालाना क़ादियान के अवसर पर 25, 28, 30 दिसम्बर को प्राणवर्द्धक भाषण दिए जो प्रथम रिपोर्ट जल्सा सालाना तथा अलहकम समाचार पत्र में प्रकाशित हुए तत्पश्चात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रवचनों (मल्फ़ूज़ात) के सैट में सम्मिलित किए गए, फिर 1973 ई. में नज़ारत दावत-व-तब्लीग़ की ओर से ''अन्फ़ाख़े क़ुदसिया'' के नाम से पुस्तक के रूप में प्रकाशित किए गए। इस पुस्तक की आवश्यकता और महत्व की दृष्टि से यह उसका कम्पोज़्ड हिन्दी संस्करण प्रथम बार प्रकाशित किया जा रहा है। यह अनुवाद आदरणीय अन्सार अहमद साहिब बी.ए, बी.एड, मौलवी फ़ाज़िल ने सरल और सुबोध शैली में किया है। ख़ुदा उन्हें प्रतिफल प्रदान करे। आमीन। ये भाषण ज्ञान, आध्यात्म ज्ञान, श्रेष्ठ सदाचार, आत्मशुद्धि , आत्मसुधार, दुआओं, ईमान और इस्लाम के आधारभूत स्तम्भों के महत्व, दर्शन तथा संयम (तक़्वा) जैसी महत्वपूर्ण समस्याओं पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालते हैं तथा जमाअत के प्रशिक्षण का उत्तम माध्यम हैं, अतः पुरुष और स्त्रियों को इसका ध्यानपूर्वक अध्ययन करना चाहिए तथा बच्चों को भी इसके लेखों से परिचित कराना चाहिए ताकि आधुनिक युग में जबकि धार्मिक समस्याओं के ज्ञान और परिचय की नितान्त आवश्यकता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अत्यन्त सरल और नीतिगत शैली में हमारी इस आवश्यकता को पूर्ण किया है। हम इस से यथोचित लाभ प्राप्त करने वाले हों।

अल्लाह तआला हमें इसकी सामर्थ्य प्रदान करे तथा इस पुस्तक के प्रकाशन को प्रत्येक दृष्टि से शुभ और फलदायक बनाए। आमीन

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र-व-इशाअत, क़ादियान

بسم الله الرحمن الرحيم

(1)

भाषण 25, दिसम्बर 1897 ई.

अपनी जमाअत के हित के लिए अत्यन्त आवश्यक बात यह मालूम होती है कि संयम (तक़्वा) के सन्दर्भ में यह नसीहत की जाए क्योंकि यह बात बुद्धिमान के निकट स्पष्ट है कि अल्लाह तआला संयम के अतिरिक्त किसी बात से प्रसन्न नहीं होता। अल्लाह तआला फ़रमाता है –

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ (अन्नहल :129)

जमाअत अहमदिया को विशेषकर संयम की आवश्यकता है

हमारी जमाअत के लिए विशेष तौर पर संयम की आवश्यकता है विशेषतया इस विचार से भी कि एक ऐसे व्यक्ति से संबंध रखते हैं और उसके बैअत के सिलसिले में हैं जिसका दावा अवतार होने का है ताकि वे लोग जो चाहे किसी प्रकार के बैर, द्वेष अथवा द्वैतवाद में लिप्त थे या कैसे भी सांसारिक थे, इन समस्त विपत्तियों से मुक्ति पाएं।

आप जानते हैं कि यदि कोई बीमार हो जाए चाहे उसकी बीमारी छोटी हो या बड़ी यदि उस बीमारी के लिए उपचार न किया जाए और उपचार के लिए कष्ट न उठाया जाए, बीमार अच्छा नहीं हो सकता। मुँह पर एक काला धब्बा निकल कर बहुत बड़ी चिन्ता में डाल देता है कि कहीं यह धब्बा बढ़ते-बढ़ते कुल मुँह को काला न कर दे। इसी प्रकार पाप का भी एक काला धब्बा हृदय पर होता है।

छोटे पाप आलस्य के कारण बड़े पाप हो जाते हैं।

छोटे पाप आलस्य और लापरवाही से बड़े हो जाते हैं। वही छोटा दाग़ है जो बढ़ कर अन्ततः सम्पूर्ण मुँह को काला कर देता है।

परमेश्वर दयालु और कृपालु है वैसा ही महाकोपी, प्रत्यपकारी (बदला लेने वाला) भी है। एक जमाअत को देखता है कि उन का दावा और शेखी बघारना तो बहुत कुछ है और उनकी व्यवहारिक स्थिति ऐसी नहीं तो उसका आक्रोश और क्रोध बढ़ जाता है, फिर ऐसी जमाअत को दण्ड देने के लिए वह काफ़िरों को ही प्रस्तावित करता है। जो लोग इतिहास से परिचित हैं वे जानते हैं कि कई बार मुसलमान काफ़िरों के द्वारा तलवारों से क़त्ल किए गए। जैसे चंगेज़ ख़ाँ और हिलाकू ख़ान ने मुसलमानों को तबाह किया जबकि अल्लाह तआला ने मुसलमानों से सहयोग और सहायता का वादा किया है, परन्तु मुसलमान फिर भी पराजित हुए। इस प्रकार की घटनाएं प्रायः सामने आईं। इसका कारण यही है कि जब अल्लाह तआला देखता है कि जमाअत ला इलाहा इल्लल्लाह तो पुकारती है परन्तु उसका हृदय अन्य ओर है और अपने कार्यों से वह पूर्णतया सांसारिक है तो फिर उसका प्रकोप अपना रूप दिखाता है।

परमेश्वर के प्रति भय किस में है ?

परमेश्वर का भय उसी में है कि मनुष्य देखे कि उस का कथन और कर्म कहाँ तक परस्पर अनुकूलता रखता है फिर जब देखे कि उसका कथन और कर्म समान नहीं तो समझ ले कि वह परमेश्वर के प्रकोप का भाजन बनेगा। जो हृदय अपवित्र है चाहे कथन कितना ही पवित्र हो वह हृदय परमेश्वर के निकट महत्व नहीं पाता अपितु ख़ुदा का प्रकोप उत्तेजित होगा। अतः मेरी जमाअत समझ ले कि वे मेरे पास आए हैं, इसी लिए कि बीजारोपण किया

जाए जिस से वह फलदायक वृक्ष हो जाए। अतः प्रत्येक अपने अन्दर विचार करे कि उसका आन्तरिक कैसा है और उसकी आन्तरिक दशा कैसी है। यदि हमारी जमाअत भी परमेश्वर न करे ऐसी है कि उस के मुख पर कुछ है और हृदय में कुछ है तो फिर शुभ अन्त न होगा। परमेश्वर जब देखता है कि एक जमाअत जो हृदय से रिक्त है और मौखिक तौर पर दावे करती है, वह निस्पृह है वह, परवाह नहीं करता। बदर की विजय की भविष्यवाणी हो चुकी थी, हर प्रकार से विजय की आशा थी, परन्तु फिर भी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रो-रो कर दुआ मांगते थे। हज़रत अबूबकर सिद्दीक ने पूछा कि जब हर प्रकार से विजय का वादा है तो फिर क्रन्दन की आवश्यकता क्या है? आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह हस्ती निस्पृह है अर्थात् सम्भव है कि परमेश्वर के वादे में कोई गुप्त शर्तें हों।

संयमी के लक्षण

अतः सदैव देखना चाहिए कि हम ने संयम और पवित्रता में कहां तक उन्नति की है। इस का मापदण्ड क़ुर्आन है। अल्लाह तआला ने संयमी के लक्षणों में से एक यह भी लक्षण रखा है कि अल्लाह तआला संयमी को सांसारिक झंझटों से स्वतंत्र करके उसके कार्यों का स्वयं अभिभावक हो जाता है जैसे कि फ़रमाया (अत्तलाक़ :3,4) - وَمَنۡ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجۡعَلۡ لَّهٗ مَخۡرَجًا وَّيَرۡزُقۡهُ مِنۡ حَيۡثُ لَا يَحۡتَسِبُ
जो व्यक्ति परमेश्वर से डरता है परमेश्वर प्रत्येक संकट में उसके लिए मुक्त होने का मार्ग निकाल देता है और उसके लिए जीविका के ऐसे साधन उत्पन्न कर देता है कि उसकी कल्पना में हों अर्थात् संयमी (मुत्तक़ी) का यह भी एक लक्षण है कि परमेश्वर संयमी को अनुचित आवश्यकताओं का मुहताज नहीं करता। उदाहरणतया एक दूकानदार विचार करता है कि झूठ के अतिरिक्त उसका कार्य ही नहीं चल सकता इसलिए वह झूठ बोलने से नहीं रुकता तथा झूठ बोलने के लिए वह विवशता प्रकट करता है, परन्तु यह बात कदापि सत्य

नहीं, परमेश्वर संयमी का स्वयं संरक्षक हो जाता है तथा उसे ऐसे अवसर से बचा लेता है जो असत्य पर विवश करने वाले हों। स्मरण रखो जब परमेश्वर को किसी ने छोड़ा तो परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया, जब दयालु (परमेश्वर) ने छोड़ दिया तो शैतान अवश्य अपना नाता जोड़ेगा।

यह न समझो कि परमेश्वर कमज़ोर है वह महा शक्तिशाली है। जब उस पर किसी बात पर भरोसा करोगे वह अवश्य तुम्हारी सहायता करेगा (अत्तलाक़ :4) وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ परन्तु जो लोग इन आयतों के प्रथम सम्बोधित थे वे धार्मिक थे। उनकी समस्त चिन्ताएं मात्र धार्मिक समस्याओं के प्रति थीं तथा सांसारिक समस्याएं परमेश्वर के सुपुर्द थीं। इसलिए परमेश्वर ने उन्हें सांत्वना दी कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। अत: संयम की बरकतों में से एक यह है कि अल्लाह तआला संयमी को उन विपत्तियों से मुक्ति देता है जो धार्मिक समस्याओं के बाहर हों।

परमेश्वर संयमी को विशेष तौर पर आजीविका प्रदान करता है

इसी प्रकार परमेश्वर संयमी को विशेषतौर पर आजीविका प्रदान करता है। यहां मैं मआरिफ़ की आजीविका का उल्लेख करूँगा।

हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आत्मिक आजीविका (मआरिफ़) इतनी प्राप्त हुई कि आप सब पर विजयी हुए

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बावजूद अनपढ़ होने के सम्पूर्ण विश्व का सामना करना था, जिस में अहले किताब (यहूदी, ईसाई), दार्शनिक, उच्चश्रेणी के ज्ञान की सुरुचि रखने वाले तथा विद्वान और स्नातक थे, परन्तु आप को आध्यात्मिक आजीविका इतनी प्राप्त हुईं कि आप सब पर

विजयी हुए और उन सब के दोष निकाले।

यह आध्यात्मिक आजीविका थी कि जिसका उदाहरण नहीं। संयमी की प्रतिष्ठा में अन्य स्थान पर यह भी आया है اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗۤ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ (अलअन्फ़ाल :35) परमेश्वर के वली वे हैं जो संयमी हैं अर्थात् अल्लाह तआला के मित्र। अतः यह कैसी नैमत है कि थोड़े से कष्ट से ख़ुदा का सानिध्य प्राप्त कहलाए। आजकल युग कितना हतोत्साहित है। यदि कोई अधिकारी या अफ़सर किसी को यह कह दे कि तू मेरा मित्र है, या उसे कुर्सी दे और उसका सम्मान करे तो वह शेखी बघारता है, गर्व करता फिरता है, परन्तु उस मनुष्य का कितना श्रेष्ठ पद होगा जिसे परमेश्वर अपना वली या मित्र कहकर पुकारे। परमेश्वर ने हज़रत रसूले करीम (स.अ.व.) के द्वारा यह वादा किया है जैसा कि बुख़ारी की एक हदीस में आता है –

لَا يَزَالُ يَتَقَرَّبُ عَبْدِیْ بِالنَّوَافِلِ حَتّٰی اُحِبَّهٗ فَاِذَا اَحْبَبْتُهٗ كُنْتُ سَمْعَهُ الَّذِیْ يَسْمَعُ بِهٖ وَبَصَرَهُ الَّذِیْ يُبْصِرُ بِهٖ وَيَدَهُ الَّتِیْ يَبْطِشُ بِهَا وَرِجْلَهُ الَّتِیْ يَمْشِیْ بِهَا وَلَئِنْ سَأَلَنِیْ لَاُعْطِيَنَّهٗ وَلَئِنِ اسْتَعَاذَنِیْ لَاُعِيْذَنَّهٗ۔

अर्थात् परमेश्वर फ़रमाता है कि मेरा वली ऐसा सानिध्य, मेरे साथ नवाफ़िल* के द्वारा पैदा कर लेता है......... (अन्त तक)

मनुष्य के शुभ कर्मों के दो भाग

मनुष्य जितने शुभ कर्म करता है उसके दो भाग होते हैं। प्रथम– कर्तव्य, द्वितीय– नवाफ़िल। कर्तव्य अर्थात् जो मनुष्य पर अनिवार्य किया गया हो जैसे क़र्ज़ का उतारना, या शुभ कर्म (नेकी) के सामने शुभ कर्म। इन कर्तव्यों के अतिरिक्त प्रत्येक नेकी के साथ नवाफ़िल होते हैं अर्थात् ऐसी नेकी जो उस के कर्तव्य के अतिरिक्त हो, जैसे उपकार (अहसान) के सामने उपकार

---

* वह अतिरिक्त उपासना (इबादत) जो नमाज़ की भांति अनिवार्य न हो अपितु पुण्य प्राप्ति, धन्यवाद और परमेश्वर की प्रसन्नता हेतु करता है। (अनुवादक)

के अतिरिक्त और उपकार करना ये नवाफ़िल है। ये कर्तव्यों के लिए बतौर परिशिष्ट और पूरक के हैं। इस हदीस में वर्णन है कि परमेश्वर के वली के धार्मिक कर्तव्यों की पूर्णता नवाफ़िल से होती रहती है। उदाहरणतया ज़कात के अतिरिक्त वे अतिरिक्त दान देते हैं। परमेश्वर ऐसे लोगों का वली हो जाता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उसकी मित्रता यहां तक होती है कि मैं उस के हाथ-पांव इत्यादि यहां तक कि उसकी जीभ हो जाता हूँ जिस से वह बोलता है।

मनुष्य का प्रत्येक कर्म परमेश्वर की इच्छानुसार कब होता है

बात यह है कि जब व्यक्ति काम भावनाओं से पवित्र होता और अहंकार त्याग कर परमेश्वर की इच्छानुसार चलता है , उसका कोई कर्म अनुचित नहीं होता अपितु प्रत्येक कर्म परमेश्वर की इच्छानुसार होता है। जहाँ लोग विपत्ति में पड़ते हैं वहां यह बात अवश्य होती है कि वह कर्म परमेश्वर की इच्छानुसार नहीं होता, परमेश्वर की इच्छा उस के विपरीत होती है। ऐसा व्यक्ति अपनी भावनाओं के अधीन चलता है। उदाहरणतया क्रोध में आकर उससे कोई ऐसा कर्म घटित हो जाता है जिस से मुकद्दमे बन जाते हैं, फौजदारियां हो जाती हैं, परन्तु यदि किसी का यह इरादा हो कि परमेश्वर की किताब से सम्मति के बिना उसकी गति और स्थिरता न होगी और अपनी प्रत्येक बात पर परमेश्वर की किताब की ओर लौटेगा तो निश्चित बात है कि परमेश्वर की पुस्तक परामर्श और सम्मति देगी। जैसा कि फ़रमाया وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ (अलअन्आम:60) अत: हम यह इरादा करें कि हम परामर्श परमेश्वर की किताब से लेंगे तो हमें अवश्य परामर्श मिलेगा, परन्तु जो अपनी भावनाओं का अनुसरण करता है वह अवश्य हानि में ही पड़ेगा। प्राय: वह इस स्थान पर पकड़ में आएगा। अत: इसके मुक़ाबले पर परमेश्वर ने फ़रमाया कि वली जो मेरे साथ बोलते, चलते और काम करते हैं वे मानो इस में मुग्ध हैं।

अतएव कोई जितना मुग्धता में कम है वह उतना ही परमेश्वर से दूर है, परन्तु यदि उसकी मुग्धता वैसी ही है जैसा कि परमेश्वर ने फ़रमाया तो उसके ईमान का अनुमान नहीं। उनकी सहायता के बारे में परमेश्वर फ़रमाता है –(हदीस) مَنْ عَادَلِی وَلِیًّا لَقَدْ اٰذَنْتُهٗ بِالْحَرْبِ

जो व्यक्ति मेरे वली का मुकाबला करता है वह मेरे साथ मुकाबला करता है। अब देख लो कि संयमी (मुत्तक़ी) की प्रतिष्ठा कितनी श्रेष्ठ है और उसका स्तम्भ कितना उच्च है, जिसका सानिध्य परमेश्वर के दरबार में ऐसा है कि उसको दुखी करना परमेश्वर को दुःखी करना है , तो परमेश्वर उसका कितना सहायक और सहयोगी होगा।

जो संयमी के पास आ जाता है वह भी बचाया जाता है

लोग बहुत से कष्टों में ग्रसित होते हैं परन्तु संयमी बचाए जाते हैं अपितु जो उनके पास आ जाता है वह भी बचाया जाता है। कष्टों की कोई सीमा नहीं। मनुष्य का आन्तरिक कष्टों से इतना भरा हुआ है कि उसका कोई अनुमान नहीं। रोगी को ही देख लिया जाए कि सहस्त्रों कष्टों को जन्म देने के लिए पर्याप्त हैं परन्तु जो संयम के क़िले में होता है वह उन से सुरक्षित है और जो उस से बाहर है वह एक जंगल में है जो हिंसक जानवरों से भरा हुआ है।

संयमियों को इसी संसार में सच्चे स्वप्नों के द्वारा शुभ संदेश प्राप्त होते हैं

मुत्तकी(संयमी) के लिए एक और भी वादा है لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ (यूनुस :65) अर्थात् जो संयमी होते हैं उन्हें इसी संसार में सच्चे स्वप्नों के माध्यम से शुभ सन्देश प्राप्त होते हैं अपितु इस से भी बढ़ कर वे मुकाशिफ़ात (दिव्य दृष्टि ज्ञान अर्थात् परमेश्वर के वलियों को ग़ैब (परोक्ष) की बातों का परमेश्वर द्वारा ज्ञान हो जाना। अनुवादक) प्राप्त हो जाते

हैं, वे मानव होते हुए ही फ़रिश्तों को देख लेते हैं। जैसा कि फ़रमाया – اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ (हामीम अस्सज्दह :31) अर्थात् जो लोग कहते हैं कि हमारा प्रतिपालक परमेश्वर है और दृढ़ता दिखाते हैं .... अर्थात् परीक्षा के समय व्यक्ति ऐसा दिखा देता है कि मैंने मुख से जो वादा किया था उसे व्यवहारिक तौर पर पूरा करता हूँ।

कष्टों का आना आवश्यक है

क्योंकि कष्टों का आना आवश्यक है जैसे कि यह आयत संकेत करती है اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ (अलअन्कबूत :3) अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जिन्होंने कहा कि हमारा रब्ब अल्लाह है और दृढ़ रहे उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं। भाष्यकारों की ग़लती है कि फ़रिश्तों का उतरना चन्द्रा (मृत्यु के अन्तिम पल) की अवस्था में है यह ग़लत है। इसका अर्थ यह है कि जो लोग हृदय को पवित्र करते हैं तथा गन्दगी और अपवित्रता जो परमेश्वर से दूर रखती है उससे स्वयं को दूर रखते हैं उनमें इल्हाम (ईशवाणी) के लिए एक अनुकूलता उत्पन्न हो जाती है इल्हाम का सिलसिला आरम्भ हो जाता है। सयंमी की शान में एक अन्य स्थान पर फ़रमाया – اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ (यूनुस :63) अर्थात् जो परमेश्वर के वली हैं उन्हें कोई संताप नहीं, जिस का अभिभावक ख़ुदा हो उसे कोई कष्ट नहीं, कोई मुक़ाबला करने वाला हानि नहीं पहुँचा सकता यदि ख़ुदा वली हो जाए। पुनः फ़रमाया – وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ (हामीम अस्सजदह : 31) अर्थात् तुम उस स्वर्ग के लिए प्रसन्न हो जाओ जिसका तुम्हें वादा दिया गया है।

मनुष्य के लिए दो स्वर्ग

क़ुर्आन की शिक्षा से ज्ञात होता है कि मनुष्य के लिए दो स्वर्ग हैं। जो

व्यक्ति अल्लाह तआला से प्रेम करता है क्या वह एक जलने वाले जीवन में रह सकता है ? जब यहां एक शासक का मित्र सांसारिक सम्बन्धों में एक प्रकार के स्वर्गीय जीवन में होता है तो क्यों न उनके लिए स्वर्ग का द्वार खुले जो ख़ुदा के मित्र हैं यद्यपि कि संसार कष्टों और संकटों से भरा हुआ है परन्तु कोई क्या जाने कि वे कैसा आनन्द प्राप्त करते हैं। यदि उन्हें शोक हो तो आधा घंटा कष्ट सहन करना भी कठिन है यद्यपि वे तो जीवन पर्यन्त कष्ट में रहते हैं। एक युग का शासन देकर उन्हें उनके कार्य से रोका जाए तो कब किसी की सुनते हैं। इसी प्रकार चाहे संकटों के पर्वत टूट पड़ें वे अपने इरादे को नहीं छोड़ते।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सदाचार

हमारे पूर्ण पथ-प्रदर्शक को इन दोनों बातों का मुख देखना पड़ा। एक समय तो 'ताइफ़' की बस्ती में पत्थर बरसाए, गए लोगों के एक बड़े समूह ने अत्यन्त कठोर शारीरिक कष्ट पहुँचाया, परन्तु आप (स.अ.व.) की दृढ़ता में कोई अन्तर नहीं आया। जब क़ौम ने देखा कि संकटों और कठोरताओं से इन पर कोई प्रभाव न पड़ा तो उन्होंने एकत्र होकर बादशाहत का वादा दिया, अपना अमीर बनाना चाहा, प्रत्येक प्रकार के भोग-विलास के साधन उपलब्ध करने का वादा किया यहाँ तक कि उत्तम से उत्तम पत्नी का भी वादा इस शर्त पर कि आप मूर्तियों की निन्दा करना छोड़ दें, परन्तु जिस प्रकार 'ताइफ़' के संकट के समय उसी प्रकार इस बादशाहत के वादे के समय आप (स.अ.व.) ने कुछ परवाह न की और पत्थर खाने को प्रमुखता दी। अत: जब तक विशेष आनन्द न हो तो क्या आवश्यकता थी कि आराम त्याग कर दु:खों में पड़ते।

यह अवसर हमारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त किसी अन्य नबी को प्राप्त नहीं हुआ कि उन्हें नुबुव्वत का कार्य त्यागने के लिए कोई वादा दिया गया हो। मसीह को भी ऐसा अवसर प्राप्त नहीं

हुआ। विश्व के इतिहास में केवल हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के साथ ही यह घटना हुई कि आपको बादशाहत का वादा दिया गया यदि आप अपना कार्य त्याग दें। अतः यह सम्मान हमारे रसूल (स.अ.व.) के साथ ही विशेष है इसी प्रकार हमारे पूर्ण पथ-प्रदर्शक को दोनों अवस्थाएं कष्टों और विजय की प्राप्त हुईं ताकि वे दोनों समयों में सदाचार का पूर्ण आदर्श प्रस्तुत कर सकें।

परमेश्वर ने संयमियों के लिए चाहा है कि हर दो आनन्द उठाएं किसी समय सांसारिक आनन्द, आराम और पवित्र और वैध वस्तुओं के रूप में, किसी समय दरिद्रता और संकटों में ताकि उनके दोनों सदाचार का पूर्ण आदर्श प्रदर्शित कर सकें। कुछ सदाचार शक्ति के समय में और कुछ संकटों में प्रकट होते हैं। हमारे नबी करीम (स.अ.व.) को ये दोनों बातें प्राप्त हुईं। अतः हम आपके जितने सदाचार प्रस्तुत कर सकेंगे कोई अन्य जाति अपने किसी नबी के सदाचार प्रस्तुत न कर सकेगी। जैसे मसीह का केवल धैर्य प्रकट कर सकता है कि वह मार खाता रहा, परन्तु यह कहां से सिद्ध होगा कि उन्हें शक्ति प्राप्त हुई। वह निःसन्देह सच्चे नबी हैं परन्तु उनके हर प्रकार के सदाचार सिद्ध नहीं। चूंकि उनकी चर्चा क़ुर्आन में आ गई इसलिए हम उन्हें नबी मानते हैं अन्यथा इन्जील में तो उनका ऐसा कोई सदाचार सिद्ध नहीं जैसा कि दृढ़ संकल्प नबियों के यथायोग्य होता है। इसी प्रकार हमारे पूर्ण पथ-प्रदर्शक भी यदि प्रारम्भिक तेरह वर्ष के संकटों में मृत्यु को प्राप्त हो जाते तो उन के अन्य बहुत से श्रेष्ठ सदाचार मसीह की तरह सिद्ध न होते, परन्तु दूसरा युग जब विजय का आया और अपराधी आप के समक्ष प्रस्तुत किए गए तो इस से आप की दया की विशेषता और क्षमा का पूर्ण प्रमाण मिला और इससे यह भी स्पष्ट है कि आप के कार्य किसी बलात पर न थे न ही ज़बरदस्ती थी अपितु प्रत्येक बात अपने स्वाभाविक रूप में हुई। इसी प्रकार आप के और बहुत से सदाचार भी प्रमाणित हैं। अतः परमेश्वर ने यह जो फ़रमाया कि

نَحۡنُ اَوۡلِیٰٓؤُکُمۡ فِی الۡحَیٰوۃِ الدُّنۡیَا وَ فِی الۡاٰخِرَۃِ (हा मीम अस्सज्दह :32) कि हम इस संसार में भी और भविष्य में भी संयमी के वली हैं। अतः यह आयत भी उन अज्ञान लोगों को झूठा सिद्ध करने के बारे में है जिन्होंने इस जीवन में फ़रिश्तों के उतरने से इन्कार किया। यदि चन्द्रा (मृत्यु के अन्तिम पल) में फ़रिश्तों का उतरना था तो हयातिद्दुनिया (सांसारिक जीवन) में परमेश्वर वली कैसे हुआ।

संयमी को पारलौकिक जीवन यहीं दिखाया जाता है

अतः यह एक नैमत है कि वलियों को ख़ुदा के फ़रिश्ते दिखाई देते हैं, परलोक का जीवन मात्र ईमान से संबंधित है, परन्तु एक संयमी (मुत्तक़ी) को परलोक-जीवन यहीं दिखाया जाता है, उन्हें इसी जीवन में परमेश्वर प्राप्त होता है, दिखाई देता है तथा उन से वार्तालाप करता है। अतः यदि किसी को ऐसी अवस्था प्राप्त नहीं तो उसका मरना और यहां से कूच कर जाना नितान्त व्यर्थ है। एक वली का कथन है कि जिसे जीवन पर्यन्त एक सच्चा स्वप्न प्राप्त नहीं हुआ उसका अन्त भयानक है जैसे कि क़ुर्आन मोमिन के ये लक्षण ठहराता है। सुनो! जिस में यह लक्षण नहीं उस में संयम (तक़्वा) नहीं। अतः हम सबको यह दुआ करना चाहिए कि यह शर्त हम में पूर्ण हो। परमेश्वर की ओर से इल्हाम (ईशवाणी), स्वप्न और मुकाशिफ़ात का वरदान हो क्यों कि मोमिन की यह विशेषता है। अतः यह होना चाहिए। बहुत सी और भी बरकतें हैं उदाहरणतया सूरह फ़ातिहा में जो-क़ुर्आन के आरम्भ में ही है, परमेश्वर मौमिन का मार्ग दर्शन करता है कि वे दुआ मांगे

اِھۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡھِمۡ ۬ۙ

غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡھِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ

अर्थात् हमें वह सीधा मार्ग बता उन लोगों का जिन पर तेरा इनाम और

कृपा है। यह इसलिए सिखाई गई है कि मनुष्य उच्च साहस के साथ स्रष्टा की इच्छा समझे और वह यह है कि यह उम्मत जानवरों की भांति जीवन व्यतीत न करे अपितु उसके सम्पूर्ण पर्दे खुल जाएं। जैसा कि शियों की आस्था है कि विलायत (वली होना) बारह इमामों के पश्चात् समाप्त हो गई, इसके विपरीत इस दुआ से यही स्पष्ट होता है कि परमेश्वर ने पहले से यह इरादा कर रखा है कि जो संयमी परमेश्वर की इच्छा के अनुकूल है तो वह उन पदों को प्राप्त कर सके जो नबियों और पवित्रात्मा लोगों को प्राप्त होते हैं। इसमें यह भी पाया जाता है कि मनुष्य को बहुत सी शक्तियां प्राप्त हैं जिन्होंने बढ़ना और विकसित होना है और बहुत उन्नति करना है। हां एक बकरा यद्यपि मनुष्य नहीं, उसकी शक्तियां उन्नति नहीं कर सकतीं। उच्च साहस रखने वाला मनुष्य जब रसूलों और नबियों पर आने वाली परिस्थितियों को सुनता है तो चाहता है कि जो इनाम इस पवित्र जमाअत को प्राप्त हुए उस पर न केवल ईमान ही हो अपितु उसे क्रमश: उन नैमतों का ज्ञान द्वारा प्राप्त विश्वास, आँखों देखा विश्वास और पूर्ण विश्वास हो जाए।

ज्ञान की तीन श्रेणियां

ज्ञान की तीन श्रेणियां हैं। इल्मुल यक़ीन अर्थात् ज्ञान द्वारा प्राप्त विश्वास, ऐनुल यक़ीन अर्थात् आँखों से देखकर प्राप्त विश्वास, हक़्क़ुल यक़ीन अर्थात् अनुभव द्वारा प्राप्त विश्वास। उदाहरणतया एक स्थान से धुआँ निकलता देखकर अग्नि का विश्वास कर लेना ज्ञान द्वारा प्राप्त विश्वास है, परन्तु स्वयं अग्नि का चश्मदीद देखना आँखों द्वारा प्राप्त विश्वास है, इन से बढ़कर हक़्क़ुल यक़ीन की श्रेणी है अर्थात् अग्नि में हाथ डालकर ताप और जलने का विश्वास कर लेना कि अग्नि विद्यमान है अर्थात् अनुभव द्वारा प्राप्त विश्वास। कैसा दुर्भाग्यशाली है वह मनुष्य जिसे तीनों श्रेणियों में से कोई श्रेणी प्राप्त नहीं। इस आयत के अनुसार जिस पर परमेश्वर की कृपा नहीं वह अन्धे अनुसरण में लिप्त है।

परमेश्वर फ़रमाता है وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا (अलअन्कबूत :70) जो हमारे मार्ग में परिश्रम करेगा हम उसे अपने मार्ग दिखा देंगे। यह तो वादा है और दूसरी ओर यह दुआ है - اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ अत: मनुष्य को चाहिए कि इसे ध्यान में रखते हुए नमाज़ में गिड़गिड़ा कर दुआ करे और इच्छा रखे कि वह भी उन लोगों में से हो जाए जो उन्नति और प्रतिभा प्राप्त कर चुके हैं ऐसा न हो कि इस संसार से प्रतिभाहीन और नेत्रहीन उठाया जाए। अत: फ़रमाया - مَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى (बनी इस्राईल :73) कि जो इस संसार में अंधा है वह परलोक में भी अंधा है।

परलोक की तैयारी इसी संसार से हो

जिस का उद्देश्य यह है कि उस लोक को देखने के लिए हमें इसी लोक से आँखें ले जाना हैं परलोक को महसूस करने के लिए ज्ञानेन्द्रियों की तैयारी इसी लोक में होगी। अत: क्या यह सोचा जा सकता है कि परमेश्वर वादा करे और पूर्ण न करे।

अंधे से अभिप्राय वह है जो आध्यात्मिक ज्ञान और आध्यात्मिक आनन्दों से रिक्त है। एक व्यक्ति अन्धे अनुसरण से मुसलमानों के घर में पैदा हो गया, मुसलमान कहलाता है, दूसरी ओर इसी प्रकार एक ईसाई ईसाइयों के यहां पैदा हो कर ईसाई हो गया। यही कारण है कि ऐसे व्यक्ति की दृष्टि में परमेश्वर, रसूल और क़ुर्आन का कोई सम्मान नहीं होता, उस का धार्मिक प्रेम भी आपत्तिजनक है, परमेश्वर और रसूल का अनादर करने वालों में उसका उठना-बैठना रहता है। इसका कारण केवल यह है कि ऐसे व्यक्ति की आध्यात्मिक आँख नहीं, उस में धर्म से प्रेम नहीं, अन्यथा प्रेमी अपने प्रियतम के विपरीत क्या कुछ पसन्द करता है? अत: परमेश्वर ने सिखाया है कि मैं तो देने को तैयार हूँ यदि तू लेने को तैयार है। अत: यह दुआ करना ही उस

मार्ग–दर्शन को धारण करने की तैयारी है।

संयमियों के लिए मार्ग–दर्शन (हुदल्लिमुत्तक़ीन) का स्पष्टीकरण

इस दुआ के पश्चात् सूरह बक़रह के आरम्भ में जो 'हुदल्लिलमुत्तक़ीन' कहा गया तो मानो परमेश्वर ने देने की तैयारी की अर्थात् यह किताब संयमी को पूर्णता तक पहुँचाने का वादा करती है। अतः इसका अर्थ यह है कि यह किताब उनके लिए लाभप्रद है जो संयम धारण करने और नसीहत सुनने के लिए तैयार हों, इस श्रेणी का संयमी वह है जो निःसंकोच सत्य बात सुनने को तैयार हो जैसे जब कोई मुसलमान होता है तो वह मुत्तक़ी (संयमी) बनता है। जब किसी अन्य धर्म के शुभ–दिन आए तो उसमें संयम (इत्तिक़ा) पैदा हुआ, अहंकार, अभिमान और घमण्ड दूर हुआ। ये समस्त बाधाएं थीं जो दूर हो गईं । इनके दूर होने से अंधकारपूर्ण घर की ख़िड़की खुल गई और किरणें अन्दर प्रवेश कर गईं।

यह जो फ़रमाया कि यह किताब संयम धारण करने वालों का मार्ग–दर्शन है, अर्थात् هُدًى لِّلۡمُتَّقِيۡنَ तो इत्तिक़ा जो इफ़्तिआल के बाब से है और यह बाब तकल्लुफ़ (कष्ट) के लिए आता है अर्थात् इस में संकेत है कि यहां हम जितना संयम चाहते हैं वह कष्ट से ख़ाली नहीं, जिस की सुरक्षा के लिए इस किताब में निर्देशन हैं। मानो संयमी को शुभ करने में कष्ट से काम लेना पड़ता है।

सदात्मा व्यक्ति

जब यह गुज़र जाता है तो साधक सदात्मा भक्त बन जाता है मानो कष्ट का रंग जाता रहा और सदात्मा ने स्वाभाविक तौर पर नेकी आरम्भ कर दी। वह एक प्रकार की शान्ति में है जिसे कोई ख़तरा नहीं, अब अपनी काम–भावनाओं के विरुद्ध समस्त युद्ध समाप्त हो चुके और वह अमन में आ गया

तथा प्रत्येक प्रकार के ख़तरों से सुरक्षित हो गया। हमारे पूर्ण पथ-प्रदर्शक ने इसी तथ्य की ओर संकेत किया है। फ़रमाया कि प्रत्येक के साथ शैतान होता है परन्तु मेरा शैतान मुसलमान हो गया है। अतः मुत्तक़ी (संयमी) का शैतान के साथ हमेशा युद्ध है परन्तु जब वह नेक हो जाता है तो समस्त युद्ध भी समाप्त हो जाते हैं, उदाहरणतया एक दिखावा ही है जिस से उसे आठों पहर लड़ाई है, संयमी एक ऐसे मैदान में है जहां हर समय लड़ाई है। परमेश्वर की कृपा का हाथ उसके साथ हो तो उसे विजय हो, जैसे दिखावा जिसकी गति एक चींटी की तरह है किसी समय मनुष्य बिना सोचे परन्तु समय पर दिखावे को हृदय में पैदा होने का अवसर दे देता है। उदाहरणतया एक का चाकू खो जाए और वह दूसरे से पूछे तो इस अवस्था में एक संयमी का शैतान से युद्ध आरम्भ हो जाता है जो उसे सिखाता है कि चाकू के मालिक का इस प्रकार पूछना एक प्रकार का अनादर है जिस से उसके भड़कने की आशंका होती है और सम्भव है कि परस्पर लड़ाई भी हो जाए। इस अवसर पर एक संयमी को अपनी आत्मा की बुरी अभिलाषा से लड़ाई है। यदि उस व्यक्ति में मात्र ख़ुदा के लिए ईमानदारी मौजूद हो तो उसे क्रोध करने की आवश्यकता ही क्या है।

ईमानदारी जितनी गुप्त रखी जाए उतनी ही उत्तम है

क्योंकि ईमानदारी जितनी गुप्त रखी जाए उतनी ही उत्तम है। उदाहरणतया एक व्यक्ति को धनवान बता दें और कुछ चोर मिल जाएं और चोर आपस में उसके बारे में मशवरा करें, कुछ उसे धनवान बताएं और कुछ कहें कि वह दरिद्र है। अब तुलनात्मक रूप में यह जौहरी उन्हीं को पसन्द करेगा जो उसे दरिद्र प्रकट करेंगे।

कर्मों में गोपनीयता उचित है

इसी प्रकार यह संसार क्या है, एक प्रकार का परीक्षा गृह है, वही अच्छा

है जो प्रत्येक बात गुप्त रखे और दिखावे से बचे। वे लोग जिन के कर्म परमेश्वर के लिए होते हैं वे अपने कर्म किसी पर प्रकट नहीं होने देते, यही लोग संयमी हैं।

मैंने ''तज़किरतुलऔलिया'' में देखा है कि एक जन समूह में एक बुज़ुर्ग ने प्रश्न किया कि उसे कुछ रुपयों की आवश्यकता है, कोई उसकी सहायता करे। एक ने नेक समझकर उसे एक हज़ार रुपया दिया उन्होंने रुपए लेकर उस की दानशीलता और वरदान की प्रशंसा की। इस बात पर वह शोकग्रस्त हुआ कि जब यहां ही प्रशंसा हो गई तो कदाचित आख़िरत (परलोक) के पुण्य से वंचित रहना पड़े। थोड़ी देर के बाद वह आया और कहा कि वह रुपया उसकी मां का था जो देना नहीं चाहती। अत: वह रुपया वापस दिया गया जिस पर प्रत्येक ने फटकार डाली और कहा झूठा है वास्तव में रुपया देना नहीं चाहता। जब शाम के समय वह बुज़ुर्ग घर गया तो वह व्यक्ति हज़ार रुपए लेकर उसके पास आया और कहा कि आप ने सार्वजनिक तौर पर मेरी प्रशंसा करके मुझे आख़िरत के पुण्य से वंचित किया इसलिए मैंने यह बहाना किया। अब यह रुपया आप का है परन्तु आप किसी के सामने नाम न लें। बुज़ुर्ग रो पड़ा और कहा कि अब तू प्रलय तक फटकार का पात्र हुआ, क्योंकि कल की घटना सर्वविदित है और यह किसी को ज्ञात नहीं कि तूने मुझे रुपया वापस दे दिया है।

सच्चा संयमी एक प्रकार का दुराव चाहता है

एक संयमी तो अपनी तामसिक वृत्ति के विरुद्ध लड़ाई करके अपने विचार को छुपाता है और गुप्त रखता है, परन्तु परमेश्वर उस गुप्त विचार को सदैव प्रकट कर देता है, जैसा कि एक बदमाश कोई दुराचार करके गुप्त रहना चाहता है, इसी प्रकार छुप कर नमाज़ पढ़ता है और भयभीत है कि कोई उसे देख ले। सच्चा संयमी एक प्रकार का दुराव (गोपन) चाहता है। संयम की

श्रेणियां बहुत हैं परन्तु बहरहाल संयम के लिए कष्ट है और संयमी युद्ध की अवस्था में हैं तथा नेक इस युद्ध से बाहर है जैसा कि मैंने उदाहरण के तौर पर ऊपर दिखावे का वर्णन किया है जिस से संयमी को आठों पहर युद्ध है।

आडम्बर और सहिष्णुता की लड़ाई

प्राय: आडम्बर और सहिष्णुता की लड़ाई हो जाती है, कभी मनुष्य का क्रोध परमेश्वर की किताब के विपरीत होता है, गाली सुनकर उसकी प्रवृति उत्तेजित होती है। संयम तो उसको शिक्षा देता है कि वह क्रोध करने से रुके, जैसा कि क़ुर्आन कहता है وَإِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا (अलफ़ुरक़ान :73) इसी प्रकार अधीर होकर उसे कई बार लड़ाई करना पड़ती है। अधीरता से अभिप्राय यह है कि उसे संयम के मार्ग में इतने रुदनों से मुकाबला करना पड़ता है कि बड़ी कठिनाई से वह लक्ष्य पर पहुँचता है, इसलिए अधीर हो जाता है। उदाहरणतया एक क़ुआं पचास हाथ तक खोदना है, यदि दो चार हाथ के पश्चात् खोदना छोड़ दिया जाए तो यह एक कुधारणा है। अब संयम की शर्त यह है कि परमेश्वर ने जो आदेश दिए उन्हें अन्त तक पहुँचाए और अधीर न हो जाए।

साधना के मार्ग में कार्यरत रहने वाले दो वर्ग हैं।

साधना के मार्ग में कार्यरत रहने वाले दो वर्ग हैं। एक 'दीनुल अजायज़' (कमज़ोरों का धर्म) वाले जो मोटी-मोटी बातों पर चलते है। उदाहरणतया शरीअत के पाबन्द हो गए और मुक्ति पा गए, दूसरे वे जिन्होंने आगे क़दम मारा, कदापि न थके और चलते गए यहां तक कि लक्ष्य तक पहुँच गए, परन्तु दुर्भाग्यशाली वह वर्ग है जिसने 'दीनुलअजायज़' से तो आगे क़दम रखा परन्तु साधना के लक्ष्य तक नहीं पहुँचे वे अवश्य नास्तिक हो जाते हैं। जैसे कुछ लोग कहते हैं कि हम तो नमाज़ें भी पढ़ते रहे, चिल्लाकशी भी कीं परन्तु लाभ

कुछ न हुआ। जैसा कि एक व्यक्ति मन्सूर मसीह ने वर्णन किया कि उसकी ईसाइयत का कारण यही था कि वह धर्म गुरुओं के पास गया, चिल्लाकशी* करता रहा, परन्तु लाभ कुछ न हुआ तो बदगुमान होकर ईसाई हो गया।

स्थायित्व

अतः जो लोग अधीरता करते हैं वे शैतान के क़ब्ज़े में आ जाते हैं अतः संयमी की अधीरता के साथ भी लड़ाई है। 'बोस्तान' में एक उपासक का वर्णन किया गया है कि वह जब कभी उपासना (इबादत) करता तो फ़रिश्ता यही आवाज़ देता कि तू बहिष्कृत और तिरस्कृत है। एक बार एक मुरीद (शिष्य) ने यह आवाज़ सुन ली और कहा कि अब तो फैसला हो गया है अब टक्करें मारने से क्या लाभ होगा। वह बहुत रोया और कहा कि मैं उस दरबार को छोड़ कर कहां जाऊँ, यदि बहिष्कृत हूँ तो बहिष्कृत ही सही, सराहनीय है कि मुझे बहिष्कृत तो कहा जाता है, शिष्य से अभी ये बातें हो ही रही थीं कि आवाज़ आई कि तू मान्य है अतएव यह सब निष्ठा और धैर्य का परिणाम था जो मुत्तक़ी (संयमी) में होना शर्त है।

मुजाहिद (पराक्रमी) का कार्य

यह जो फ़रमाया है कि - وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا (अलअन्कबूत :70) अर्थात् हमारे मार्ग के मुजाहिद (पराक्रमी) मार्ग पाएंगे। इसके अर्थ ये हैं कि इस मार्ग में पैग़म्बर के साथ मिलकर प्रयास और परिश्रम करना होगा, एक दो घंटे के पश्चात् भाग जाना पराक्रमी का कार्य नहीं अपितु प्राण न्यौछावर करने के लिए तत्पर रहना उसका कार्य है। अतः संयमी का लक्षण स्थायित्व है। जैसा कि फ़रमाया-اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا अर्थात् जिन्होंने कहा कि हमारा प्रतिपालक परमेश्वर है और स्थायित्व दिखाया तथा

---

* किसी एकान्तवास में बैठकर चालीस दिन तक कोई वज़ीफ़ा या तपजप करना। -अनुवादक

हर ओर विमुख होकर परमेश्वर को ढूँढा। अर्थात् सफलता स्थायित्व पर निर्भर है और परमेश्वर को पहचानना और किसी विपत्ति, कठिनाई और परीक्षा से भयभीत न होना है। इसका परिणाम अवश्य यह होगा कि वह नबियों की भांति परमेश्वर से वार्तालाप और सम्बोधन का पात्र होगा।

वली बनने के लिए परीक्षाएं आवश्यक हैं

यहां बहुत से लोग आते हैं और चाहते हैं कि फूंक मार कर आकाश पर पहुँच जाएं और परमेश्वर से मिलने वालों में से हो जाएं। ऐसे लोग ठट्ठा करते हैं वे नबियों की परिस्थितियों को देखें। यह ग़लती है कि कहा जाता है कि किसी वली के पास जाकर सैकड़ो वली तुरन्त बन गए। परमेश्वर तो यह फ़रमाता है - اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ (अन्कबूत :3) जब तक मनुष्य आज़माया न जाए, विपत्ति में न डाला जाए वह कब वली बन सकता है।

एक समारोह में बायज़ीद रह. धर्मोपदेश दे रहे थे वहां एक शैख का पुत्र भी था जो एक लम्बा सिलसिला रखता था उसे आप(रह) से आन्तरिक द्वेष था। ख़ुदा की यह विशेषता है कि पुराने वंशों को छोड़ कर किसी और को ले लेता है जैसे बनी इस्राईल को छोड़ कर बनी इस्माईल को लिया क्योंकि वे लोग भोग-विलास में पड़कर ख़ुदा को भूल चुके होते हैं وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ (आले इमरान :141) अत: उस शैख़ के पुत्र को विचार आया कि यह एक साधारण वंश का मनुष्य है कहां से ऐसा अद्भुत चमत्कार दिखाने वाला आ गया कि लोग उसकी ओर झुकते हैं और हमारी ओर नहीं आते। ये बातें ख़ुदा तआला ने बायज़ीद(रह) पर प्रकट कीं तो उन्होंने एक किस्से के रंग में यह वर्णन आरम्भ किया कि एक समारोह में रात के समय एक लैम्प में पानी मिश्रित तेल जल रहा था, तेल और पानी में बहस हुई। पानी ने तेल से कहा कि तू मलिन और गन्दा है और बावजूद अपवित्र

होने के मेरे ऊपर आता है मैं एक स्वच्छ वस्तु हूँ और पवित्रता के लिए प्रयोग किया जाता हूँ परन्तु नीचे हूँ, इस का कारण क्या है ? तेल ने कहा कि जितनी कठिनाइयां मैंने झेली हैं तूने कहां झेली हैं जिसके कारण मुझे यह उच्चता प्राप्त हुई है। एक समय था जब मैं बोया गया, पृथ्वी में गुप्त रहा, मिट्टी में मिल गया, फिर ख़ुदा की इच्छा से बढ़ा, बढ़ने न पाया कि काटा गया फिर अनेक प्रकार की परिश्रमों के पश्चात साफ़ किया गया, कोल्हू में पीसा गया फिर तेल बना और आग लगाई गई। क्या इन कष्टों के बाद भी उच्चता प्राप्त न करता ?

वलियों (ऋषियों) को कष्टों तथा कठिनाइयों के पश्चात् महान् पद प्राप्त होते हैं

यह एक उदाहरण है कि अल्लाह वाले (वलियों) कष्टों और कठिनाइयों से गुज़रने के पश्चात् पदों को प्राप्त करते हैं। लोगों का यह विचार ग़लत है कि अमुक व्यक्ति अमुक के पास जाकर बिना परिश्रम तप-जप और पवित्रता के एक पल में सदात्माओं (सिद्दीक़ीन) में प्रविष्ट हो गया।

क़ुर्आन करीम को देखो कि ख़ुदा किस प्रकार तुम पर प्रसन्न हो, जब तक तुम पर नबियों की तरह कष्ट और भूकंप न आए, जिन्होंने कभी तंग आकर यह भी कह दिया -

حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ

(अलबक़रह :215) अल्लाह के बन्दे हमेशा विपत्तियों में डाले गए फिर ख़ुदा ने उन्हें स्वीकार किया।

उन्नति के दो मार्ग

सूफ़ियों ने उन्नति के दो मार्गों का उल्लेख किया है। प्रथम-साधना द्वितीय - आकर्षण (आत्मसात)। साधना वह है जिसे लोग स्वयं बुद्धिमत्ता से सोच कर अल्लाह और रसूल का मार्ग धारण करते हैं जैसे कि फ़रमाया -

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِىْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ (आले इमरान :32)

अर्थात् ''यदि तुम अल्लाह के प्रिय बनना चाहते हो तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण करो, वह पूर्ण पथ-प्रदर्शक वही रसूल हैं जिन्होंने वे कष्ट उठाए कि संसार अपने अन्दर उसका उदाहरण नहीं रखता एक दिन भी आराम नहीं पाया। अब अनुसरण करने वाले भी वास्तविक तौर से वही होंगे जो अपने अनुकरणीय के प्रत्येक कथन और कर्म की अनुसरण पूर्ण परिश्रम और प्रयास के साथ करें''। अनुसरणकर्ता वही है जो प्रत्येक प्रकार से अनुसरण करेगा। आलसी और को अल्लाह तआला पसन्द नहीं करता अपितु वह ख़ुदा के प्रकोप में आएगा। यहाँ ख़ुदा ने जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरण का आदेश दिया तो साधक का कार्य यह होना चाहिए कि प्रथम रसूल करीम (स.अ.व.) का पूर्ण इतिहास देखे और फिर अनुसरण करे इसी का नाम साधना है। इस मार्ग में बहुत कष्ट और कठिनाइयां होती हैं। इन सब को उठाने के पश्चात् ही मनुष्य साधक हो जाता है।

आत्मस्य होने वालों का पद

आत्मसात होने वालों का पद साधकों से बड़ा होता है। अल्लाह तआला उन्हें साधना के पद पर ही नहीं रखता अपितु स्वयं उन्हें कष्टों में डालता और अनादि आकर्षण से अपनी ओर खींचता है। समस्त नबी आकृष्ट ही थे। जिस समय मानव-आत्मा को कष्टों का सामना होता है, उन से पुराना और अनुभवी हो कर आत्माचमक उठती है जैसे कि लोहा या शीशा यद्यपि चमक का तत्व अपने अन्दर रखता है परन्तु परिष्कृत होने के बाद ही चमकता है यहाँ तक कि उसमें मुख देखने वाले का मुख दिखाई दे जाता है। प्रयास, तप-जप भी परिष्कृति का ही कार्य करते हैं। हृदय की परिष्कृति यहां तक होना चाहिए कि उसमें से भी मुँह दिखाई दे जाए। मुँह का दिखाई देना क्या

है تَخَلَّقُوْا بِاَخْلَاقِ का चरितार्थ होना। साधक का हृदय दर्पण है जिसे कष्ट और कठिनाइयाँ इतना परिष्कृत कर देते हैं कि उसमें आंहज़रत (स.अ.व.) के शिष्टाचार प्रतिबिम्बित हो जाते हैं। यह उस समय होता है जब अत्यधिक प्रयास, तप-जप और शुद्धिकरणों के पश्चात् उसके अन्दर किसी प्रकार की गन्दगी या अपवित्रता न रहे तब यह पद प्राप्त होता है। प्रत्येक मौमिन को एक सीमा तक ऐसी शुद्धता की आवश्यकता है। कोई मौमिन दर्पण होने के बिना मुक्ति न पाएगा। साधक स्वयं यह परिष्कृतिकरण करता है, अपने कार्य से कष्ट उठाता है परन्तु आकृष्ट कष्टों में डाला जाता है, ख़ुदा स्वयं उस का परिष्कृतिकर्ता होता है, नाना प्रकार के कष्टों और कठिनाइयों से प्रदान करता है। वास्तव में साधक और आकृष्ट दोनों का एक ही परिणाम है। अतः संयमी के दो भाग हैं - साधना और आकर्षण

परोक्ष पर ईमान

संयम (तक़्वा) जैसा कि वर्णन कर चुका हूँ किसी सीमा तक कष्ट को चाहता है। इसलिए फ़रमाया कि هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ (अलबक़रह :3,4) इस में एक कठिनाई है- अवलोकन के मुकाबले पर परोक्ष पर ईमान लाना एक प्रकार की बनावट को चाहता है। अतः संयमी के लिए एक सीमा तक कठिनाई है क्योंकि जब वह नेक का पद प्राप्त करता है तो फिर परोक्ष उसके लिए परोक्ष नहीं रहता क्योंकि नेक (सदात्मा) के अन्दर से एक नहर खुलती है जो उससे निकल कर ख़ुदा तक पहुँचती है। वह ख़ुदा और उसके प्रेम को अपनी आँख से देखता है कि مَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى (बनी इस्राईल :73) इसी से स्पष्ट है कि जब तक मनुष्य पूर्ण प्रकाश इसी संसार में प्राप्त न कर ले वह कभी ख़ुदा का मुख न देखेगा। अतः संयमी का कार्य यही है कि वह हमेशा ऐसे सुरमे तैयार करता रहे जिससे उसका आध्यात्मिक पानी का उतरना दूर हो

जाए। अब इस से स्पष्ट है कि संयमी आरम्भ में अंधा होता है। भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रयासों और शुद्धिकरणों द्वारा वह प्रकाश प्राप्त करता है। अत: जब नेत्रवान हो गया और सदात्मा (नेक) बन गया फिर परोक्ष का ईमान न रहा और कठिनाई भी समाप्त हो गई जैसे कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को चशमदीद तौर पर इस संसार में स्वर्ग-नर्क इत्यादि सब कुछ दिखाया गया जो संयमी को एक परोक्ष पर ईमान के रूप में स्वीकार करना पड़ता है वह सम्पूर्ण तौर पर आप के अवलोकन में आ गया। इस आयत में संकेत है कि संयमी यद्यपि अंधा है और बनावट के कष्ट में है परन्तु सदात्मा एक शान्ति-निकेतन में आ गया है और उसकी प्रकृति सात्विक वृति हो गई है। संयमी अपने अन्दर परोक्ष पर ईमान की अवस्था रखता है, वह अंधा धुंध ढंग से चलता है, उसे कुछ ख़बर नहीं। प्रत्येक बात पर उसका परोक्ष पर ईमान है। यही उसकी निष्ठा है और इस निष्ठा के मुकाबले पर ख़ुदा का वादा है कि वह सफलता पाएगा। أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ (अलबक़रह :6)

नमाज़ का खड़ा करना

इसके पश्चात् संयमी की प्रतिष्ठा में आया है - يُقِيمُونَ الصَّلٰوةَ अर्थात् वह नमाज़ को खड़ा करता है यहां शब्द खड़ा करने का आता है यह भी उस बनावट की ओर संकेत है जो संयमी की विशिष्टता है अर्थात् जब नमाज़ आरम्भ करता है तो कई प्रकार के भ्रमों से उसका सामना होता है, जब उसके 'अल्लाहो अकबर' कहा तो उसी पर भ्रमों के एक जमावड़ा है जो परमेश्वर के समक्ष हार्दिक उपस्थिति में बिखराव डाल रहा है वह उन से कहीं का कहीं पहुँच जाता है, परेशान होता है यद्यपि कि उपस्थिति और लगान के लिए प्रयत्नशील रहता है, परन्तु नमाज़ जो गिरी पड़ती है बड़े कठिन परिश्रम द्वारा उसे खड़ा करने की चिन्ता में है, बार-बार إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ कह कर नमाज़ को खड़ा करने के लिए दुआ मांगता है और ऐसे الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ

की निर्देशन चाहता है जिस से उस की नमाज़ खड़ी हो जाए। इन भ्रमों के मुक़ाबले में संयमी एक बच्चे की भांति है जो ख़ुदा के सामने गिड़गिड़ाता है, रोता है और कहता है कि मैं اَخۡلَدَ اِلَی الۡاَرۡضِ हो रहा हूं। अतः यही वह लड़ाई है जो संयमी को नमाज़ में प्रवृति के साथ कहना पड़ती है और इसी पर पुण्य प्राप्त होगा।

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो नमाज़ में उठने वाले भ्रमों को तुरन्त दूर करना चाहते हैं, जबकि يُقِيۡمُوۡنَ الصَّلٰوةَ का उद्देश्य कुछ और है क्या ख़ुदा नहीं। हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर गैलानी (रहमतुल्लाह अलयहे का कथन है कि पुण्य उस समय तक है जब तक प्रयास है और ज्यों ही प्रयास समाप्त हुए तो पुण्य ख़तम हो जाता है, मानों रोज़ा-नमाज़ उस समय तक कर्म हैं जब तक प्रयास द्वारा भ्रमों से मुकाबला है परन्तु जब उन में एक उच्च श्रेणी उत्पन्न हो गया और रोज़ा, नमाज़ और संयम के दिखावे से बच कर पात्रता से रंगीन हो गया तो अब रोज़ा-नमाज़ कर्म नहीं रहे। इस अवसर पर उन्होंने प्रश्न किया है कि क्या अब नमाज़ माफ़ हो जाती है? क्योंकि पुण्य तो उस समय था जिस समय तक दिखावा करना पड़ता था। अतः बात यह है कि नमाज़ अब कर्म नहीं अपितु एक इनाम है यह नमाज़ उस का एक आहार है जो उसके लिए आँखों की ठण्डक है। यह मानों नक़द स्वर्ग है।

मुक़ाबले में वे लोग जो प्रयासरत हैं वे कुश्ती कर रहे हैं और यह मुक्ति पा चुका है। इस का मतलब यह है कि मनुष्य की साधना जब समाप्त हुईं तो उसके कष्ट भी समाप्त हो गए। उदाहरणतया एक नपुंसक यह कहे कि वह कभी किसी स्त्री की ओर दृष्टि उठा कर नहीं देखता तो वह कौन सी नैमत या पुण्य का पात्र है। उसमें तो बुरी दृष्टि की विशेषता ही नहीं, परन्तु यदि एक कामशक्ति रखने वाला पुरुष यदि ऐसा करे तो पुण्य का भागीदार होगा। इसी प्रकार मनुष्यों को सहस्त्रों तय करने पड़ते हैं। कुछ-कुछ बातों में उसका अभ्यस्त होना उसे शक्तिशाली बना देता है, नफ़्स के साथ उसकी मैत्री हो

गई अब वह एक स्वर्ग में है परन्तु वह पहला सा पुण्य नहीं रहेगा। वह एक व्यापार का चुका है जिसका वह लाभ अर्जित कर रहा है परन्तु पहला रंग न रहेगा। मनुष्य में एक कार्य दिखावे के तौर पर करते-करते स्वाभाविक रूप धारण कर लेता है, एक व्यक्ति जो स्वाभाविक तौर पर आनन्द पाता है वह इस योग्य नहीं रहता कि उस कार्य से हटाया जाए, वह स्वाभाविक तौर पर यहां से हट नहीं सकता। अतः इन्द्रिय-निग्रह और संयम (तक्वा) की सीमा तक पूर्ण प्रकटन नहीं होता, अपितु वह एक प्रकार का दावा है।

अल्लाह की प्रदान की हुई आजीविका में से दान करना

तत्पश्चात संयमी की प्रतिष्ठा में وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ आया है। यहाँ संयमी के लिए مِمَّا का शब्द प्रयोग किया, क्योंकि इस समय वह एक अंधे की स्थिति में है। इसलिए ख़ुदा ने उसे जो कुछ दिया उसमें से कुछ ख़ुदा के नाम का दिया। सत्य यह है कि यदि वह आँख रखता तो देख लेता कि उसका कुछ भी नहीं, सब कुछ ख़ुदा तआला का ही है। यह एक पर्दा था जो संयम में अनिवार्य है। इस संयम की अवस्था की मांग ने संयमी से ख़ुदा के प्रदान किए हुए में से कुछ दिलवाया। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा से मृत्यु के दिनों में पूछा कि घर में कुछ है, मालूम के दिनों में पूछा कि घर में कुछ है, मालूम हुआ कि एक दीनार था फ़रमाया कि यह एकरूपता के आचरण से दूर है कि एक वस्तु भी अपने पास रखी जाए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम संयम को श्रेणी से गुज़र का पात्रता तक पहुँच गए थे इसलिए उनकी शान में مِمَّا न आया क्योंकि वह व्यक्ति अंधा है जिस ने कुछ अपने पास रखा और कुछ ख़ुदा को दिया, परन्तु संयमी के लिए यह अनिवार्य था क्योंकि ख़ुदा के मार्ग में देने से भी उसकी नफ़्स के साथ लड़ाई थी, जिसका परिणाम यह था कि कुछ दिया और कुछ रखा। हां रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सब ख़ुदा

के मार्ग में दे दिया तथा अपने लिए कुछ न रखा।

जैसा कि धर्म महोत्सव के लेख में मनुष्य की तीन अवस्थाओं का उल्लेख है जो मनुष्य पर प्रारम्भ से अन्त तक आती हैं। इसी प्रकार यहां भी क़ुर्आन करीम ने जो मनुष्य को उन्नति के समस्त पड़ाव तय कराने आया। संयम से आरम्भ किया यह एक दिखावे का मार्ग है, यह एक ख़तरनाक मैदान है, उसके हाथ में तलवार है और मुकाबले पर भी तलवार है। यदि बच गया तो मुक्ति पा गया अन्यथा निचले स्तर से भी निकृष्ट स्तर में जो पड़ा। अतः यहां संयमी के गुणों के संबंध में यह नहीं फ़रमाया कि जो कुछ हम देते हैं उसे सब का सब व्यय कर देता है। संयमी में इतनी ईमानी शक्ति नहीं जो नबी के यथायोग्य होती है कि वह हमारे पूर्ण पथ-प्रदर्शक की भांति ख़ुदा का दिया हुआ सम्पूर्ण का सम्पूर्ण ख़ुदा को दे दे। इसलिए पहले संक्षिप्त सा कर लगाया गया ताकि चाश्नी चख कर अधिक स्वार्थ-त्याग के लिए तत्पर हो जाए।

रिज़्क (आजीविका) **से अभिप्राय**

وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ रिज़्क से अभिप्राय केवल माल नहीं अपितु जो कुछ उन्हें प्रदत्त हुआ ज्ञान, नीति, चिकित्सा ये समस्त आजीविका में ही सम्मिलित है उसे इसी में से ख़ुदा के मार्ग में भी व्यय करना है। मनुष्य ने इस मार्ग में क्रमशः और शनैः-शनैः उन्नति करना है। यदि इन्जील की भांति यह शिक्षा होती कि गाल पर एक थप्पड़ खाकर दूसरे थप्पड़ के लिए गाल आगे कर दिया जाए या सर्वस्व दे दिया जाए तो इसका परिणाम यह होता कि मुसलमान भी ईसाइयों की तरह शिक्षा के अव्यवहारिक होने के कारण पुण्य से वंचित रहते।

क़ुर्आन मानव-स्वभाव के अनुसार शनैः शनैः उन्नति कराता है

परन्तु क़ुर्आन करीम तो मानव-स्वभाव के अनुसार आहिस्ता-आहिस्ता

उन्नति कराता है। इन्जील का उदाहरण तो उस लड़के का है जो स्कूल में प्रवेश करते ही बड़ी कठिन पुस्तक पढ़ने के लिए विवश किया गया है। अल्लाह तआला नीतिवान है उसकी नीति की यही मांग होना चाहिए थी कि अनुक्रम के साथ शिक्षापूर्ण हो। तत्पश्चात् संयमी के संबंध में फ़रमाया –

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ

अर्थात् वे संयमी होते हैं जो पहले उतरी हुई किताबों पर और जो किताब तुझ पर उतरी उस पर ईमान लाते और आख़िरत (परलोक) पर विश्वास रखते हैं। यह बात भी दिखावे से ख़ाली नहीं। अभी तक ईमान एक गोपनीयता के रूप में है। संयमी की आँखें मा'रिफ़त और विवेक की नहीं। उसने संयम से शैतान का मुक़ाबला करके अभी तक एक बात को स्वीकार कर लिया है। यही हाल इस समय हमारी जमाअत का है, उन्होंने भी संयम से स्वीकार तो किया है परन्तु वे अभी तक नहीं जानते कि यह जमाअत कहां तक ख़ुदाई हाथों से उन्नति करने वाली है। अतः यह एक ईमान है जो अन्ततः लाभप्रद होगा।

यक़ीन (विश्वास) का शब्द जब सामान्य तौर पर प्रयोग हो तो इससे अभिप्राय उसकी निचली श्रेणी होती है अर्थात् इल्म (ज्ञान) की तीन श्रेणियों में से निचली श्रेणी का (ज्ञान) अर्थात् 'इल्मुलयक़ीन' इस श्रेणी पर संयमी होता है परन्तु इसके पश्चात् 'ऐनुलयक़ीन' और 'हक़्क़ुलयक़ीन' की श्रेणी भी संयम के पड़ाव तय करने के पश्चात् प्राप्त कर लेता है।

संयम (तक़्वा) कोई छोटी वस्तु नहीं

संयम कोई छोटी वस्तु नहीं, इसके द्वारा उन समस्त शैतानों का मुकाबला करना होता है जो मनुष्य की प्रत्येक आन्तरिक शक्ति और ताकत पर आधिपत्य जमाए हुए हैं। ये समस्त शक्तियां तामसिक वृत्ति की अवस्था में मनुष्य के अन्दर शैतान हैं यदि सुधार नहीं होगा तो मनुष्य को दास बना लेंगी। ज्ञान और

बुद्धि ही बुरे रंग में प्रयोग हो कर शैतान हो जाते हैं। संयमी का कार्य उनकी और इसी प्रकार अन्य समस्त शक्तियों का सन्तुलन करना है। इस भांति जो लोग प्रतिशोध, आक्रोश अथवा निकाह को हर हाल में बुरा समझते हैं वे भी प्रकृति के नियम के विपरीत हैं और मानवीय शक्तियों का मुकाबला करते हैं।

सत्य धर्म वही है जो मानव शक्तियों का अभिभावक हो

सच्चा धर्म वही है जो मानव शक्तियों का अभिभावक हो न कि उसका समूल विनाश करे। काम-क्रोध जो परमेश्वर की ओट से मानव स्वभाव में रखे गए हैं उन्हें त्यागना परमेश्वर का मुक़ाबला करना है। जैसे संसार से सन्यास धारण करना या वैरागी बन जाना। ये समस्त बातें लोगों के अधिकार को नष्ट करने वाली हैं। यदि यह बात ऐसी ही होती तो मानो उस ख़ुदा पर आरोप है जिसने ये शक्तियां हमारे अन्दर पैदा कीं। अत: ऐसी शिक्षाएं जो इन्जील में हैं और जिन से शक्तियों का समूल विनाश अनिवार्य होता है पथ भ्रष्टता तक पहुँचाती हैं। परमेश्वर तो उन्हें संतुलित रखने का आदेश देता है, नष्ट करना पसन्द नहीं करता। जैसा कि फ़रमाया - اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ (अन्नहल :91) न्याय एक ऐसी वस्तु है जिस से सभी को लाभन्वित होना चाहिए। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का यह शिक्षा देना कि यदि तू बुरी आँख से देखे तो आँख निकाल दे। इसमें भी शक्तियों का समूल विनाश है, क्योंकि ऐसी शिक्षा न दी कि तू ऐसी स्त्री को कदापि न देख जिससे विवाह करना वैध है परन्तु इसके विपरीत अनुमति दी कि देख तो अवश्य परन्तु दुराचार की आँख से न देख। देखने से तो वर्जन है ही नहीं। देखेगा तो अवश्य, देखने के पश्चात् देखना चाहिए कि उसकी शक्तियों (प्रवृतियों) पर क्या प्रभाव होगा क्यों न क़ुर्आन करीम की तरह आँख को ठोकर वाली वस्तु के देखने से रोका और आँख जैसी लाभप्रद और बहुमूल्य वस्तु को नष्ट कर देने का शोक लगाया।

इस्लामी पर्दे का उद्देश्य

आजकल पर्दे को निशाना बनाया जाता है परन्तु ये लोग नहीं जानते कि इस्लामी पर्दे से अभिप्राय बन्दीगृह नहीं अपितु एक प्रकार की रोक है कि परपुरुष और परस्त्री एक दूसरे को न देख सके। जब पर्दा होगा, ठोकर से बचेंगे। एक न्याय प्रिय कह सकता है कि ऐसे लोगों में यहां परपुरुष और परस्त्री इकट्ठे नि:संकोच और निर्भीकता से मिल सकें, सैर करें, काम भावनाओं से विवश होकर क्योंकर ठोकर न खाएंगे। प्राय: सुनने और देखने में आया है कि ऐसी जातियां परपुरष और स्त्री के एक मकान में अकेले रहने को यद्यपि द्वार भी बन्द हो कोई दोष नहीं समझतीं। यह मानो सभ्यता है। इन्हीं बुरे परिणामों को रोकने के लिए इस्लमाी शरीअत (विधान) बनाने वाले ने वे बातें करने की अनुमति ही न दी जो किसी की ठोकर का कारण बनें। ऐसे अवसर पर यह कह दिया कि जहां इस प्रकार के पुरुष-स्त्री जिससे इस्लामी शरीअत के अनुसार विवाह वैध हो दोनों एक स्थान पर एकत्र हों तो तीसरा उन में शैतान होता है। इन दूषित परिणामों पर विचार करो जो यूरोप इस अनियंत्रित शिक्षा से भुगत रहा है। कुछ स्थानों पर सरासर लज्जाजनक वैश्याओं जैसा जीवनयापन किया जा रहा है। यह उन्हीं शिक्षाओं का परिणाम है। यदि किसी वस्तु को बेईमानी से सुरक्षित रखना चाहते हो तो सुरक्षा करो, परन्तु यदि सुरक्षा न करो और यह समझते रहो कि सुशील लोग हैं, तो स्मरण रखो कि वह वस्तु अवश्य नष्ट होगी। इस्लामी शिक्षा कैसी पवित्र शिक्षा है कि जिसने पुरुष-स्त्री को पृथक रखकर ठोकर से बचाया तथा मनुष्य का जीवन दूभर और दु:शील नहीं किया जिस के कारण यूरोप ने नित्य-प्रति की अराजकता और आत्महत्याएं देखीं। कुछ सुशील स्त्रियों का वैश्यावृति का जीवन-एक क्रियात्मक परिणाम उस अनुमति का है जो परस्त्री को देखने के लिए दी गई।

ईश्वर प्रदत्त शक्तियों का समुचित प्रयोग तथा उनमें संतुलन बनाए रखना उनका विकास क्रम है।

परमेश्वर ने मनुष्य को जितनी शक्तियां प्रदान की हैं वे नष्ट करने के लिए नहीं दी गईं उनको संतुलित करना और यथास्थान प्रयोग करना ही उनका विकास है। इसीलिए इस्लाम ने काम-शक्तियों अथवा आँख को निकालने की अनुमति नहीं दी अपितु उनका उचित प्रयोग और आत्मशुद्धि कराई जैसे कि फ़रमाया - قَدۡاَفۡلَحَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ (अलमोमिनून :2) इसी प्रकार यहां भी फ़रमाया संयमी (मुत्तक़ी) के जीवन को चित्रित करते हुए अन्त में परिणामस्वरूप यह कहा - وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ (अलबक़रह :6) अर्थात् वे लोग जो संयम पर क़दम मारते हैं, परोक्ष पर ईमान लाते हैं, नमाज़ डगमगाती है, फिर उसे खड़ा करते हैं, ख़ुदा के प्रदान किए हुए से देते हैं बावजूद नफ़्स के ख़तरों के, भूत और वर्तमान पर विचार किए बिना ख़ुदा की किताब पर ईमान लाते हैं और अन्ततः वे विश्वास तक पहुँच जाते हैं। यही वे लोग हैं जो हिदायत पर निर्भर हैं, वे एक ऐसे मार्ग पर हैं जो निरन्तर आगे जा रहा है, जिससे मनुष्य सफलता तक पहुँचता है तथा यही लोग सफल हैं जो लक्ष्य तक पहुँच जाएंगे और मार्ग की बाधाओं से मुक्ति पा चुके हैं। इसलिए आरम्भ में ही परमेश्वर ने हमें संयम की शिक्षा देकर एक ऐसी किताब प्रदान की जिस में हमें संयम की वसीयतें भी दीं। अतः हमारी जमाअत यह पूर्ण चिन्ता सांसारिक चिन्ताओं से अधिक अपने प्राण पर करे कि उनमें संयम है या नहीं।

अपना जीवन दीनता और नम्रता में व्यतीत करो।

संयमियों के लिए यह शर्त है कि वे अपना जीवन दीनता और नम्रता में व्यतीत करें। यह संयम की एक शाखा है जिसके द्वारा हमें अनुचित आक्रोश

का मुकाबला करना है। बड़े-बड़े आध्यात्म ज्ञानी और सदात्माओं के लिए अन्तिम और कठिन लक्ष्य आक्रोश से बचना ही है। अहंकार और अभिमान आक्रोश से ही उत्पन्न होता है और इसी प्रकार कभी स्वयं आक्रोश अहंकार और अभिमान का परिणाम होता है क्योंकि आक्रोश उस समय होगा जब मनुष्य स्वयं को दूसरे पर प्रमुखता देता है। मैं नहीं चाहता कि मेरी जमाअत वाले परस्पर छोटा या बड़ा समझें अथवा परस्पर अभिमान करें या तिरस्कार की दृष्टि से देखें। ख़ुदा जानता है कि बड़ा कौन है या छोटा कौन है। यह एक प्रकार का तिरस्कार है जिसके अन्दर अनादर है, भय है कि यह अनादर बीज की भांति बढ़े और उसके विनाश का कारण हो जाए। कुछ लोग बड़ों से मिलते हुए बहुत सम्मानपूर्वक व्यवहार करते हैं, परन्तु बड़ा वह है जो एक दीन की बात को दीनता से सुने उसको सांत्वना दे, उसकी बात को श्रेय दे, कोई झुंझलाने वाली बात मुख पर न लाए कि जिस से कष्ट पहुँचे। ख़ुदा तआला फ़रमाता है -

وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ

(अलहुजरात :12) तुम परस्पर चिढ़ पैदा करने वाले नाम न लो, यह कृत्य पापियों और व्यभिचारियों का है। जो व्यक्ति किसी को चिढ़ाता है वह न मरेगा जब तक वह स्वयं उसी प्रकार के कृत्य में ग्रसित न होगा, अपने भ्राताओं को तिरस्कृत न समझो। जब एक ही झरने से सारे ही पानी पीते हो तब कौन जानता है कि किस के भाग्य में अधिक पानी पीना है। कोई सांसारिक नियमों से सम्माननीय और आदरणीय नहीं हो सकता। ख़ुदा तआला के निकट बड़ा वह है जो संयमी है - اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ (अलहुजरात :14)

जातियों की भिन्नता

यह जो विभिन्न जातियां हैं यह कोई श्रेष्ठता का कारण नहीं। ख़ुदा तआला ने मात्र पहचान के लिए ये जातियां बनाईं और आजकल तो केवल चार पीढ़ियों के पश्चात् वास्तविक पता लगाना ही कठिन है। संयमी की प्रतिष्ठा के विरुद्ध है कि जातियों के विवाद में पड़े। जब अल्लाह तआला ने निर्णय कर दिया कि मेरी दृष्टि में जाति कोई प्रमाण नहीं। वास्तविक श्रेष्ठता और महानता का कारण मात्र संयम है।

संयमी कौन होते हैं

खुदा के कलाम से ज्ञात होता है कि संयमी वे होते हैं जो विनम्रता और सहिष्णुता का आचरण करते हैं, वे अहंकारपूर्ण वार्तालाप नहीं करते, उनका वार्तालाप ऐसा होता है जैसे छोटा बड़े से वार्तालाप करे। हमें प्रत्येक स्थिति में वह करना चाहिए जिस में हमारा हित हो। ख़ुदा तआला किसी का किराएदार नहीं वह विशेष संयम चाहता है। जो संयम धारण करेगा वह उच्च पद को प्राप्त करेगा। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम या हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम में से किसी ने उत्तराधिकार से तो सम्मान नहीं पाया, यद्यपि कि हमारा ईमान है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पिता श्री अब्दुल्लाह द्वैतवादी न थे परन्तु उसने नुबुव्वत तो नहीं दी। यह तो ख़ुदा की कृपा थी उन श्रद्धाओं के कारण जो उनके स्वभाव में थीं, ये ही कृपा की प्रेरक थीं। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जो नबियों के पिता थे उन्होंने अपनी श्रद्धा और संयम से ही पुत्र को बलिदान करने में संकोच न किया। स्वयं अग्नि में डाले गए, हमारे पेशवा हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ही श्रद्धा और वफ़ा देखिए आप(स.अ.व) ने प्रत्येक प्रकार के बुरे चलन का मुकाबला किया, नाना प्रकार के कष्ट और दुख उठाए, परन्तु

परवाह न की। यही श्रद्धा और वफ़ा थी जिसके कारण ख़ुदा तआला ने कृपा की इसी लिए ख़ुदा तआला ने फ़रमाया –

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۖ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

(अलअहज़ाब :57) अनुवाद – अल्लाह तआला और उसके समस्त फ़रिश्ते रसूल (स.अ.व) पर दरूद भेजते हैं। हे ईमान वालो! तुम नबी (स.अ.व.) पर दरूद और सलाम भेजो।

इस आयत से प्रकट होता है कि रसूले करीम (स.अ.व.) के कर्म ऐसे थे कि अल्लाह तआला ने उन की प्रशंसा या विशेषताओं को सीमित करने के लिए कोई विशेष शब्द नहीं कहा। शब्द तो मिल सकते थे परन्तु स्वयं प्रयोग न किए अर्थात् आप के शुभ कर्मों की प्रशंसा सीमाबन्धन से बाहर थी। इस प्रकार की आयत किसी अन्य नबी की प्रतिष्ठा में प्रयोग न की। आप (स.अ.व.) की आत्मा में वह श्रद्धा और वफ़ा थी और आप के कर्म ख़ुदा की दृष्टि में इतने रुचिकर थे कि अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए यह आदेश दिया कि भविष्य में लोग धन्यवाद के तौर पर दरूद भेजें। आप का साहस और श्रद्धा वह थी कि यदि हम ऊपर या नीचे दृष्टि डालें तो उस का उदाहरण नहीं मिलता। स्वयं हज़रत मसीह के समय को देख लिया जाए कि उनका साहस या आध्यात्मिक श्रद्धा तथा वफ़ा का प्रभाव उनके अनुयायियों पर कहां तक हुआ। प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि एक दुराचारी का सुधार करना कितना दुष्कर है। दृढ़ हो चुकी आदतों को दूर करना कैसा दुर्लभ बातों में से है परन्तु हमारे पुनीत हज़रत नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो सहस्त्रों मनुस्यों का सुधार किया जो जानवरों से भी निकृष्ट थे। कुछ माताओं और बहनों में जानवरों की तरह अन्तर न करते थे, असहायों का माल खाते, मुरदों का माल खाते। कुछ नक्षत्र–पूजक कुछ नास्तिक, कुछ सृष्टि–पूजक थे। अरब

द्वीप क्या था अपने अन्दर बहुत से धर्मों का समूह था।

क़ुर्आन करीम पूर्ण मार्ग दर्शन है

इस से बहुत बड़ा लाभ यह हुआ कि क़ुर्आन करीम प्रत्येक प्रकार की शिक्षा अपने अन्दर रखता है, प्रत्येक ग़लत आस्था या बुरी शिक्षा जो संसार में संभव है उसके विनाश हेतु उसमें पर्याप्त शिक्षा मौजूद है। यह ख़ुदा तआला की दूरदर्शिता और अधिकार है।

चूंकि पूर्ण किताब ने आकर पूर्ण सुधार करना था। आवश्यक था कि उसके उतरने के समय उसके उतरने के कारणों में रोग भी पूर्ण हो ताकि प्रत्येक रोग की पूर्ण चिकित्सा उपलब्ध की जाए। अतः इस द्वीप में पूर्ण रूप से रोगी (लोग मौजूद) थे और जिनमें वे समस्त आध्यात्मिक रोग विद्यमान थे जो उस समय या उसके पश्चात् भविष्य में आने वाले वंशों को लगने वाले थे। यही कारण था कि क़ुर्आन करीम ने सम्पूर्ण शरीअत को पूर्ण किया, अन्य किताबों के उतरने के समय न यह आवश्यकता थी न उनमें ऐसी पूर्ण शिक्षा थी।

नबी करीम (स.अ.व.) **का सुधार-कार्य ही एक महान् चमत्कार है**

हमारे नबी करीम (स.अ.व) की जितनी बरकतें प्रकट हुईं यदि समस्त अद्‌भुत चमत्कारों को पृथक कर दिया जाए तो केवल आप का सुधार-कार्य ही एक महान चमत्कार है। यदि कोई इस स्थिति पर विचार करे जब आप आए फिर उस स्थिति को देखे जो आप छोड़कर गए तो उसे स्वीकार करना पड़ेगा कि यह प्रभाव स्वयं में एक चमत्कार था,यद्यपि कि समस्त नबी सम्मान के योग्य हैं परन्तु ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ (अलजुमा' :5) यदि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आगमन न होता तो नुबुव्वत तो रही एक ओर ख़ुदाई का प्रमाण भी इस प्रकार न मिलता आप ही की

शिक्षा से قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ لَمۡ يَلِدۡ ۙ وَلَمۡ يُوۡلَدۡ ۙ

(अल इख़लास 2 से 5) وَلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ

का ज्ञान हुआ। यदि तौरात में कोई ऐसी शिक्षा होती और क़ुर्आन करीम उसकी व्याख्या ही करता तो नसारा (ईसाइयों) का अस्तित्व ही क्यों होता। अतः क़ुर्आन करीम ने जितने मार्ग संयम के बताए तथा हर प्रकार के मनुष्यों और भिन्न-भिन्न प्रकार की बुद्धि रखने वालों का पोषण करने के मार्ग सिखाए। एक मूर्ख, विद्वान और दार्शनिक के पोषण के मार्ग, हर वर्ग के प्रश्नों के उत्तर। अतः कोई सम्प्रदाय न छोड़ा जिसके सुधार के उपाय न बताए।

पवित्र क़ुर्आन में समस्त सच्चाइयां हैं

यह एक प्रकृति का ग्रन्थ था, जैसा कि फ़रमाया فِيۡهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ (अलबय्यिनह :4) ये वे ग्रन्थ हैं जिनमें सम्पूर्ण सच्चाइयां हैं। यह कैसी मुबारक किताब है कि इस में श्रेष्ठ पद तक पहुँचने के समस्त संसाधन विद्यमान है, परन्तु खेद है कि जैसे हदीस में आया कि एक मध्य का युग आएगा जो 'फैज आवज (अनियंत्रित) है अर्थात् हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया - कि एक मेरा युग बरकत वाला है।

महदी

एक आने वाले मसीह तथा महदी का। मसीह और महदी कोई दो पृथक व्यक्ति नहीं। इनसे अभिप्राय एक ही है। महदी से अभिप्राय मार्ग-दर्शन प्राप्त है। कोई यह नहीं कह सकता कि मसीह, महदी नहीं। महदी, मसीह हो अथवा न हो परन्तु मसीह के महदी होने से इन्कार करना मुसलमान का काम नहीं। वास्तव में अल्लाह तआला ने ये दो शब्द गाली-गलौज के सामने बतौर 'ज़ब्ब' के रखे हैं कि वह काफ़िर, पथ-भ्रष्ट करने वाला नहीं, अपितु महदी

है। अतः उसके ज्ञान में था कि आने वाले मसीह और महदी को दज्जाल और पथ-भ्रष्ट कहा जाएगा इसलिए उसे मसीह तथा महदी कहा गया। दज्जाल का संबंध اَخۡلَدَ اِلَى الۡاَرۡضِ (अलआराफ़ :177) से था और मसीह को रफ़आ आसमानी होना था। अतएव अल्लाह तआला ने जो कुछ चाहा था उसे दो ही युगों में पूर्ण होना था। एक आप (स.अ.व) का युग और दूसरा अन्तिम मसीह तथा महदी का युग, अर्थात् एक युग में क़ुर्आन और सच्ची शिक्षा उतरी परन्तु उस शिक्षा पर फैज आवज (अनियंत्रित) के युग ने दिया जिस पर्दे का उठाया जाना मसीह के युग में प्रारब्ध था जैसे कि फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक तो तत्कालीन आदरणीय सहाबा(रज़ि) की जमाअत का शुद्धिकरण किया तथा एक आने वाली जमाअत का, जिसकी प्रतिष्ठा में لَمَّا يَلۡحَقُوۡا بِهِمۡ (अलजुमा' :4) आया है। यह स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला ने शुभ सन्देश दिया कि गुमराही के समय अल्लाह तआला उस धर्म को नष्ट न करेगा अपितु आने वाले युग में ख़ुदा तआला क़ुर्आनी सच्चाइयों को प्रकट कर देगा। आने वाले मसीह के लक्षणों में से एक यह श्रेष्ठता होगी कि वह क़ुर्आनी बोध और आध्यात्म ज्ञान वाला होगा तथा केवल क़ुर्आन से निर्देश निकाल कर लोगों को उनके दोषों से अवगत करेगा जो सच्चाइयां क़ुर्आन के ज्ञान से अज्ञानता के कारण लोगों में पैदा हो गई होगी।

मूसा अलैहिस्सलाम और मुहम्मद (स.अ.व) **के सिलसिले की समरूपता**

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़ुर्आन में मूसा के समरूप बता कर फ़रमाया -

اِنَّاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلَيۡكُمۡ رَسُوۡلًا ۙ شَاهِدًا عَلَيۡكُمۡ كَمَاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ رَسُوۡلًا

(अलमुज़्ज़म्मिल :16) अर्थात् हमने एक रसूल भेजा जैसे मूसा को फ़िरऔन की ओर भेजा था। हमारा रसूल मूसा का समरूप है। एक अन्य

स्थान पर फ़रमाया –

وَعَدَاللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا

اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

(अन्नूर :56) कि इस मूसा के समरूप के ख़लीफ़ा भी इसी सिलसिले से होंगे जैसे कि मूसा के ख़लीफ़ा एक श्रंखला में आए। उस सिलसिले की अवधि चौदह वर्ष तक रही, ख़लीफ़ा निरन्तर आते रहे। अल्लाह की ओर से यह एक भविष्यवाणी थी कि जिस प्रकार से पहले सिलसिले का प्रारम्भ हुआ वैसे ही इस सिलसिले का प्रारम्भ होगा अर्थात् जिस प्रकार मूसा ने प्रारम्भ में प्रतापी निशान दिखाए और क़ौम को फ़िरऔन से मुक्त कराया इसी प्रकार आने वाला नबी भी मूसा की भांति होगा

فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبًا ۝١٧ السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌ

بِهٖ ۭ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا

(अलमुज़्ज़म्मिल :18,19) अर्थात् जिस प्रकार हमने मूसा को भेजा था। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय अरब के काफ़िर भी फ़िरऔनियत से भरे हुए थे, वे भी फ़िरऔन का भांति न हटे जब तक उन्होंने प्रतापपूर्ण निशान न देख लिए। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कार्य मूसा के कार्यों के समान थे। उस मूसा अलैहिस्साम के कार्य स्वीकारणीय न थे परन्तु क़ुर्आन करीम ने स्वीकार कराए। हज़रत मूसा के युग में यद्यपि फ़िरऔन के चंगुल से बनीइस्राईल को मुक्ति प्राप्त हुई परन्तु पापों से मुक्ति प्राप्त न हुई,वे लड़े और कुटिल हुए तथा मूसा पर प्रहार करने वाले हुए, परन्तु हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ौम को पूर्णतया मुक्ति दी रसूले अकरम (स.अ.व) यदि शक्ति, प्रतिष्ठा और शासन इस्लाम को न देते तो मुसलमान नृशंसित रहते तथा काफ़िरों के चंगुल से मुक्त न होते। अल्लाह

तआला ने एक तो यह मुक्ति प्रदान की कि स्थायी तौर पर इस्लामी शासन स्थापित हो गया द्वितीय यह कि उन्हें पापों से पूर्ण मुक्ति प्राप्त हुई। ख़ुदा तआला ने दोनों नक्शे रूपांकित किए हैं कि अरब पहले क्या थे और फिर क्या हो गए। यदि दोनों नक्शे एकत्र किए जाएं तो उनकी पूर्वावस्था का अनुमान लग जाएगा। अतः अल्लाह तआला ने उन्हें दोनों मुक्तियां प्रदान कीं। शैतान से भी मुक्ति दी और उपद्रवी से भी।

आंहज़रत (स.अ.व) और मसीह अलैहिस्सलाम की तुलना

जो श्रद्धा और निष्ठा आप (स.अ.व) ने और आप के आदरणीय सहाबा रज़ि. ने दिखाई उसका कहीं उदाहरण नहीं मिलता। प्राण देने तक से संकोच नहीं किया। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लिए कोई कठिन कार्य न था और न ही कोई इल्हाम का इन्कारी था, बिरादरी के कुछ लोगों को समझाना कौन सा बड़ा कार्य है। यहूदी तौरात तो पढ़े ही हुए थे, उस पर ईमान रखते थे, ख़ुदा को एक और भागीदार रहित जानते ही थे प्रायः यह विचार आ जाता है कि हज़रत मसीह क्या करने आए थे, यहूदियों में तो तौरात के लिए अब भी स्वाभिमान पाया जाता है। अन्ततः यह कह सकते हैं कि कदाचित यहूदियों में नैतिक दोष थे परन्तु शिक्षा तो तौरात में मौजूद ही थी। बावजूद इस सुविधा के कि जाति उस किताब को मानती थी। हज़रत मसीह ने वह किताब पाठ-पाठ करके पढ़ी थी इसकी तुलना में हमारे पेशवा, पूर्ण पथ-प्रदर्शक अनपढ़ थे,आप का कोई शिक्षक भी न था और यह एक ऐसी घटना है कि विरोधी भी इस बात से इन्कार न कर सके। अतः हज़रत ईसा के लिए दो सुविधाएं थीं। एक तो बिरादरी के लोग थे और जो बड़ी बात उन से स्वीकार करानी थी वह पहले ही स्वीकार कर चुके थे। हां कुछ नैतिक दोष थे, परन्तु बावजूद इतनी सुविधा के हवारी (मसीह अलैहिस्सलाम के शिष्य) भी ठीक न हुए लालची रहे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपने पास रुपया रखते थे, कुछ

हवारी चोरियां भी करते थे। अत: वह (हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम) कहते हैं कि मुझे सर रखने के लिए स्थान नहीं, परन्तु हम आश्चर्यचकित हैं कि ऐसा कहने का क्या तात्पर्य है, जब घर भी हो, मकान भी हो और माल में भी ग़ुंजायश इतनी कि चोरी की जाए तो पता भी न लगे। जो भी हो यह तो एक बाधक वाक्य था, दिखाना यह है कि इन समस्त सुविधाओं के बावजूद कुछ सुधार न हो सका। पतरस को स्वर्ग की कुंजियां तो मिल जाएं परन्तु वह अपने शिक्षक (उस्ताद) को लानत (फटकार) देने से न रुक सके।

अब इसकी तुलना में न्यायपूर्वक देखा जाए कि हमारे पूर्ण पथ-प्रदर्शक अलैहिस्सलाम के सहाबा ने अपने ख़ुदा और रसूल के लिए किस-किस प्रकार प्राणों के बलिदान दिए, देश से निकाले गए, अत्याचार सहन किए, नाना प्रकार के कष्ट उठाए, प्राण दिए, परन्तु सत्य और निष्ठा के साथ आगे ही बढ़ते गए। अत: वह क्या बात थी कि जिसने उन्हें ऐसा प्राण न्यौछावर करने वाला बना दिया? वह ख़ुदा के सच्चे प्रेम का जोश था जिसकी किरण उनके हृदय में पड़ चुकी थी। इसलिए चाहे किसी नबी के साथ तुलना कर ली जाए आप अलैहिस्सलाम की शिक्षा, आत्मशुद्धि, अपने अनुयायियों को संसार से घृणा करा देना, सत्य के लिए वीरतापूर्वक रक्त बहा देना इसका उदाहरण कहीं न मिल सकेगा। यह पद आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाह का है और उन में परस्पर जो प्रेम और अनुराग था उसका नक्शा दो वाक्यों में वर्णन किया है -

وَاَلَّفَ بَيۡنَ قُلُوۡبِهِمۡ ؕ لَوۡ اَنۡفَقۡتَ مَا فِى الۡاَرۡضِ جَمِيۡعًا مَّاۤ اَلَّفۡتَ بَيۡنَ قُلُوۡبِهِمۡ

(अलअन्फ़ाल :64) अर्थात् जो प्रेम उन में है वह कदापि पैदा न होता चाहे सोने का पर्वत भी दिया जाता। अब एक और जमाअत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की है जिसने अपने अन्दर सहाबा रज़ियल्लाह का रंग पैदा करना है। सहाबा रज़ियल्लाह की तो वह पवित्र जमाअत थी जिस की प्रशंसा में क़ुर्आन करीम भरा पड़ा है। क्या आप लोग ऐसे हैं? जब ख़ुदा कहता है

कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के साथ वे लोग होंगे जो सहाबा रज़ियल्लाह के कन्धे से कन्धा मिलाए हुए होंगे। सहाबा रज़ियल्लाह तो वे थे जिन्होंने अपना माल, अपना देश सत्य के मार्ग में अर्पण कर दिया और सर्वस्व त्याग दिया। हज़रत सिद्दीक अकबर (हज़रत अबूबकर) रज़ियल्लाहो अन्हो का मामला प्रायः सुना होगा। एक बार जब ख़ुदा के मार्ग में माल देने का आदेश हुआ तो घर का कुल सामान ले आए। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि घर में क्या छोड़ आए तो फ़रमाया कि घर में ख़ुदा और रसूल को छोड़ आया हूँ। मक्का का रईस हो और कम्बल ओढ़े हुए, निर्धनों का लिबास पहने। यह समझ लो कि वे लोग तो ख़ुदा के मार्ग में शहीद हो गए, उनके लिए तो यही लिखा है कि तलवारों के नीचे स्वर्ग है परन्तु हमारे लिए तो इतनी कठोरता नहीं क्योंकि يَضَعُ الْحَرْبَ हमारे लिए आया है अर्थात् महदी के समय लड़ाई नहीं होगी।

इस्लामी लड़ाइयाँ

अल्लाह तआला कुछ हितों की दृष्टि एक कर्म करता है और भविष्य में जब वह कर्म आरोप के योग्य ठहरता है तो फिर वह कर्म नहीं करता। प्रथम हमारे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कोई तलवार न उठाई, परन्तु उन्हें कठोर से कठोर कष्ट उठाने पड़े। तेरह वर्ष की अवधि एक बालक को व्यस्क करने के लिए पर्याप्त है। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की अवधि तो यदि उसमें से दस निकाल दें तो फिर भी बहुत होती है। अतएव इस लम्बी अवधि में कोई या किसी प्रकार का कष्ट न था जो न उठाना पड़ा हो। अन्ततः देश से निकले तो पीछा किया गया, दूसरे स्थान पर शरण ली तो शत्रु ने वहां भी न छोड़ा. जब परिस्थिति यह हो गई तो नृशंसितों को अत्याचारियों के अत्याचार से सुरक्षित रखने के लिए आदेश हुआ –

اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۙ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّاۤ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ

(अलहज्ज :40,41) कि जिन लोगों के साथ अकारण लड़ाइयां की गईं और घरों से अकारण निकाले गए केवल इस लिए कि उन्होंने कहा कि हमारा रब्ब अल्लाह है। अतः यह आवश्यकता थी कि तलवार उठाई गई अन्यथा हज़रत कभी तलवार न उठाते। हाँ हमारे युग में हमारे विरुद्ध क़लम उठाई गई है, हमें क़लम से पीड़ा पहुँचाई गई और बहुत सताया गया। इसलिए इसके मुकाबले पर क़लम ही हमारा अस्त्र है।

कोई जितना सानिध्य प्राप्त करता है उतना ही पकड़-योग्य है

मैं बारम्बार कह चुका हुँ कि कोई व्यक्ति जितना सानिध्य प्राप्त करता है उतना ही पकड़-योग्य है, अहले बैत अधिक पकड़-योग्य थे वे लोग जो दूर हैं वे पकड़-योग्य नहीं परन्तु तुम अवश्य हो। यदि तुम में उन पर कोई ईमानी अधिकता नहीं तो तुम में और उनमें क्या अन्तर हुआ। तुम सहस्त्रों लोगों की दृष्टि के सामने हो, वे लोग सरकार के जासूसों की भांति तुम्हारी गति-विधियों को देख रहे हैं, वे सच्चे हैं जब मसीह अलैहिस्सलाम के साथी सहाबा रज़ियल्लाह के समान होने लगे हैं तो क्या आप वैसे हैं, जब आप लोग वैसे नहीं तो गिरफ़्त-योग्य हैं। यद्यपि यह आरम्भिक अवस्था है परन्तु मृत्यु का क्या भरोसा है, मौत एक ऐसी निश्चित बात है जो प्रत्येक व्यक्ति के सामने आने वाली है जब स्थिति यह है तो फिर क्यों आसावधान हैं। जब कोई व्यक्ति मुझ से संबंध नहीं रखता तो यह बात दूसरी है परन्तु जब आप मेरे पास आए, मेरा दावा स्वीकार किया और मुझे मसीह माना तो मानो एक दृष्टि से आप ने आदरणीय सहाबा रज़ि. के समान होने का दावा कर दिया तो क्या सहाबा रज़ि

ने कभी सत्य और निष्ठा पर चलने से संकोच किया, उनमें कोई आलस्य था, क्या वे दु:खदायी थे, क्या उन्हें अपनी भावनाओं पर अधिकार न था? क्या वे नम्र स्वभाव न थे अपितु उनमें उच्च श्रेणी की विनम्रता थी। अत: दुआ करो कि अल्लाह तआला तुम्हें भी वैसी ही सामर्थ्य दे, क्योंकि विनय और विनम्रता का जीवन कोई व्यक्ति धारण नहीं कर सकता जब तक अल्लाह तआला उसकी सहायता न करे। स्वयं को टटोल कर देखो और यदि बच्चे की भांति स्वयं को कमज़ोर देखो तो घबराओ नहीं (अलफ़ातिहा-6) اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ की दुआ सहाबा रज़ि. की तरह जारी रखो।

रातों को उठो और दुआ करो

रातों को उठो और दुआ करो कि अल्लाह तआला तुम्हें अपना मार्ग दिखाए। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ि ने भी आहिस्ता-आहिस्ता प्रशिक्षण पाया। वे पहले क्या थे, एक किसान के बीजारोपण की तरह थे फिर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिंचाई की आप (स.अ.व) ने उनके लिए दुआएं कीं। बीज ठीक था और पृथ्वी उत्तम, तो इस सिंचाई से फल उत्तम निकला। जिस प्रकार हुज़ूर अलैहिस्सलाम चलते उसी प्रकार वे चलते, वे दिन या रात की प्रतीक्षा न करते थे। तुम लोग सच्चे हृदय से पापों से क्षमा-याचना करो, तहज्जुद में उठो दुआ करो, हृदय को ठीक करो, कमज़ोरियों को त्याग दो और ख़ुदा की प्रसन्नतानुसार अपने कथन और कर्म को बनाओ। विश्वास रखो कि जो इस उपदेश को अपना नित्य-कर्म बनाएगा तथा क्रियात्मक तौर से दुआ करेगा तथा ख़ुदा के सामने याचना करेगा अल्लाह तआला उस पर कृपा करेगा और उसके हृदय में परिवर्तन होगा, ख़ुदा तआला से निराश मत हो -

بر کریماں کارہا دشوار نیست

मनुष्य ने वली बनना है

कुछ लोग कहते हैं कि हमें क्या कोई वली बनना है? खेद उन्होंने कुछ महत्व न दिया, नि:सन्देह मनुष्य ने (ख़ुदा का) वली बनना है। यदि वह सद्मार्ग पर चलेगा तो ख़ुदा भी उस की ओर चलेगा और फिर एक स्थान पर उसकी भेंट होगी। उसकी गति इस ओर चाहे आहिस्ता होगी परन्तु उसके मुक़ाबले ख़ुदा की गति बहुत शीघ्र होगी। अत: यह आयत इसी ओर संकेत करती है – وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ...अन्त तक (अल अन्कबूत :70) अत: जो-जो बातें मैंने आज वसीयत की हैं उन्हें स्मरण रखो कि इन पर मुक्ति का आधार है तुम्हारे मामले ख़ुदा और प्रजा के साथ ऐसे होने चाहिए जिन में मात्र ख़ुदा की ही प्रसन्नता हो। अत: इस से तुम ने وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ..... अन्त तक (अलजुमा' :4) के चरितार्थ बनना है।

इस्राईली और इस्माईली दो सिलसिले

हाँ जैसा कि पहले वर्णन किया जा चुका है ख़ुदा की प्रबल नीति ने यही चाहा कि इस्राईली और इस्माईली संसार में दो सिलसिले स्थापित करे। प्रथम सिलसिला हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से प्रारम्भ होकर हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम तक समाप्त हुआ और यह चौदह सौ वर्ष तक रहा। इसी प्रकार हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से लेकर आज चौदह सौ वर्ष पर एक मसीह अलैहिस्सलाम के आने का संकेत है। चौदह की संख्या का विशेष संबंध एक यह भी है कि मनुष्य चौदह वर्ष पर वयस्कता पा लेता है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को सूचना मिली थी कि मसीह उस समय आएगा

जब यहूदियों में बहुत सम्प्रदाय होंगे, उनकी आस्थाओं में बहुत मतभेद होगा। कुछ फ़रिश्तों के अस्तित्व से इन्कार, कुछ को प्रलय और शरीरों को जीवित कर के उठाए जाने से इन्कार। अतएव जब भिन्न-भिन्न प्रकार की कुधारणा फैल जाएगी तब उनमें मसीह मध्यस्थ (न्यायकर्ता) बन कर आएगा। इसी प्रकार हमारे पूर्ण पथ-प्रदर्शक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें सूचना दी कि जब तुम में भी यहूदियों की भांति सम्प्रदायों की बहुलता हो जाएगी तथा उन्हीं की भांति विभिन्न प्रकार की कुधारणाओं और दुष्कर्मों का आरम्भ होगा, विद्वान यहूदियों की तरह परस्पर कुफ्र के फ़त्वे लगाने वाले होंगे उस समय इस दयनीय उम्मत का मसीह भी बतौर हकम (मध्यस्थ) आएगा जो क़ुर्आन करीम से प्रत्येक बात का फैसला करेगा, वह मसीह अलैहिस्सलाम की भांति जाति के द्वारा कष्ट दिया जाएगा तथा काफ़िर ठहराया जाएगा। यदि लोगों ने मूर्खता से उस व्यक्ति को दज्जाल (धोखेबाज़) और कफ़िर कहा तो आवश्यक था कि ऐसा होता, क्योंकि हदीस में आ चुका था कि आने वाला मसीह काफ़िर और दज्जाल ठहराया जाएगा, परन्तु जो आस्था आप को सिखाई जाती है वह बिल्कुल साफ और उज्जवल है और सबूतों की मुहताज भी नहीं अपने साथ अटल तर्क रखती है।

मसीह की मृत्यु

प्रथम विवाद मसीह की मृत्यु का ही है। इसके समर्थन में अत्यन्त स्पष्ट आयतें हैं -يٰعِيۡسٰۤى اِنِّىۡ مُتَوَفِّيۡكَ وَرَافِعُكَ اِلَىَّ (आलेइमरान :56)

फिर فَلَمَّا تَوَفَّيۡتَنِىۡ كُنۡتَ اَنۡتَ الرَّقِيۡبَ عَلَيۡهِمۡ ؕ (अलमाइदह :118) यह बहाना बिल्कुल असत्य है कि तवफ़्फ़ी के अर्थ कुछ और हैं इब्ने अब्बास और स्वयं पूर्ण पथ-प्रदर्शक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसके अर्थ 'इमातत' (मृत्यु) के कर दिए हैं। ये लोग भी जहां कहीं शब्द तवफ़्फ़ी प्रयोग करते हैं तो अर्थ इमातत (मृत्यु) और आत्मा निकालने के ही लेते हैं, क़ुर्आन

करीम ने भी प्रत्येक स्थान पर इस शब्द के यही अर्थ वर्णन किए हैं। इसलिए इस पर तो कहीं हाथ न पड़ा। अत: जब मसीह नासिरी अलैहिस्लाम की मृत्यु सिद्ध है तो आवश्यक है कि आने वाला कोई इसी उम्मत में से हो जैसे कि إِمَامُكُمْ مِنْكُمْ (अलहदीस) इसकी व्याख्या करती है। वे लोग जो नेचरी हैं उन का सौभाग्य है कि वे इस विपत्ति से बच गए क्योंकि मसीह की मृत्यु को तो वे मानते ही हैं और मसीह मौऊद की चर्चा इतनी निरन्तरता रखती है कि जिस निरन्तरता से इन्कार असम्भव है, इसके अतिरिक्त क़ुर्आनी संकेत भी आने वाले के साक्षी हैं। अत: एक मनीषी इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि मसीह आएगा।

मसीह को इस युग से क्या विशेषता है?

हाँ कुछ का अधिकार है कि यह आरोप करें कि मसीह को इस युग से क्या विशेषता है? इसका उत्तर यह है कि क़ुर्आन करीम ने इस्राईली और इस्माईली दो सिलसिलों में ख़िलाफ़त की समानता का स्पष्ट संकेत किया है, जैसा कि इस आयद से स्पष्ट है –

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

(अन्नूर :56) इस्राईली सिलसिले का अन्तिम ख़लीफ़ा जो चौदहवीं शताब्दी पर मूसा अलैहिस्सलाम के बाद आया वह मसीह नासिरी था। तुलना में आवश्यक था कि इस उम्मत का मसीह भी चौदहवीं शताब्दी के सर पर आए, इसके अतिरिक्त अहले कश्फ़ (जिन्हें कश्फ़ होते हैं) ने इसी शताब्दी को मसीह के अवतरित होने का युग ठहराया है, जैसे शाह वलीउल्लाह साहिब इत्यादि अहले हदीस की सहमति हो चुकी है कि छोटी निशानियां सम्पूर्ण और बड़ी निशानियां एक सीमा तक पूर्ण हो चुकी हैं, परन्तु इसमें उनकी

कुछ ग़लती है, लक्षण सारे पूर्ण हो चुके हैं, आने वालों का लक्षण जो बुख़ारी शरीफ़ में يَكْسِرُ الصَّلِيْبَ وَيَقْتُلُ الْخِنْزِيْرَ ....अन्त तक। अर्थात् मसीह के उतरने का समय ईसाइयों के प्रभुत्व तथा सलीबी-पूजा का ज़ोर है, अतः क्या यह वह समय नहीं, क्या जो कुछ हानि पादरियों से इस्लाम को पहुँच चुकी है उसका उदाहरण आदम से लेकर आज तक कहीं है। प्रत्येक देश में फूट पड़ गई, कोई ऐसा इस्लामी खानदान नहीं कि जिस में से एक आध आदमी उन के हाथ में न चल गया हो। अतः आने वाले का समय सलीबी आस्था का प्रभुत्व है। अब इस से अधिक प्रभुत्व क्या होगा कि किस प्रकार इस्लाम पर हिंसक पशुओं की तरह शत्रुता पूर्वक प्रहार किए गए। विरोधियों का क्या कोई वर्ग है जिसने हज़रत रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अत्यन्त पशुतापूर्ण शब्दों और गालिओं से याद नहीं किया? अब यदि आने वाले का यह समय नहीं तो बहुत शीघ्र वह आया भी तो सौ वर्ष तक आएगा क्योंकि वह समय का मुजद्दिद है जिसके अवतरण का समय शताब्दी (सदी) का सर होता है तो क्या इस्लाम में वर्तमान समय में इतनी अतिरिक्त शक्ति है कि एक सदी (शताब्दी) तक पादरियों के प्रति दिन बढ़ते हुए प्रहारों का मुक़ाबला कर सके। प्रभुत्व चरम सीमा तक पहुँच गया और आने वाला आ गया। हाँ अब वह दज्जाल को सबूत को पूर्ण करके नष्ट करेगा, क्योंकि हदीसों में आ चुका है कि उसके द्वारा उम्मतों का विनाश निश्चित है न लोगों का अथवा मिल्लतों का। अतः वैसा ही पूर्ण हुआ।

सूर्य और चन्द्र ग्रहण

आने वाले का एक लक्षण यह भी है कि उस युग में रमज़ान के महीने में सूर्य और चन्द्रग्रहण होगा। अल्लाह तआला के लक्षण से उपहास करने वाले अल्लाह से उपहास करते हैं। सूर्य और चन्द्र ग्रहण का उसके दावे के पश्चात् होना यह एक ऐसी बात थी जो झूठ घड़ने और आडम्बर से बहुत दूर

है। इससे पूर्व कोई सूर्य और चन्द्रग्रहण ऐसा नहीं हुआ, यह एक ऐसा लक्षण था कि जिससे अल्लाह तआला को आने वाले की सम्पूर्ण संसार में उद्घोषणा करना थी। अत: अरब वालों ने भी इस लक्षण को देखकर अपने विचारानुसार उचित ठहराया। हमारे विज्ञापन बतौर उद्घोषणा जहां-जहां नहीं पहुँच सकते थे वहां-वहां इस सूर्य और चन्द्रग्रहण ने आने वाले के समय की उद्घोषणा कर दी। यह ख़ुदा का लक्षण था जो मानव-योजनाओं से सरासर पवित्र था। चाहे कोई कैसा ही वैज्ञानिक हो वह विचार करे और देखे कि जब निर्धारित लक्षण पूर्ण हो गया तो आवश्यक है कि उसका चरितार्थ भी कहीं हो। यह बात ऐसी न थी जो किसी हिसाब के अधीन हो। जैसे कि फ़रमाया था कि यह उस समय होगा जब कोई महदी का दावा कर चुकेगा। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया कि आदम से लेकर उस महदी तक कोई ऐसी घटना नहीं हुई। यदि कोई व्यक्ति इतिहास से ऐसा सिद्ध करे तो हम स्वीकार कर लेंगे।

पुच्छल तारे का उदय

एक अन्य लक्षण यह भी था कि उस समय पुच्छल तारा उदय होगा अर्थात् उन वर्षों का तारा जो पूर्वकाल में गुज़र चुके हैं अर्थात् वह तारा जो मसीह नासिरी के दिनों (वर्षों) में उदय हुआ था अब वह तारा भी उदय हो गया जिसने यहूदियों के मसीह की सूचना आकाशीय तौर पर दी थी। इसी प्रकार क़ुर्आन करीम के देखने से भी ज्ञात होता है -

وَاِذَا الۡعِشَارُ عُطِّلَتۡ ۪ۙ وَاِذَا الۡوُحُوۡشُ حُشِرَتۡ ۪ۙ وَاِذَا الۡبِحَارُ سُجِّرَتۡ ۪ۙ
وَاِذَا النُّفُوۡسُ زُوِّجَتۡ ۪ۙ وَاِذَا الۡمَوۡءٗدَۃُ سُئِلَتۡ ۪ۙ بِاَیِّ ذَنۡۢبٍ قُتِلَتۡ ۚ وَاِذَا
الصُّحُفُ نُشِرَتۡ ۪ۙ

(अत्तक्वीर :5 से 11) अर्थात् उस युग में ऊँटनियां बेकार हो जाएंगी,

गत वर्षों में श्रेष्ठ सवारी और बोझा ढोने के साधन हुआ करते थे अर्थात् उस युग में सवारी का प्रबन्ध कोई ऐसा उत्तम होगा कि ये सवारियों के साधन बेकार हो जाएंगे इससे रेल-युग अभिप्राय था। वे लोग जो विचार करते हैं कि इन आयतों का संबंध प्रलय से है वे नहीं सोचते कि प्रलय में ऊंटनियां गर्भिणी कैसे रह सकती हैं क्योंकि 'इशार' से अभिप्राय गर्भिणी ऊंटनियां हैं फिर लिखा है कि उस युग में चारों ओर नहरें निकाली जाएंगी और पुस्तकें बहुलता के साथ प्रकाशित होंगी। सारांश यह कि ये समस्त लक्षण इसी युग से संबंधित थे।

मसीह मौऊद के प्रकट होने का स्थान

अब रहा स्थान। अतः स्मरण रहे कि दज्जाल का ख़ुरूज (निकलना) पूरब में बताया गया है जिस से अभिप्राय हमारा देश है। अतः 'हुजजुलकरामह' के लेखक ने लिखा है कि दज्जाल के उपद्रव का प्रकटन हिन्दुस्तान में हो रहा है और यह स्पष्ट है कि मसीह का अवतरण उसी स्थान पर हो जहां दज्जाल हो फिर उस गांव का नाम 'कदअ' बताया है जो क़ादियान का संक्षिप्त रूप है। यह संम्भव है कि यमन के देश में भी इस नाम का कोई गांव हो परन्तु यह स्मरण रहे कि यमन हिजाज़ से पूरब दिशा में नहीं अपितु उत्तर में है और इसी पंजाब में एक और क़ादियान भी तो लुधियाना के निकट है।

इसके अतिरिक्त स्वयं प्रारब्ध ने इस विनीत का नाम जो रखवाया है वह भी इस ओर सूक्ष्म संकेत करता है, क्योंकि ग़ुलाम अहमद क़ादियानी की संख्या जमल विद्या के अनुसार पूरी तेरह सौ (1300) बनती है अर्थात् इस नाम का इमाम चौदहवीं शताब्दी (सदी) के प्रारम्भ में होगा। अतः आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का संकेत इसी ओर था।

आकाशीय और पार्थिक घटनाएं

घटनाएं भी एक लक्षण था। आकाशीय घटनाओं ने दुर्भिक्ष, प्लेग और हैज़े का रूप धारण कर लिया। प्लेग वह भयंकर प्रकोप है कि जिसने सरकार को भी उथल-पुथल कर दिया और यदि इसका प्रकोप बढ़ गया तो देश का सफाया हो जाएगा। ज़मीनी घटनाओं में आक्रमण भूकम्प थे जिन्होंने देश का विनाश किया। ख़ुदा के अवतार के लिए यह भी आवश्यक है कि वह अपने प्रमाण में आकाशीय लक्षण दिखाए। एक लेखराम का लक्षण क्या कुछ कम लक्षण था, एक नौका के तौर पर वर्षों तक एक शर्त बंधी रही। पांच वर्ष तक निरन्तर युद्ध होता रहा, दोनों प्रतिद्वन्द्वियों ने विज्ञापन दिए, जनसामान्य में प्रसिद्धि हो गई, ऐसी प्रसिद्धि कि जिसका उदाहरण भी दुर्लभ है फिर घटना भी वैसी हुई जैसा कि कहा गया था। क्या इस घटना का कोई अन्य उदाहरण है ? धर्म महोत्सव के संबंध में कई दिन पूर्व घोषणा की कि हमें अल्लाह तआला ने सूचना दी है कि हमारा लेख सब पर विजयी रहेगा। जिन लोगों ने इस महान् और विशाल अधिवेशन को देखा है वे स्वयं विचार कर सकते हैं कि ऐसे अधिवेशन में घटना पूर्व विजय पाने की सूचना देना कोई अटकल या अनुमान न था फिर अन्ततः वही हुआ जो कहा गया।

وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

(रिपोर्ट जल्सा सालाना 1897, सम्पादित शैख़ या'क़ूब अली इरफ़ानी पृष्ठ 33-61)

(2)

हज़रत अक़दस का द्वितीय भाषण

28, दिसम्बर, 1897 ई. ज़ुहर की नमाज़ के पश्चात्

एक कश्फ़

इस समय मेरे वर्णन का उद्देश्य यह है कि चूंकि मानव जीवन का कुछ भी भरोसा नहीं, इसलिए जितने लोग मेरे पास एकत्र हैं सोचता हूँ कदाचित अगले वर्ष एकत्र न हो सकें तथा इन्हीं दिनों मैंने एक कश्फ़ में देखा है कि अगले वर्ष कुछ लोग संसार में न होंगे, यद्यपि मैं यह नहीं कह सकता कि इस कश्फ़ के चरितार्थ कौन-कौन लोग होंगे।

प्रत्येक व्यक्ति आख़िरत (परलोक) के सफ़र की तैयारी रखे

और मै जानता हूँ कि यह इसलिए है ताकि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं आख़िरत के सफर की तैयारी रखे। जैसा कि मैंने अभी कहा है, मुझे किसी का नाम नहीं बताया गया परन्तु मैं यह ख़ुदा तआला की सूचना द्वारा भली-भांति जानता हूँ कि प्रारब्ध का एक समय है और इस नश्वर संसार को एक समय अवश्य त्यागना है। इसलिए यह कहना नितान्त आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक मित्र जो इस समय उपस्थित है वह मेरी बातों को कथित वृत्तान्त की भांति न समझे अपितु यह ख़ुदा का धर्मोपदेशक और मा'मूर (आदिष्ट) है जो नितान्त सहानुभूति, वास्तविक हित और पूर्ण हमदर्दी से बातें करता है।

परमेश्वर का अस्तित्व

अत: मैं आप लोगों को सूचना देता हूँ कि भली-भांति स्मरण रखो और दिल लगाकर सुनो और हृदय में स्थान दो कि ख़ुदा तआला जैसा कि उसने अपनी किताब क़ुर्आन करीम में अपने अस्तित्व और एकेश्वरवाद को सुदृढ़ और सरल सबूतों से सिद्ध किया है एक श्रेष्ठतम अस्तित्व और प्रकाश है। वे लोग जो इस महान् अस्तित्व की शक्तियों और चमत्कारों को देखकर भी उसके अस्तित्व में सन्देह प्रकट करते और संशय करते हैं, सच मानो बड़े ही दुर्भाग्यशाली हैं। अल्लाह तआला ने अपनी महान् हस्ती और सामर्थ्यवान अस्तित्व को सिद्ध करने के संबंध में ही फ़रमाया है - اَفِى اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ (इब्राहीम :11) क्या अल्लाह के अस्तित्व में भी सन्देह हो सकता है जो पृथ्वी और आकाश का स्रष्टा है? देखो यह तो बड़ी सीधी और स्पष्ट बात है कि एक रचना को देखकर रचयिता को मानना पड़ता है एक उत्तम जूते या सन्दूक को देखकर उसके निर्माण की आवश्यकता को भी साथ ही स्वीकार करना पड़ता है। फिर नितान्त आश्चर्य की बात है कि अल्लाह तआला के अस्तित्व में इन्कार की गुंजायश क्योंकर हो सकती है, ऐसे रचयिता का इन्कार क्योंकर हो सकता है जिसके सहस्त्रों चमत्कारों से पृथ्वी और आकाश भरे हैं। अत: निश्चित तौर पर समझ लो कि प्रकृति के इन चमत्कारों और रचनाओं को देखकर भी जिनमें मानव हाथ, मानव बुद्धि और मस्तिष्क का कार्य नहीं। यदि कोई मूर्ख ख़ुदा की हस्ती और अस्तित्व में सन्देह करे तो वह दुर्भाग्यशाली मनुष्य शैतान के चंगुल में फंसा हुआ है, उसे क्षमा-याचना करना चाहिए। ख़ुदा की हस्ती का इन्कार सबूत और दर्शन (देखना) के आधार पर नहीं अपितु अल्लाह तआला की हस्ती का इन्कार करना उसकी शक्तियों और सृष्टि के चमत्कारों तथा रचनाओं

के अवलोकन के बावजूद जो पृथ्वी और आकाश में भरी पड़ी हैं बड़ी ही नेत्रहीनता है।

नेत्रहीनता के दो प्रकार

नेत्रहीनता के दो प्रकार – प्रथम आँखों की नेत्रहीनता और द्वितीय हृदय की। आँखों की नेत्रहीनता का प्रभाव ईमान पर कुछ नहीं होता परन्तु हृदय की नेत्रहीनता का प्रभाव ईमान पर पड़ता है। इसलिए यह आवश्यक है और नितान्त आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अल्लाह तआला से पूर्ण विनय और नम्रता के साथ हर समय दुआ मांगता रहे कि वह उसे सच्ची मा'रिफ़त और वास्तविक विवेक और दृष्टि प्रदान करे तथा शैतानी भ्रमों से सुरक्षित रखे।

सर्वाधिक ख़तरनाक भ्रम आख़िरत के संबंध में है

शैतानी भ्रम बहुत हैं और सर्वाधिक ख़तरनाक भ्रम और सन्देह जो मानव हृदय में उत्पन्न हो कर उसे संसार और आख़िरत (लोक-परलोक) में हानि उठाने वाला कर देता है आख़िरत के संबंध में है क्योंकि समस्त नेकियों और सच्चाइयों का बहुत बड़ा माध्यम अन्य समस्त संसाधनों और माध्यमों के अतिरिक्त आख़िरत पर ईमान भी है और जब मनुष्य जब आख़िरत और उसकी बातों को कथा और वृत्तान्त समझे तो समझ लो कि वह अमान्य हो गया और दोनों लोकों से बहिष्कृत हुआ।

आख़िरत पर ईमान का लाभ

इसलिए कि आख़िरत का भय भी तो मनुष्य को भयभीत और त्रस्त

बना कर मा'रिफ़त के सच्चे झरने की ओर खींच कर ले आता है और सच्ची मा'रिफ़त वास्तविक भय और ख़ुदा से डर के अभाव में प्राप्त नहीं हो सकती। अत: स्मरण रखना चाहिए कि आख़िरत के संबंध में भ्रमों का उत्पन्न होना ईमान को ख़तरे में डाल देता है और शुभ अन्त में विघ्न पड़ जाता है। संसार में जितने नेक, बुज़ुर्ग और सदात्मा लोग हुए हैं जो रात को उठकर उपासना हेतु खड़े होने और सज्दे में ही सवेरा कर देते थे क्या तुम सोच सकते हो कि वे बहुत अधिक शारीरिक शक्तियाँ रखते थे और बड़े शक्तिशाली, महाकाय पहलवान थे? नहीं, स्मरण रखो और भली-भांति स्मरण रखो कि शारीरिक शक्ति और ऊर्जा से वे कार्य कदापि नहीं हो सकते जो आध्यात्मिक शक्ति और ताक़त कर सकती है। आपने अधिकांश मनुष्य देखे होंगे जो दिन में तीन या चार बार खाते हैं परन्तु उसका परिणाम क्या होता है प्रात:काल तक ख़र्राटे मारते रहते हैं और उन पर नींद का प्रभुत्व रहता है यहाँ तक कि नींद और आलस्य से बिल्कुल पारजित हो जाते हैं कि उन्हें इशा की नमाज़ भी दूभर और बहुत बड़ी कठिनाई मालूम होती है कहां यह कि वे तहज्जुद (रात के अन्तिम भाग में अदा की जाने वाली ऐच्छिक उपासना) अदा करने वाले हों।

सहाबा (रज़ि.) की जीवन पद्धति का नक़्शा क़ुर्आन करीम में

देखो - आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान् सहाबा रिज़्वानुल्लाह अलैहिम क्या भोग-विलाम और खान-पान के रसिया थे जो काफ़िरों पर विजयी थे? नहीं यह बात तो नहीं। पहली पुस्तकों में भी उन के सन्दर्भ में आया है कि वे रातों को उठने वाले और हमेशा उपवास रखने वाले होंगे। उनकी रातें परमेश्वर की स्तुति और स्मरण में व्यतीत होती थीं और उनका जीवन कैसे गुज़रता था? क़ुर्आन करीम की निम्नलिखित आयत उनकी जीवन-शैली का पूर्ण चित्रण करती है -

وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ (अन्फ़ाल :61)
और يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا قف (आले इमरान :201)

और सरहद पर अपने घोड़े बांधे रखो कि ख़ुदा के शत्रु और तुम्हारे शत्रु तुम्हारी इस तैयारी और योग्यता से भयभीत रहें। हे मोमिनो! धैर्य, धीरता और सरहदों को दृढ़ करो।

रिबात के अर्थ

'रिबात' उन घोड़ों को कहते हैं जो शत्रु की सरहद पर बांधे जाते हैं। अल्लाह तआला सहाबा रज़ि. को शत्रुओं का सामना करने के लिए तैयार रहने का आदेश देता है और इस 'रिबात' के शब्द से उनका ध्यान पूर्ण और वास्तविक तैयारी की ओर आकर्षित कराता है। उनके सुपुर्द दो कार्य थे। प्रथम प्रत्यक्ष शत्रुओं का मुकाबला, द्वितीय आध्यात्मिक मुकाबला। रिबात शब्दकोष में मनोवृत्ति और मानव-हृदय को भी कहते हैं और यह एक सूक्ष्म बात है कि घोड़े वे ही काम करते हैं जो प्रशिक्षण प्राप्त और प्रशिक्षित हों। आजकल घोड़ों की शिक्षा और प्रशिक्षण का इसी पद्धति पर ध्यान रखा जाता है तथा उन्हें इसी प्रकार सिधाया और सिखाया जाता है जिस प्रकार बच्चों को स्कूलों में विशेष सतर्कता और प्रबन्ध के अन्तर्गत शिक्षा दी जाती है। यदि उन्हें शिक्षा न दी जाए और उन्हें प्रशिक्षण न दिया जाए तो वे सरासर बेकार हों तथा लाभप्रद होने के स्थान पर भयंकर और हानिप्रद सिद्ध हों।

यह संकेत इस बात की ओर भी है कि मनुष्यों के हृदय अर्थात् 'रिबात' भी शिक्षित होने चाहिए तथा उन की शक्तियां और ताकतें ऐसी होनी चाहिएं जो अल्लाह तआला की सीमाओं के नीचे-नीचे चलें, क्योंकि यदि ऐसा न हो तो वे उस युद्ध और लड़ाई का काम न दे सकेंगे जो मनुष्य और उसके भयंकर शत्रु अर्थात् शैतान के मध्य आन्तरिक तौर पर प्रतिपल और प्रतिक्षण जारी है,

जैसा कि लड़ाई और युद्ध के मैदान में शारीरिक शक्तियों के अतिरिक्त शिक्षित होना भी आवश्यक है। इसी प्रकार इस आन्तरिक लड़ाई और जिहाद के लिए मनुष्यों का प्रशिक्षण और उचित शिक्षा भी अनिवार्य है और यदि ऐसा न हो तो इसका परिणाम यह होगा कि शैतान उन पर विजय प्राप्त कर लेगा और वह बहुत बुरी तरह अपमानित और बदनाम होगा। उदाहरणतया यदि एक व्यक्ति तोप और तुपक युद्धास्त्र बन्दूक इत्यादि तो रखता हो, परन्तु उसके प्रयोग और चलाने से अज्ञान मात्र हो तो वह शत्रु के मुकाबले में कभी दायित्व को पूर्ण नहीं कर सकता तथा तीर और युद्ध का सामान भी एक व्यक्ति रखता हो और उन्हें प्रयोग करना भी जानता हो, परन्तु उसके बाज़ू में शक्ति न हो तो भी वह सफल नहीं हो सकता। इस से ज्ञात हुआ कि केवल प्रयोग करने का ढंग सीख लेना भी सफल और लाभप्रद नहीं हो सकता जब तक कि व्यायाम और अभ्यास करके बाज़ू में ऊर्जा और शक्ति पैदा न हो जाए। अब यदि एक व्यक्ति जो तलवार चलना तो जानता है परन्तु व्यायाम और अभ्यास नहीं रखता तो युद्ध के मैदान में जाकर ज्यों ही तीन-चार बार तलवार को चलाएगा और दो एक बार मारेगा उसके बाज़ू बेकार हो जाएंगे और वह थक कर बिल्कुल ही निश्चल हो जाएगा और अन्ततः स्वयं ही शत्रु का शिकार हो जाएगा।

कर्मों की आवश्यकता

अतः समझ लो और भली-भांति समझ लो कि केवल ज्ञान और कला और मात्र शिक्षा भी कुछ काम नहीं दे सकती जब तक कि कर्म, पराक्रम और परिश्रम न हो। देखो सरकार भी सेनाओं को इसी विचार से बेकार नहीं रहने देती। शान्ति और आराम से दिनों में भी कृत्रिम युद्ध जारी करके सेनाओं को बेकार नहीं बैठने देती और सामान्यतौर पर चांदमारी और परेड इत्यादि तो प्रतिदिन होती ही रहती है।

जैसा अभी मैंने वर्णन किया कि युद्ध के मैदान में सफल होने के लिए

जहां एक ओर अस्त्रों के प्रयोग करने के ढंग इत्यादि की शिक्षा और जानकारी की आवश्यकता है वहां दूसरी ओर व्यायाम और प्रयोग के अवसर की भी अत्यधिक आवश्यकता है एवं युद्ध और प्रहार में शिक्षित घोड़े चाहिए अर्थात् ऐसे घोड़े जो तोपों और बन्दूकों की आवाज़ से न डरें तथा धूल-मिट्टी से तितर-बितर होकर पीछे न हटें अपितु आगे ही बढ़ें, इसी प्रकार लोग पूर्ण व्यायाम और पूर्ण परिश्रम तथा सच्ची शिक्षा के अभाव में अल्लाह के शत्रुओं के मुकाबले पर युद्ध के मैदान में सफल नहीं हो सकते।

अरबी भाषा की विशेषता

अरबी शब्दकोष भी अद्‌भुत वस्तु है। 'रिबात' का शब्द जो कथित आयत में आया है जहां सांसारिक युद्ध, लड़ाई और युद्ध-कला की फ़्लासफ़ी पर आधारित है, वहां आध्यात्मिक तौर पर आन्तरिक युद्ध और नफ़्स के पराक्रम और विशेषता को भी प्रकट करता है। यह एक अद्‌भुत सिलसिला है, इसलिए अरबी भाषा समस्त भाषाओं की जननी है। इससे वे कार्य सिद्ध होते हैं जो अन्य भाषा से सम्भव नहीं तथा यदि ईश्वर ने चाहा तो ये आध्यात्म ज्ञान नितान्त स्पष्टता और उत्तमता से पुस्तक 'मिननुर्रहमान' के द्वारा प्रकट होंगे जो मैंने आजकल अरबी भाषा की श्रेष्ठता तथा उसे समस्त भाषाओं की जननी सिद्ध करने के बारे में आरम्भ की है, ज्ञात हो जाएगा कि यूरोपियन लोगों के अन्वेषण सरासर बेकार और अपूर्ण हैं और उन्हें भी ज्ञान हो जाएगा कि भाषाओं की लुप्त हो चुकी जननी भी इस युग में जहां अन्य लुप्त हो चुकीं धार्मिक सच्चाइयां मिल गई हैं मिल गई है तथा वह अरबी ही है। अतः अरबी भाषा का शब्दकोष शारीरिक क्रम में आध्यात्मिक क्रम भी दिखाता जाता है। इसलिए कि शारीरिक मामले और बातें बाह्य तौर पर हमारे अवलोकन में आती हैं और हम उन की वास्तविकता नितान्त सरलतापूर्वक समझ सकते हैं। अतः उन पर कल्पना करते हुए आध्यात्मिक क्रम और फ़्लासफ़ी का समझ में

आना कठिन नहीं होता। यह अल्लाह तआला की विशेष कृपा और बरकत है जो उसने इस अंधकार और पथ-भ्रष्टता के युग में मा'रिफ़त का प्रकाश आकाश से उतारा ताकि भूले-भटकों का मार्ग-दर्शन करे तथा ऐसा तरीका और ढंग प्रकट किया जो अब तक रहस्य के तौर पर था, वह क्या? यही अरबी शब्दकोष की फ़्लास्फ़ी और वास्तविकता से सिद्ध करना। मुबारक हैं वे लोग जो अल्लाह तआला की कृपा के महत्व को समझते और उसे लेने को तैयार हो जाते हैं।

इस्लाम को लड़ाई की दो शक्तियां दी गई थीं

अब देखो यही 'रिबात' का शब्द जो घोड़ों पर बोला जाता है जो सरहद पर शत्रुओं से सुरक्षा के लिए बांधे जाते हैं। इसी प्रकार यह शब्द उन लोगों पर भी बोला जाता है जो इस युद्ध की तैयारी के लिए प्रशिक्षित हों जो मनुष्य के अन्दर ही शैतान से हर समय जारी है। यह बिल्कुल उचित बात है कि इस्लाम को लड़ाई की दो शक्तियां दी गई थीं। प्रथम शक्ति वह थी जिसका प्रयोग पहले दौर में बतौर संरक्षण और प्रतिशोध के हुआ अर्थात् अरब के द्वैतवादियों ने जब यातनाएं दीं और कष्ट पहुँचाए तो एक हज़ार ने एक लाख काफ़िरों का सामना करके वीरता का जौहर दिखाया और प्रत्येक परीक्षा में उस पवित्र शक्ति और प्रताप का प्रमाण प्रस्तुत किया। वह युग गुज़र गया तथा 'रिबात' के शब्द में जो प्रत्यक्ष युद्ध शक्ति और युद्धकला की फ़्लास्फ़ी गुप्त थी वह प्रकट हो गई।

इस युग में आन्तरिक लड़ाई के नमूने दिखाना अभीष्ट हैं

अब इस युग में जिस में हम हैं प्रत्यक्ष लड़ाई की बिल्कुल आवश्यकता नहीं अपितु अन्तिम दिनों में आन्तरिक लड़ाई के उदाहरण दिखाने उद्देश्य थे और आध्यात्मिक मुकाबला दृष्टिगत था, क्योंकि उस समय धर्म से आन्तरिक

विमुखता और नास्तिकता के प्रचार हेतु बड़े-बड़े उपकरण और अस्त्रों का निर्माण किया गया इसलिए उनका मुक़ाबला भी उसी प्रकार के अस्त्रों से आवश्यक है, क्योंकि आजकल शान्ति और अमन का युग है और हमें हर प्रकार की समृद्धि और अमन प्राप्त है, प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्रतापूर्वक अपने धर्म का प्रचार, प्रसार और धर्मादेशों का पालन कर सकता है, फिर इस्लाम जो शान्ति का सच्चा समर्थक है अपितु वास्तव में अमन, मैत्री और शान्ति का प्रचारक ही इस्लाम है, इस शान्ति और स्वतंत्रता के युग में उस पहले नमूने को दिखाना पसन्द कर सकता था ? आजकल वही दूसरा नमूना अर्थात् आध्यात्मिक परिश्रम की आवश्यकता है क्योंकि -

که حلوه چو یکبار خوردند وبس

वर्तमान युग में जिहाद

एक और बात भी है कि उस पहले नमूने के दिखाने में एक अन्य बात भी दृष्टिगत थी अर्थात् उस समय वीरता का प्रकट करना भी उद्देश्य था जो उस समय के संसार में सर्वाधिक प्रशंसित और प्रिय विशेषता समझी जाती थी और इस समय तो लड़ाई एक कला बन गई है कि दूर बैठे हुए भी एक व्यक्ति तोप और बन्दूक चला सकता है, परन्तु उन दिनों में सच्चा बहादुर वह था जो तलवारों के सामने सीना तानकर खड़ा होता, परन्तु आजकल की युद्धकला तो कायरों के दोषों पर परदा डालने वाली है, अब वीरता का कार्य नहीं, अपितु जो व्यक्ति युद्ध के नवीन उपकरण और नवीन तोपें इत्यादि रखता और चला सकता है वह सफल हो सकता है। इस लड़ाई का उद्देश्य और आशय मोमिनों की वीरता के गुप्त तत्व का प्रकटन था और ख़ुदा तआला ने जैसा चाहा उसे भली-भांति संसार पर प्रकट किया अब उसकी आवश्यकता नहीं रही इसलिए कि अब युद्ध ने कला और घात और धोखे का रूप धारण कर लिया है और

युद्ध के नवीन उपकरण और जटिल कलाओं ने इस मूल्यवान गर्व योग्य जोहर को मिट्टी में मिला दिया है। इस्लाम के प्रारम्भ में रक्षात्मक लड़ाइयों और शारीरिक युद्धों की इसलिए भी आवश्यकता पड़ती थी कि उन दिनों इस्लाम को ओर दा'वत देने वाले का उत्तर सबूतों और तर्कों द्वारा नहीं अपितु तलवार से दिया जाता था, इसलिए विवश होकर प्रत्युत्तर में तलवार से काम लेना पड़ा परन्तु अब तलवार से उत्तर नहीं दिया जाता अपितु क़लम और सबूतों से इस्लाम पर आलोचनाएं की जाती हैं। यही कारण है कि इस युग में ख़ुदा तआला ने चाहा है कि तलवार का काम क़लम से लिया जाए और लेख द्वारा मुक़ाबला करके विरोधियों को पराजित किया जाए। इसलिए अब किसी के लिए उचित नहीं कि क़लम का उत्तर तलवार से देने का प्रयास करे -

گر حفظ مراتب نکنی زندیقی

इस समय क़लम की आवश्यकता है

निश्चय समझ लो कि इस समय तलवार की नहीं अपितु क़लम की आवश्यकता है। हमारे विरोधियों ने इस्लाम पर जो सन्देह प्रकट किए हैं तथा भिन्न-भिन्न विज्ञानों और पाखंड़ों के अनुसार अल्लाह तआला के सच्चे धर्म पर आक्रमण करना चाहा है उसने मुझे सतर्क किया है कि क़लम रूपी अस्त्र धारण कर इस विज्ञान और शैक्षाणिक उन्नति के युद्ध के मैदान में कूद पड़ूँ तथा इस्लाम की आध्यात्मिक वीरता और आन्तरिक शक्ति का चमत्कार भी प्रदर्शित करूँ। मैं कब इस मैदान के योग्य हो सकता था, यह तो केवल अल्लाह तआला की कृपा है तथा उसका असीम उपकार है कि वह चाहता है कि मुझ जैसे असहाय व्यक्ति के द्वारा उसके धर्म की प्रतिष्ठा प्रकट हो। मैंने एक समय उन आरोपों और प्रहारों की गणना की थी जो इस्लाम पर हमारे विरोधियों ने किए हैं तो उनकी संख्या मेरे विचार और अनुमान में तीन हज़ार हुई थी और मैं समझता हूँ कि अब तो संख्या और भी अधिक हो गई होगी।

कोई यह न समझ ले कि इस्लाम का आधार ऐसी कमज़ोर बातों पर है कि उस पर तीन हज़ार आरोप लग सकते हैं, नहीं ऐसा कदापि नहीं है। यह आरोप अदूरदर्शियों और मूर्खों की दृष्टि में आरोप हैं, परन्तु मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि मैंने जहां उन आरोपों की गणना की वहां यह भी विचार किया है कि इन आरोपों की तह में वास्तव में अत्यन्त दुर्लभ सच्चाइयां विद्यमान हैं जो विवेकहीनता के कारण आरोपकों को दिखाई नहीं दीं और वास्तव में यह ख़ुदा तआला की नीति है कि जहां नेत्रहीन आरोपक आकर अटका है वहीं सच्चाइयों और आध्यात्म ज्ञानों का ख़ज़ाना रखा है।

ख़ुदा ने मुझे अवतरित किया है कि मैं क़ुर्आन करीम के गुप्त ख़ज़ानों को संसार पर प्रकट करूँ

और ख़ुदा तआला ने मुझे अवतरित किया है कि मैं उन गुप्त ख़ज़ानों को संसार पर प्रकट करूँ और दूषित आरोपों का कीचड़ जो उन आभामय रत्नों पर थोपा गया है उससे पवित्र और शुद्ध करूँ। ख़ुदा तआला का स्वाभिमान इस समय बड़े जोश में है कि क़ुर्आन करीम की प्रतिष्ठा को प्रत्येक दुष्ट शत्रु के आरोप रूपी धब्बे से पवित्र और पावन करे।

अत: ऐसी स्थिति में विरोधी हम पर क़लम (लेखनी) से प्रहार करना चाहते हैं और करते हैं। कितनी मूर्खता होगी कि हम उनसे लड़ मरने को तैयार हो जाएं। मैं तुम्हें स्पष्ट तौर पर बताता हूँ कि ऐसी स्थिति में यदि कोई इस्लाम का नाम लेकर उत्तर में लड़ाई-झगड़े का मार्ग धारण करे तो वह इस्लाम को बदनाम करने वाला होगा जबकि इस्लाम का कभी ऐसा आशय न था कि निरुद्देश्य और अनावश्यक तौर पर तलवार उठाई जाए। अब लड़ाइयों के उद्देश्य जैसा कि मैंने कहा है कला का रूप धारण करके धार्मिक नहीं रहे अपितु सांसारिक उद्देश्य उन का विषय हो गया है। अत: कितना अधिक अन्याय होगा कि आरोप करने वालों को उत्तर देने की बजाए तलवार दिखाई

जाए। अब युग के साथ-साथ लड़ाई की प्रकृति भी परिवर्तित हो गई है। इसलिए आवश्यकता है कि सर्वप्रथम अपने हृदय और मस्तिष्क से काम लें और हृदयों का शुद्धिकरण करें, ईमानदारी और संयम से ख़ुदा तआला से सहायता और सफलता चाहें, यह ख़ुदा का एक अटल नियम और दृढ़ सिद्धान्त है। यदि मुसलमान केवल तर्क-वितर्क और बातों से मुकाबले में सफलता और विजय पाना चाहें तो यह सम्भव नहीं। अल्लाह तआला निरर्थक बातों और शब्दों को नहीं चाहता वह तो वास्तविक संयम को चाहता है और सच्ची शुद्धता को पसन्द करता है, जैसा कि फ़रमाया -

اِنَّ اللّٰہَ مَعَ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِیْنَ ھُمْ مُّحْسِنُوْنَ (अन्नहल :129)

बुद्धि से भी काम लेना चाहिए

हमें बुद्धि से भी काम लेना चाहिए क्योंकि मनुष्य बुद्धि के कारण कष्ट दिया गया है कोई मनुष्य भी बुद्धि के विपरीत बातों को स्वीकार करने पर विवश नहीं हो सकता। शक्तियों की सहनशीलता और सामर्थ्य से अधिक किसी प्रकार का शरई (धार्मिक विधान संबंधी) कष्ट नहीं दिया गया لَا یُکَلِّفُ اللّٰہُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَھَا इस आयत से स्पष्ट होता है कि अल्लाह तआला के आदेश ऐसे नहीं कि जिनका पालन कोई कर ही न सके और न शरीअतें और आदेश ख़ुदा तआला ने संसार में इसलिए उतारे कि मनुष्य पर अपनी बड़ी सुगम और अलंकारिक भाषा तथा आविष्कारीय कानूनी शक्ति तथा पहेलियां सुनाने का गर्व प्रकट करे और यों पहले से ही अपने हृदय में ठान रखा था कि कहां बेहूदा कमज़ोर मनुष्य! और कहां उन आदेशों पर कार्यरत होना? ख़ुदा तआला इस से उच्चतर और पवित्र है कि ऐसा व्यर्थ कार्य करे। हां ईसाइयों की आस्था है कि संसार में कोई मनुष्य शरीअत का अनुसरण और ख़ुदा के आदेशों का पालन कर ही नहीं सकता। अनाड़ी इतना नहीं जानते कि फिर ख़ुदा को शरीअत भेजने की क्या आवश्यकता थी। उनके विचार

और आस्था में मानो अल्लाह तआला ने (हम ख़ुदा की शरण चाहते हैं) पूर्वकालीन नबियों पर शरीअत उतार कर एक व्यर्थ और बेहूदा कार्य किया, वास्तव में ख़ुदा की पवित्र हस्ती पर इस प्रकार के दोषारोपण की आवश्यकता ईसाइयों को उसी कफ़्फ़ारे की घड़ने के लिए पड़ी। मुझे विस्मय और आश्चर्य होता है कि उन लोगों ने अपने एक स्वयं निर्मित मामले की आधारशिला स्थापित करने के लिए इस बात की भी परवाह नहीं की कि ख़ुदा की हस्ती पर किस प्रकार का जघन्य आरोप आता है-

क़ुर्आनी शिक्षा का प्रत्येक आदेश सोद्देश्य और नीतिगत है

हाँ यह विशेषता क़ुरआन की शिक्षा में है कि उसका प्रत्येक आदेश सोद्देश्य और नीतिगत है और इसलिए अनेकों स्थानों पर ज़ोर देकर कहा गया है कि बुद्धि, विवेक, युक्ति, बुद्धिमत्ता और ईमान से काम लिया जाए और क़ुर्आन करीम तथा अन्य किताबों में परस्पर यही अन्तर है तथा किसी किताब ने अपनी शिक्षा को बुद्धि और विचार की बारीक और स्वच्छन्द आलोचना के समक्ष डालने का साहस ही नहीं किया अपितु ख़ामोश इंजील के चालाक और मक्कार समर्थकों ने इस विचार से कि इन्जील की शिक्षा बौद्धिक बल के सामने निष्प्राण मात्र है नितान्त चतुराई से अपनी आस्थाओं में इस बात का समावेश कर लिया कि तस्लीस (तीनः ख़ुदा मानना) और कफ़्फ़ारः ऐसे रहस्य हैं कि मानव बुद्धि उनकी तह तक नहीं पहुँच सकती विपरीत इसके कि क़ुर्आन करीम की यह शिक्षा है-

اِنَّ فِیۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ وَ اخۡتِلَافِ الَّیۡلِ وَ النَّہَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی

الۡاَلۡبَابِ الَّذِیۡنَ یَذۡکُرُوۡنَ اللّٰہَ

(आलेइमरान :191) अर्थात् आकाशों की बनावट और पृथ्वी की बनावट तथा रात और दिन का आगे-पीछे आना मनीषियों को उस अल्लाह का स्पष्ट

पता देते हैं जिसकी ओर इस्लाम धर्म निमंत्रण देता है। इस आयत में कितना स्पष्ट आदेश है कि मनीषी अपनी मनीषिता और मस्तिष्कों से भी काम लें।

इस्लाम का ख़ुदा

और ज्ञात रहे कि इस्लाम का ख़ुदा ऐसा गोरख धन्धा नहीं कि उसे बुद्धि पर पत्थर मार कर बलात स्वीकार कराया जाए और प्रकृति के ग्रन्थ में इसके लिए कोई भी सबूत न हो अपितु प्रकृति के विशाल पन्नों में इस के इतने लक्षण हैं जो स्पष्ट बताते हैं कि वह है। सृष्टि की एक-एक वस्तु उस प्रतीक और तख़्ते की तरह है जो हर सड़क और गली के प्रारम्भ में उस सड़क या मुहल्ले या शहर का नाम ज्ञात करने के लिए लगाया जाता है ख़ुदा की ओर मार्ग-दर्शन करती है और इस मौजूद हस्ती का पता ही नहीं अपितु सन्तुष्ट कर देने वाला सबूत देती है, पृथ्वी और आकाश की साक्ष्यें किसी कृत्रिम और बनावटी ख़ुदा के अस्तित्व का सबूत नहीं देतीं अपितु उस ख़ुदा اَحَدٌ اَللّٰهُ الصَّمَدُ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ की हस्ती को दिखाती हैं जो जीवित क़ायम ख़ुदा है जिसे इस्लाम प्रस्तुत करता है। अतः पादरी फन्डर जिसने सर्वप्रथम हिन्दुस्तान में आकर धार्मिक शास्त्रार्थों में क़दम रखा और इस्लाम पर आलोचनाएं कीं। अपनी पुस्तक 'मीज़ानुलहक़' में स्वयं ही प्रश्न उठाते हुए लिखता है कि यदि कोई ऐसा द्वीप हो जहां तस्लीस (तीन ख़ुदाओं की विचारधारा) की शिक्षा न दी गई हो तो क्या वहां के निवासियों पर आख़िरत (परलोक) में तस्लीस की आस्था के आधार पर पकड़ होगी?

एकेश्वरवाद का रूप प्रकृति की प्रत्येक वस्तु में अंकित है

बात वास्तव में यह है कि मनुष्य के स्वभाव में ही اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى ۛ चित्रित किया गया है और तथा समस्त वस्तुओं को तस्लीस (तीन ख़ुदाओं को मानना) से कोई अनुकूलता नहीं। पानी की एक बूंद देखो तो वह गोल

दिखाई देती है तिकोनी दृष्टिगोचर नहीं होती इससे भी स्पष्ट तौर पर यही विदित होता है कि एकेश्वरवाद का नक़्श प्रकृति की प्रत्येक वस्तु में रखा हुआ है भली भांति देखो कि पानी की बूंद गोल होती है और गोलाकार आकृति में तौहीद (एकेश्वरवाद) होती है, इसलिए कि वह तरफ को नहीं चाहती और त्रिभुजाकार तरफ को चाहती है। अतः अग्नि को देखो आकृति भी है और वह भी अपने अन्दर गोलाई रखती है, उस से भी एकेश्ववाद का प्रकाश चमकता है। पृथ्वी को लो और अंग्रेज़ों से ही पूछो कि उसकी आकृति कैसी है? कहेंगे गोल? अतः भौतिकी अन्वेषण जहां तक होते चले जाएंगे वहां एकेश्वरवाद ही एकेश्वरवाद निकलता जाएगा। अल्लाह तआला इस आयत اِنَّ فِیۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ (आलेइमरान : 191) में बताता है कि जिस ख़ुदा को क़ुर्आन करीम प्रस्तुत करता है उसके लिए पृथ्वी और आकाश सबूतों से भरे पड़े हैं।

मुझे एक दार्शनिक का कथन बहुत ही रुचिकर लगता है कि यदि समस्त पुस्तकें दरिया में डुबो दी जाएं तो फिर भी इस्लाम का ख़ुदा शेष रह जाएगा, इसलिए कि वह त्रिभुज और कहानी नहीं। वास्तव में ठोस बात वही है जिस की सच्चाई किसी विशेष बात पर निर्भर न हो कि यदि वह न हो तो उसका पता ही नहीं। कथा और कहानी न हृदय पर अंकित होती है न प्रकृति के ग्रन्थ में, जब तक किसी पंडित, पांडे या पादरी ने स्मरण रखा, उनका कोई अस्तित्व मान्य रहा तत्पश्चात् ग़लत शब्द की भांति मिट गया।

प्रकृति का नियम क़ुर्आनी शिक्षा की गवाही दे रहा है

अल्लाह तआला फ़रमाता है –

اِنَّهٗ لَقُرۡاٰنٌ کَرِیۡمٌ فِیۡ کِتٰبٍ مَّکۡنُوۡنٍ لَّا یَمَسُّهٗۤ اِلَّا الۡمُطَهَّرُوۡنَ

अपितु यह सारा प्रकृति ग्रन्थ प्रकृति के मज़बूत सन्दूक में सुरक्षित है। क्या मतलब – यह कि क़ुर्आन करीम एक गुप्त किताब में है इस का अस्तित्व

काग़ज़ों तक ही सीमित नहीं अपितु वह एक गुप्त किताब में है जिसे प्रकृति का ग्रन्थ (पुस्तक) कहते हैं, इसकी शिक्षा और इस की बरकतें कथा या कहानी नहीं जो मिट जाएं।

इल्हाम (ईशवाणी) **की आवश्यकता**

प्रत्येक व्यक्ति चूंकि बुद्धि से विश्वास की श्रेणियों पर नहीं पहुँच सकता इसलिए इल्हाम की आवश्यकता होती है जो अंधकार में बुद्धि के लिए एक प्रकाशमान दीपक बन कर सहायता करता है तथा यही कारण है कि महान् दार्शनिक भी मात्र बुद्धि पर भरोसा करके वास्तविक ख़ुदा को न पा सके। अतः अफ़्लातून जैसा दार्शनिक भी मरते समय कहने लगा कि मैं डरता हूं कि एक मूर्ति पर मेरे लिए एक मुर्गा ज़िब्ह करो, इस से बढ़कर और क्या बात होगी। अफ़्लातून की फ़्लास्फ़ी, उसका विवेक और बुद्धिमत्ता उसे वह सच्ची सन्तुष्टि और सन्तोष नहीं दे सके जो मोमिनों को प्राप्त है। यह भली भांति स्मरण रखो कि इल्हाम की आवश्यकता हार्दिक सन्तोष और हार्दिक दृढ़ता के लिए नितान्त आवश्यक है। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि सर्वप्रथम बुद्धि से काम लो और यह स्मरण रखो कि जो बुद्धि से काम लेगा, इस्लाम का ख़ुदा उसे अवश्य दिखाई दे जाएगा, क्योंकि वृक्षों के पत्ते-पत्ते पर और आकाश के पिण्डों पर उस का नाम बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ है, परन्तु बिल्कुल बुद्धि ही के अधीन न बन जाओ ताकि ख़ुदा के इल्हाम के महत्व को न खो बैठो, जिसके अभाव में न वास्तविक सन्तोष और न श्रेष्ठ शिष्टाचार प्राप्त हो सकते हैं। ब्रह्म समाजी भी शान्ति और मुक्ति का सच्चा प्रकाश प्राप्त नहीं कर सकते, इसलिए कि वे इल्हाम की आवश्यकता के मानने वाले नहीं। ऐसे लोग जो बुद्धि के दास होकर इल्हाम को व्यर्थ ठहराते हैं। मैं सरासर उचित कहता हूँ कि बुद्धि से भी काम नहीं लेते। क़ुर्आन करीम में उन लोगों को जो बुद्धि से काम लेते हैं 'ऊलुलअल्बाब' फ़रमाया है फिर इसके आगे फ़रमाया

है - اَلَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِهِمْ (आले इमरान :192) इस आयत में अल्लाह तआला ने दूसरा पहलू वर्णन किया है कि اُوْلُوا الْاَلْبَاب और सद्बुद्धि भी वही रखते हैं जो उठते-बैठते ख़ुदा का स्मरण करते हैं। यह नहीं सोचना चाहिए कि बुद्धि और विवेक ऐसी वस्तुएं हैं जो यों ही प्राप्त हो सकती हैं। नहीं।

सच्ची प्रतिभा और बुद्धि अल्लाह तआला की ओर चित्ताकर्षण किए बिना प्राप्त ही नहीं हो सकती

अपितु सच्ची प्रतिभा और सच्ची बुद्धि अल्लाह की ओर झुकने के अभाव में प्राप्त ही नहीं हो सकती इसीलिए तो कहा गया है कि मोमिन की प्रतिभा से डरो क्योंकि वह ख़ुदाई प्रकाश से देखता है उचित प्रतिभा और वास्तविक बुद्धि जैसा मैंने अभी कहा कभी प्राप्त नहीं हो सकते जब तक संयम प्राप्त न हो।

यदि तुम सफल होना चाहते हो तो बुद्धि से काम लो, चिन्ता करो, विचार करो, सोच-विचार के लिए क़ुर्आन करीम में बारम्बार बल दिया गया है गुप्त किताब और क़ुर्आन करीम पर विचार करो तथा पवित्र स्वभाव हो जाओ। जब तुम्हारे हृदय पवित्र हो जाएंगे और इधर सद्बुद्धि से काम लोगे और संयम के मार्गों पर अग्रसर होगे तो इन दोनों के मिलने से वह स्थिति पैदा हो जाएगी कि رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आलेइमरान :192) तुम्हारे हृदय से निकलेगा। उस समय समझ में आ जाएगा कि यह सृष्टि व्यर्थ नहीं अपितु वास्तविक स्रष्टा की सच्चाई और अस्तित्व को सिद्ध करती है ताकि नाना प्रकार के ज्ञान और कलाएं जो धर्म को सहयोग देते हैं प्रकट हों।

ख़ुदा ने मुसलमानों को बुद्धि के साथ इल्हाम का प्रकाश और ज्योति भी प्रदान की है

ख़ुदा तआला ने मुसलमानों को केवल बुद्धि-दान से ही सम्मानित नहीं

किया अपितु इल्हाम का प्रकाश और ज्योति भी उस के साथ प्रदान की है उन्हें उन मार्गों पर नहीं चलना चाहिए जिन पर नीरस तर्कशास्त्री और दार्शनिक चलाना चाहते हैं, ऐसे लोगों पर भाषा-शक्ति का प्रभुत्व होता है और आध्यात्मिक शक्ति बहुत कमज़ोर होती हैं। देखो क़ुर्आन करीम में ख़ुदा तआला अपने बन्दों की प्रशंसा में أُولِي الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ फ़रमाता है कहीं أُولِي الْأَلْسِنَه (ऊलिल अलसिना) नहीं फ़रमाया। इससे ज्ञात हुआ कि ख़ुदा तआला को वही लोग पसन्द हैं जो दृष्टि और प्रतिभा से ख़ुदा के कार्य और कलाम को देखते हैं और फिर उस का पालन करते हैं। ये समस्त बातें हृदय की पवित्रता और आन्तरिक शक्तियों के शुद्धीकरण के बिना कदापि प्राप्त नहीं हो सकतीं।

दोनों लोकों की सफलता प्राप्त करने का उपाय

यदि तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों लोकों की भलाई प्राप्त हो और लोगों के हृदयों पर विजय प्राप्त करो तो पवित्रता धारण करो, बुद्धि से काम लो, ख़ुदा के कलाम के निर्देशन पर चलो, स्वयं को संभालो, और दूसरों को अपने श्रेष्ठ शिष्टाचारों का नमूना दिखाओ तब अवश्य सफल हो जाओगे। किसी ने क्या ख़ूब कहा है -

سُخن کز دل بروں آید نشیند لاجرم بر دل

अत: पहले हृदय पैदा करो यदि हृदयों को प्रभावित करना चाहते हो तो व्यवहारिक शक्ति उत्पन्न करो क्योंकि कर्म के बिना कथन-शक्ति और मानव-शक्ति कुछ लाभ नहीं पहुँचा सकती। मौखिक रूप से तर्क-वितर्क करने वाले तो लाखों हैं, बहुत से मौलवी और विद्वान कहला कर मंच पर चढ़कर स्वयं को आंहज़रत (स.अ.व.) का नायब और नबियों का उत्तराधिकारी ठहरा कर धर्मोपदेश देते फिरते हैं। कहते हैं कि अहंकार, अभिमान, और दुराचारों से

बचो, परन्तु उनके अपने कर्म और कृत्य जो वे स्वयं करते हैं उन का अनुमान इस बात से लगा लो कि उन बातों का प्रभाव तुम्हारे हृदय पर कहां तक होता है।

कहने से पूर्व स्वयं आदर्श प्रस्तुत करो

यदि इस प्रकार के लोग शक्ति भी रखते और कहने से पूर्व स्वयं करते तो क़ुर्आन करीम में لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ (अस्सफ़्फ़ :3)* कहने की क्या आवश्यकता थी? यह आयत ही बताती है कि संसार में कह कर स्वयं न करने वाले भी मौजूद थे और हैं और होंगे।

हमारे नबी करीम स.अ.व. के कथन और कर्म में समानता थी

तुम मेरी बात को सुनो और ख़ूब स्मरण कर लो कि यदि मनुष्य का वार्तालाप सच्चे हृदय से न हो तथा उस में कर्म शक्ति न हो तो वह प्रभावकारी नहीं होता। इसी से तो हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की महान् सच्चाई ज्ञात होती है क्योंकि जो सफलता और हृदयों को प्रभावित करने वाली शक्ति आप के भाग में आई उसका कोई उदाहरण मानव इतिहास में उपलब्ध नहीं। यह सब इसलिए हुआ कि आप (स.अ.व.) के कथन और कर्म में पूर्ण समानता थी।

मेरी इन बातों पर कार्यरत हो तथा बुद्धि और ख़ुदा की वाणी (क़ुर्आन) का अनुसरण करो

मेरी ये बातें इसलिए हैं ताकि तुम जो मेरे साथ संबंध रखते हो और उस संबंध के कारण मेरे अंग हो गए हो इन बातों पर कार्यरत हो तथा बुद्धि और

* तुम वे बात क्यों करते हो जो तुम स्वयं नहीं करते। अनुवादक

ख़ुदा की वाणी से काम लो ताकि सच्ची मा'रिफ़त और विश्वास का प्रकाश तुम्हारे अन्दर उत्पन्न हो और तुम अन्य लोगों को अंधकार से प्रकाश की ओर लाने का माध्यम बनो इसलिए कि आजकल आरोपों का आधार भौतिकी, चिकित्सा और खगोल शास्त्र की समस्याओं के कारण है। अत: अनिवार्य हुआ कि इन विद्याओं की वास्तविकता और विवरण से अवगत हों ताकि उत्तर देने से पूर्व आरोप की वास्तविकता हम पर प्रकट हो जाए।

आधुनिक विद्याओं की वास्तविकता और विवरण की जानकारी प्राप्त करो

मैं उन मौलवियों को ग़लती पर समझता हूँ जो आधुनिक विद्याओं की प्राप्ति के विरोधी हैं वे वास्तव में अपनी ग़लती और कमी को छुपाने के लिए ऐसा करते हैं। उन के मस्तिष्क में यह बात समाई हुई है कि आधुनिक विद्याओं के अन्वेषण इस्लाम से बदगुमान और पथ-भ्रष्ट कर देते हैं और वे यह माने बैठे हैं कि और जैसे बुद्धि और विज्ञान इस्लाम से बिल्कुल विपरीत वस्तुएं हैं। चूंकि स्वयं दर्शन शास्त्र के दोषों को प्रकट करने की शक्ति नहीं रखते इसलिए अपने इस दोष को गुप्त रखने के लिए यह बात बनाते हैं कि आधुनिक विद्याओं का पढ़ना ही वैध नहीं। उनकी आत्मा दर्शनशास्त्र से कांपती है और नवीन अन्वेषणों के समाने नतमस्तक होती है।

सच्चा दर्शन क़ुर्आन में है

परन्तु वह सच्चा दर्शन उन्हें प्राप्त नहीं हुआ जो ख़ुदा के इल्हाम से उत्पन्न होता है जो क़ुर्आन करीम में कूट-कूट कर भरा हुआ है वह उन्हें और केवल उन्हें ही दिया जाता है जो नितान्त विनम्रता और नास्ति से स्वयं को अल्लाह तआला के द्वार पर फेंक देते हैं, जिनके हृदय और मस्तिष्क से अहंकारपूर्ण

विचारों की दुर्गन्ध निकल जाती है और जो अपने दोषों को स्वीकार करते हुए गिड़गिड़ाकर सच्ची बन्दगी का इक़रार करते हैं।

आधुनिक विद्याओं को इस्लाम के अधीन करना चाहिए

अत: आवश्यकता है कि आजकल धार्मिक सेवा और ख़ुदा के नाम को बुलन्द करने के उद्देश्य से आधुनिक विद्याएं प्राप्त करो तथा बड़े प्रयास और परिश्रम से प्राप्त, करो, परन्तु मुझे यह भी अनुभव है जो बतौर चेतावनी मैं वर्णन कर देना चाहता हूँ कि जो लोग एक पक्षीय तौर पर इन विद्याओं में पड़ गए तथा ऐसे मुग्ध और तन्मय हुए कि किसी दानशील और ख़ुदा वालों की संगत का अवसर न मिला और वे स्वयं अपने अन्दर ख़ुदाई प्रकाश न रखते थे वे सामान्यतया ठोकर खा गए तथा इस्लाम से दूर जा पड़े और बाजाए इसके कि वे उन विद्याओं को इस्लाम के अधीन करते उल्टा इस्लाम को विद्याओं के अधीन करने की व्यर्थ प्रयास करके अपने विचार में धार्मिक और जातिगत सेवाओं के अभिभावक बन गए, परन्तु स्मरण रखो यह कार्य वही कर सकता है अर्थात् धार्मिक सेवा वही कर सकता है जो अपने अन्दर आकाशीय प्रकाश रखता हो।

आधुनिक विद्याओं का एक पक्षीय आंकलन तथा उस शिक्षा में लीन होने का दुष्परिणाम

बात यह है कि इन विद्याओं का शिक्षा पादरियत और दर्शन के रूप में दी जाती है जिसका परिणाम यह होता है कि इन विद्याओं पर आसक्त कुछ दिन तो सद्‌भावना के कारण जो उसे स्वाभाविक तौर पर प्राप्त होती है इस्लामी रीति-रिवाज़ों का पाबन्द रहता है परन्तु ज्यों-ज्यों उधर क़दम बढ़ाता चला जाता है इस्लाम को दूर छोड़ता जाता है और अन्तत: उन परम्पराओं की पाबन्दी से बिल्कुल ही रह जाता है तथा वास्तविकता से कुछ संबंध

नहीं रहता। यह परिणाम पैदा होता है और हुआ है। विद्याओं के एक पक्षीय अन्वेषणों और शिक्षा में संलग्न होने का बहुत से लोग क़ौमी नेता कहला कर भी इस भेद को नहीं समझ सके कि आधुनिक विद्याओं की प्राप्ति तब ही लाभप्रद हो सकती है जब-जब मात्र धार्मिक सेवा की नीयत से हो तथा और किसी वदान्य और आकाशीय बुद्धि रखने वाले ख़ुदा वाले मनुष्य की संगत से लाभ उठाया जाए।

मेरा ईमान यही कहता है कि इस नास्तिकता रूपी नेचरियत के प्रसार का यही कारण है कि नास्तिकता के विष से भरे हुए प्रहार भौतिक विज्ञान, दर्शनशास्त्र या खगोल वेत्ताओं की ओर से इस्लाम पर होते हैं उनका मुकाबला करने के लिए या उनका उत्तर देने के लिए इस्लाम और आकाशीय प्रकाश को असहाय समझ कर बौद्धिक ढ़कोसलों और काल्पनिक सबूतों को काम में लाया जाता है जिस का परिणाम यह होता है कि क़ुर्आन करीम के ऐसे विचित्र उद्देश्यों से कहीं दूर जा पड़ते हैं और नास्तिकता का एक गुप्त पर्दा अपने हृदय पर डाल लेते हैं जो एक समय पर यदि परमेश्वर अपनी कृपा न करे तो नास्तिकता का लिबास पहन लेता है और हृदय को वही रूप देता है जिस से वह नष्ट हो जाता है। आधुनिक युग के शिक्षित वर्ग पर एक अन्य बड़ी आपदा आ पड़ती है वह यह है कि उनके धार्मिक विद्याओं का बिल्कुल ज्ञान नहीं होता, फिर जब वे किसी खगोल वेत्ता या दार्शनिक के आरोपों का अध्ययन करते हैं तो इस्लाम के सन्दर्भ में सन्देह और शंकाएं उत्पन्न हो जाती हैं तब वे ईसाई या नास्तिक बन जाते हैं। ऐसी स्थिति में उनके माता-पिता भी उन पर बड़ा अन्याय करते हैं कि धार्मिक विद्याओं की प्राप्ति के लिए उन्हें थोड़ा सा समय भी नहीं देते और प्रारम्भ से ही ऐसे धंधों और कार्यों में डाल देते हैं जो उन्हें पवित्र धर्म से वंचित कर देते हैं।

धार्मिक शिक्षा-दीक्षा बाल्यकाल में हो

यह बात भी ध्यान-योग्य है कि धार्मिक शिक्षाओं की प्राप्ति के लिए बचपन का समय अत्यन्त उचित और अनुकूल है। जब दाढ़ी निकल आई तब ज़रबा, यज़्रिबो याद करने बैठे तो क्या ख़ाक याद होगा। बचपन की कंठाग्र शक्ति तीव्र होती है। मानव आयु के किसी दूसरे भाग में ऐसी कंठाग्रशक्ति कभी भी नहीं होती। मुझे भली-भांति स्मरण है कि बचपन की कुछ बातें तो अब तक याद हैं परन्तु पन्द्रह वर्ष पूर्व की अधिकांश बातें याद नहीं। इसका कारण यह है कि पहली आयु में ज्ञान के निशान अंकित होकर इस प्रकार अपना स्थान धारण कर लेते हैं तथा शक्तियों के विकास की आयु होने के कारण हृदय में इस प्रकार समा जाते हैं कि फिर नष्ट नहीं हो सकते। अत: यह एक विस्तृत मामला है।

अपनी पड़ोसी जातियों से शिक्षा लो

संक्षिप्त यह शिक्षा-पद्धति में इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि धार्मिक शिक्षा प्रारम्भ से ही हो और मेरी आरम्भ से ही यह इच्छा रही है और अब भी है अल्लाह तआला उसे पूर्ण करे। देखो तुम्हारी पड़ोसी क़ौमों अर्थात् आर्यों ने शिक्षा के लिए कितने महत्वपूर्ण कार्य किए कई लाख से अधिक धन-राशि एकत्र कर ली। कालिज की भव्य इमारत और सामग्री भी उपलब्ध की। यदि मुसलमान पूर्ण रूप से अपने बच्चों की शिक्षा की ओर ध्यान न देंगे तो मेरी बात याद रखें कि एक समय उनके हाथ से बच्चे भी जाते रहेंगे।

संगत का प्रभाव

कहावत प्रसिद्ध है ''तुख़्म तासीर सुहबत रा असर'' इसके प्रथन भाग पर कोई आपत्ति हो तो हो परन्तु द्वितीय भाग ''सुहबत रा असर'' ऐसी प्रमाणित बात है कि इस पर हमें अधिक बहस करने की आवश्यकता नहीं। प्रत्येक सभ्य जाति के बच्चों का ईसाइयों के जाल में फंस जाना तथा मुसलमानों यहां तक कि ग़ौस और क़ुतुब कहलाने वालों की सन्तान और सादात के बेटों का रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में अभद्रता करना देख चुके हो। उन कुलीन सय्यदों की सन्तान जो अपने वंश का क्रम हज़रत इमाम हुसैन रज़ि. तक पहुँचाते हैं, हम ने ईसाइयत देखी है और इस्लाम के प्रवर्तक के सन्दर्भ में नाना प्रकार के आरोप (हम ख़ुदा की शरण चाहते हैं) लगाते हैं। ऐसी स्थिति में भी यदि कोई मुसलमान अपने धर्म और अपने नबी (स.अ.व.) के लिए स्वाभिमान नहीं रखता तो उस से अधिक अन्यायी और कौन होगा?

यदि तुम अपने बच्चों को ईसाइयों, आर्यों और अन्य लोगों की संगत से नहीं बचाते या कम से कम नहीं बचाना चाहते तो स्मरण रखो कि न केवल स्वयं पर अपितु क़ौम पर और इस्लाम पर अन्याय करते और बड़ा भारी अत्याचार करते हो।

क्या तुम्हारे अन्दर इस्लाम के लिए कुछ स्वाभिमान नहीं?

इस का अर्थ यह है कि जैसे तुम्हें इस्लाम के लिए कुछ स्वाभिमान नहीं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सम्मान तुम्हारे हृदय में नहीं।

सत्यनिष्ठ और संयमी बनो ताकि बुद्धि में कुशाग्रता और दक्षता उत्पन्न हो

तनिक सोचो और समझो। ख़ुदा के लिए बुद्धि से काम लो और इसलिए कि बुद्धि में कुशाग्रता और दक्षता उत्पन्न हो, सत्यनिष्ठ और संयमी बनो। पवित्र बुद्धि आकाश से आती है तथा अपने साथ एक प्रकाश लाती है परन्तु वह एक योग्य जौहर की खोज में रहती है, इस पवित्र सिलसिले का नियम वही नियम है जिसे हम भौतिक नियम में देखते हैं? वर्षा आकाश से उतरती है, परन्तु इस वर्षा से कोई स्थान गुलशन बन जाता है तथा कहीं कांटे और झाड़ियां ही उगती है और कहीं वही वर्षा की बूंदें समुद्र में जाकर एक शानदार रत्न बनता है किसी के कथनानुसार –

در باغ لالہ روئید در شورہ بوم خس

आकाशीय प्रकाश को स्वीकार करने तथा उससे लाभान्वित होने के लिए तैयार हो जाओ

यदि पृथ्वी में पात्रता न होती तो वर्षा का कुछ लाभ न पहुँचता अपितु इसके विपरीत हानि और क्षति होती है, इसी लिए आकाशीय प्रकाश उतरा है जो हृदयों को प्रकाशित करना चाहता है। उसे स्वीकार करने और उस से लाभान्वित होने के लिए तैयार हो जाओ ताकि ऐसा न हो कि वर्षा की भांति जो पृथ्वी योग्य जौहर (पात्रता) नहीं रखती वह उसे व्यर्थ कर देती है, तुम भी प्रकाश के विद्यमान होने के बावजूद अंधकार में चलो और ठोकर खाते हुए अंधे कुएँ में गिर कर नष्ट हो जाओ। अल्लाह तआला मेहरबान माँ से बढ़कर मेहरबान है वह नहीं चाहता कि उस की सृष्टि व्यर्थ हो, वह तुम पर मार्ग दर्शन और प्रकाश के मार्ग खोलता है परन्तु तुम उन पर चलने के लिए बुद्धि तथा आत्म-शुद्धि से काम लो जैसे पृथ्वी की जब तक हल चला कर तैयार

नहीं की जाती उसमें बीजारोपण नहीं होता। इसी प्रकार जब तक, परिश्रम और प्रयास द्वारा आत्म-शुद्धि नहीं होती पवित्र बुद्धि आकाश से उतर नहीं सकती।

इस युग में परमेश्वर ने बड़ी कृपा की तथा अपने धर्म और हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समर्थन में स्वाभिमान के कारण एक मनुष्य को जो तुम्हारे मध्य बोल रहा है भेजा ताकि वह उस प्रकाश की ओर लोगों को बुलाए। यदि युग में ऐसा उपद्रव और फ़साद न होता और धर्म को समाप्त करने के लिए जिस प्रकार के प्रयास हो रहे हैं न होते तो कुछ हानि न थी, परन्तु अब तुम देखते हो कि चारों ओर दाएं-बाएं इस्लाम ही को समाप्त करने की चिन्ता में समस्त जातियां लगी हुई हैं। मुझे स्मरण है और 'बराहीन अहमदिया' में भी चर्चा की है कि इस्लाम के विरुद्ध छः करोड़ पुस्तकें लिखकर प्रकाशित की गई हैं। अद्‌भुत बात है कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों की संख्या भी छः करोड़ और इस्लाम के विरुद्ध पुस्तकों की संख्या भी इतनी ही है। यदि संख्या की इस अधिकता को जो अब तक इनक पुस्तकों की हुई है छोड़ भी दिया जाए तो भी हमारे विरोधी एक-एक किताब प्रत्येक मुसलमान के हाथ में दे चुके हैं, यदि परमेश्वर का स्वाभिमान जोश में न होता और إِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ उसका वादा सच्चा न होता तो निश्चय समझो कि आज इस्लाम संसार से समाप्त हो जाता और उसका नामो-निशान मिट जाता, परन्तु नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। ख़ुदा तआला का गुप्त हाथ उसकी रक्षा कर रहा है। मुझे खेद और शोक इस बात का होता है कि लोग मुसलमान होते हुए विवाह और रिश्ते इत्यादि जितनी भी तो इस्लाम की चिन्ता नहीं करते और मुझे कई बार पढ़ने का संयोग हुआ है कि ईसाई स्त्रियां तक मृत्यु के समय ईसाई धर्म के प्रसार और प्रचार के लिए लाखों रुपया वसीयत कर जाती हैं, उनका अपने जीवन को ईसाइयत के प्रचार में व्यय करना तो हम प्रतिदिन देखते हैं सहस्त्रों मिशनरी स्त्रियां घूमती फिरती और जैसे भी बन पड़े नक़द ईमान छींनती फिरती हैं, मुसलमानों में से किसी एक को नहीं देखा कि वह

पचास रुपए भी इस्लाम के प्रचार हेतु वसीयत करके मरा हो। हां शादियों और परम्परागत रीति–रिवाजों पर तो अत्यधिक अपव्यय करते हैं तथा क़र्ज़ लेकर भी मुक्तहस्त हो कर व्यर्थ ख़र्च किया जाता है, परन्तु ख़र्च नहीं करेंगे तो इस्लाम के लिए। खेद! खेद!! मुसलमानों की इस से अधिक दयनीय स्थिति और क्या होगी?

दुष्कर्म का परिणाम दुष्कर्म होता है

मूल बात यह है कि दुष्कर्म का परिणाम दुष्कर्म ही होता है। इस्लाम के लिए परमेश्वर का प्रकृति का नियम है कि एक नेकी से दूसरी जन्म लेती है। मुझे याद आया 'तज़्क़िरतुल औलिया' में मैंने पढ़ा था कि एक अग्निपूजक वृद्ध नव्वे वर्ष की आयु का था संयोग से वर्षा की झड़ी लग गई तो वह उस झड़ी में कोठे पर चिड़ियों के लिए दाने डाल रहा था किसी बुज़ुर्ग ने निकट से कहा कि हे बूढ़े तू क्या करता है? उसने उत्तर दिया कि भाई छः–सात दिन से प्रतिदिन निरन्तर वर्षा होती रही है, चिड़ियों को दाना डालता हूँ। उसने कहा तू व्यर्थ कार्य करता है तू काफ़िर है, तुझे प्रतिफल कहां। बूढ़े ने उत्तर दिया मुझे इसका प्रतिफल अवश्य मिलेगा। बुज़ुर्ग साहिब कहते हैं मैं हज को गया तो दूर से क्या देखता हूँ कि वही बूढ़ा तवाफ़ (काबे की परिक्रमा) कर रहा है उसे देखकर मुझे आश्चर्य हुआ और जब मैं आगे बढ़ा तो पहले वही बोला – क्या मेरा दाने डालना व्यर्थ गया या उनका प्रतिफल मिला?

नेकी का प्रतिफल व्यर्थ नहीं होता

अब विचार करना चाहिए कि अल्लाह तआला ने एक काफ़िर की नेकी का भी प्रतिफल व्यर्थ नहीं किया तो क्या मुसलमान की नेकी का प्रतिफल

व्यर्थ कर देगा ? मुझे एक सहाबी का वृत्तान्त याद आया कि उसने कहा हे रसूलुल्लाह (स.अ.व.) मैने अपने कुफ्र के समय में बहुत से दान किए हैं क्या उनका प्रतिफल मुझे मिलेगा। आप (स.अ.व.) ने फ़रमाया कि वही दान तो तेरे इस्लाम स्वीकार करने का कारण हो गए हैं।

नेकी क्या है ?

नेकी एक सीढ़ी है इस्लाम और ख़ुदा की ओर चढ़ने की परन्तु स्मरण रखो कि नेकी क्या वस्तु है। शैतान प्रत्येक मार्ग में लोगों को मार्ग में लूटता तथा उन्हें सद्मार्ग से बहकाता है, उदाहरणतया रात को अधिक रोटी पक गई और प्रात: को बासी बच गई, ठीक खाने के समय उसके सामने अच्छे-अच्छे खाने रखे हैं अभी एक कौर (लुक़्मा) नहीं खाया कि द्वार पर आकर भिखारी ने आवाज़ लगाई और रोटी मांगी। कहा कि बासी रोटी भिखारी को दे दो। क्या यह नेकी होगी ? बासी रोटी तो पड़ी ही रहती, सुख-चैन में जीवन व्यतीत करने वाले उसे क्यों खाने लगे ? अल्लाह तआला फ़रमाता है -

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا (अद्दहर :9) यह भी ज्ञात रहे कि तआम कहते ही रुचिकर तआम (भोजन) को, सड़ा हुआ बासी तआम नहीं कहलाता। अत: उस प्लेट में से जिसमें अभी ताज़ा भोजन रखा हुआ है खाना आरम्भ नहीं किया भिखारी की आवाज़ पर निकाल दे तो यह नेकी है।

बेकार वस्तुओं के ख़र्च करने से कोई नेकी के तंग द्वार में प्रवेश नहीं कर सकता

बेकार और व्यर्थ वस्तुओं के खर्च करने से कोई मनुष्य नेकी करने का दावा नहीं कर सकता, नेकी का द्वार तंग है। अत: यह बात मस्तिष्क में रख लो कि बेकार वस्तुओं के ख़र्च करने से कोई उसमें प्रवेश नहीं कर सकता क्योंकि

स्पष्ट आदेश है لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰی تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ (आलेइमरान :93) जब तब प्रिय से प्रिय और रुचिकर से रुचिकर वस्तुओं को खर्च न करोगे उस समय तक प्रेम-पात्र और प्रिय होने का पद प्राप्त नहीं हो सकता। यदि कष्ट उठाना नहीं चाहते और वास्तविक नेकी धारण करना नहीं चाहते तो क्योंकर सफल और कामयाब हो सकते हो। क्या आदरणीय सहाबा रज़ि. मुफ़्त में इस पद तक पहुँच गए जो उन्हें प्राप्त हुआ। भौतिक उपाधियों की प्राप्ति के लिए कितने खर्च और कष्ट सहन करने पड़ते हैं तब कहीं एक साधारण उपाधि जिस से हार्दिक सन्तुष्टि और सन्तोष प्राप्त नहीं हो सकता मिलती है। फिर विचार करो कि 'रज़ियल्लाहो अन्हुम' की उपाधि जो दिल को सन्तोष और हृदय को सन्तुष्टि तथा अल्लाह तआला की प्रसन्नता का निशान है क्या यों ही सरलतापूर्वक प्राप्त हो गया?

ख़ुदा तआला की प्रसन्नता ही वास्तविक ख़ुशी का कारण है

बात यह है कि ख़ुदा तआला की प्रसन्नता जो वास्तविक ख़ुशी का कारण है प्राप्त नहीं हो सकती जब तक अस्थायी कष्ट सहन न किए जाएं ख़ुदा को धोखा नहीं दिया जा सकता है। मुबारक हैं वे लोग जो ख़ुदा की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए कष्ट की परवाह न करें क्योंकि मोमिन को स्थायी ख़ुशी और अनश्वर आराम का प्रकाश इस अस्थायी कष्ट के पश्चात् प्राप्त होता है।

कोई व्यक्ति किस समय तक सच्चा मोमिन नहीं कहला सकता?

मैं स्पष्ट तौर पर वर्णन करता हूँ कि जब तक प्रत्येक बात पर ख़ुदा तआला प्रमुख न हो जाए और हृदय पर दृष्टि डाल कर वह न देख सके कि यह मेरा ही है उस समय तक कोई सच्चा मोमिन नहीं कहला सकता। ऐसा व्यक्ति तो वंशानुगत मोमिन या मुसलमान है जैसे भंगी को भी मुसल्ली या मोमिन कह देते हैं। मुसलमान वही है जो اَسۡلَمَ وَجۡهَهٗ لِلّٰهِ (अस्लमा वज्हहू

लिल्लाह) का चरितार्थ हो गया हो। वज्ह मुँह को कहते हैं परन्तु इसे हस्ती और अस्तित्व पर भी बोला जाता है। अतः जिसने समस्त शक्तियां ख़ुदा के समक्ष रख दी हों वही सच्चा मुसलमान कहलाने का पात्र है। मुझे याद आया कि एक मुसलमान ने किसी यहूदी को इस्लाम का निमंत्रण दिया कि तू मुसलमान हो जा, मुसलमान स्वयं पाप और दुराचार में लिप्त था। यहूदी ने उस पापी मुसलमान से कहा कि तू पहले स्वयं को देख और तू इस बात पर अभिमान न कर कि तू मुसलमान कहलाता है। ख़ुदा तआला इस्लाम का भाव चाहता है न कि नाम और शब्द।

यहूदी ने अपना किस्सा वर्णन किया कि मैंने अपने लड़के का नाम ख़ालिद रखा था, परन्तु दूसरे दिन मुझे उसको क़ब्र में गाढ़ना पड़ा यदि केवल नाम ही में बरकत होती तो वह क्यों मरता। यदि कोई मुसलमान से पूछता है कि क्या तू मुसलमान है ? तो वह उत्तर देता है अल्हमदो लिल्लाह।

केवल वाचालता काम नहीं आ सकती जब तक कर्म न हो

अतः स्मरण रखो कि केवल वाचालता और मुखरता काम नहीं आ सकती जब तक कि कर्म न हो। मात्र बातें ख़ुदा के निकट कुछ भी महत्व नहीं रखतीं। अतः ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है -

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ (अस्सफ़्फ़ :4)

(अल्लाह के निकट यह बहुत बड़ा पाप है कि तुम वह कहो जो तुम करते नहीं। अनुवादक)

यदि तुम इस्लाम की सेवा करना चाहते हो तो पहले तुम आत्म संयम और शुद्धता धारण करो

अब मैं फिर अपने पूर्व उद्देश्य की ओर लौटता हूँ अर्थात् صَابِرُوْا وَرَابِطُوْا

जिस प्रकार शत्रु को मुकाबले पर सरहद (सीमा) पर घोड़ा होना आवश्यक है ताकि शत्रु सीमोल्लंघन न कर सके, इसी प्रकार तुम भी तैयार रहो, ऐसा न हो कि शत्रु सरहद से गुज़र कर इस्लाम को आघात पहुँचाए। मैं पहले भी वर्णन कर चुका हूँ कि यदि तुम इस्लाम की सहायता और सेवा करना चाहते हो तो पहले आत्म संयम और शुद्धता धारण करो जिस से स्वयं तुम ख़ुदा तआला की शरण के दृढ़ दुर्ग में आ सको और फिर तुम्हें उस सेवा का सौभाग्य और अधिकार प्राप्त हो। तुम देखते हो कि मुसलमानों की बाह्य शक्ति कितनी कमज़ोर हो गई है जातियां उन्हें घृणा और तिरस्कार की दृष्टि से देखती हैं। यदि तुम्हारी आन्तरिक और हार्दिक शक्ति भी कमज़ोर और पतित हो गई तो फिर तो अन्त ही समझो। तुम स्वयं को ऐसा शुद्ध करो कि पवित्र शक्ति का उसमें समावेश हो जाए और वह सरहद के घोड़ों की भांति सुद्ढ़ और रक्षक हो जाएं। अल्लाह तआला की कृपा हमेशा संयमियों और सत्यनिष्ठ लोगों के साथ होती है। अपने शिष्टाचार और स्वरूप ऐसे न बनाओ कि जिन से इस्लाम को धब्बा लग जाए। दुष्चरित्र और इस्लामी शिक्षा पर आचरण न करने वाले मुसलमानों से इस्लाम को धब्बा लगता है, कोई मुसलमान मदिरापान कर लेता है तो कहीं उल्टी करता फिरता है, पगड़ी गले में होती है, मोरियों और गन्दी नालियों में गिरता फिरता है, पुलिस के जूते पड़ते हैं, हिन्दू और ईसाई उस पर उपहास करते हैं। उस का ऐसा शरीअत के विपरीत कृत्य उसकी ही हंसी का कारण नहीं होता अपितु गुप्त तौर पर उसका प्रभाव स्वयं इस्लाम तक पहुँचता है। मुझे ऐसी ख़बरें या कारावास की रिपोर्ट पढ़कर नितान्त खेद होता है जब मैं देखता हूँ कि इतने मुसलमान दुराचारों के कारण प्रकोप के भाजन हुए, हृदय व्याकुल हो जाता है कि ये लोग जो सदमार्ग रखते हुए अपने असंतुलनों से केवल स्वयं को हानि नहीं पहुँचाते अपितु इस्लाम पर उपहास कराते हैं। यही कारण था कि किसी पिछली जनगणना के समय मिस्टर एबटस ने अपनी रिपोर्ट में बहुत कुछ लिखा था। इस से मेरा आशय यह है कि मुसलमान लोग

मुसलमान हो कर इन निषिद्ध और वर्जित बातों में लिप्त हो जाते हैं। जो न केवल उन को अपितु इस्लाम को संदिग्ध कर देते हैं। अत: अपने शिष्टाचार और आचरण ऐसे न बनालो कि तुम पर काफ़िरों को भी अलोचना (जो वास्तव में इस्लाम पर होती है) करने का अवसर न मिले।

वास्तविक धन्यवाद संयम और शुद्धता है

तुम्हारा वास्तविक धन्यवाद संयम और शुद्धता है। मुसलमान पूछने पर अल्लाह की प्रशंसा है कह देना सच्ची कृतज्ञता और धन्यवाद नहीं है। यदि तुम ने वास्तविक कृतज्ञता अर्थात् शुद्धता और संयम के मार्ग धारण कर लिए तो मैं तुम्हें शुभ संदेश देता हूँ कि तुम सरहद पर खड़े हो कोई तुम पर विजयी नहीं हो सकता। मुझे स्मरण है कि एक हिन्दू मुख्य क्लर्क ने जिस का नाम जगन्नाथ था जो एक पक्षपाती हिन्दू था बताया कि अमृतसर या किसी स्थान पर मुख्य क्लर्क था जहां एक हिन्दू कर्मचारी गुप्त रूप से नमाज़ पढ़ा करता था परन्तु प्रत्यक्षतया हिन्दू था। मैं और अन्य समस्त हिन्दू उसे बहुत बुरा समझते थे। हम सब कर्मचारियों ने (स्टाफ़ ने) मिलकर योजना तैयार की कि इसे अवश्य पदच्युत कराएं। सब से अधिक उद्दंडता मेरे हृदय में थी। मैंने कई बार शिकायत की कि इसने यह ग़लती की है और यह आज्ञा का उल्लंघन किया है परन्तु इस पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता था परन्तु हमने इरादा कर लिया था कि उसे अवश्य पदच्युत करा देंगे तथा अपने इस इरादे में सफल होने के लिए बहुत सी आलोचनाएं भी एकत्र कर ली थीं। मैं समय-समय पर इन अलोचनाओं को साहिब बहादुर के समक्ष प्रस्तुत कर दिया करता था। साहिब यदि क्रोधित होकर उसे बुला भी लेता था तो ज्यों ही वह सामने आ जाता तो जैसे अग्नि पर पानी पड़ जाता। साधारण तौर पर नर्मी से उसे समझा देता मानो उस से कोई दोष ही नहीं हुआ।

संयम की धाक दूसरों को भी प्रभावित करती है

मूल बात यह है कि संयम की धाक दूसरों को भी प्रभावित करती है और ख़ुदा तआला संयमियों को नष्ट नहीं करता मैंने एक पुस्तक में पढ़ा है कि हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर साहिब जीलानी[रह.] जो बड़े बुज़ुर्गों में से हुए हैं उन की आत्मा बहुत पवित्र थी। उन्होंने एक बार अपनी मां से कहा कि मेरा हृदय संसार से उचाट है मेरी इच्छा है कि कोई पेशवा तलाश करूँ जो मुझे सन्तोष और सन्तुष्टि के मार्ग दिखाए। मां ने जब देखा कि यह अब हमारे काम का नहीं रहा तो उनकी बात को मान लिया और कहा कि इन अशर्फ़ियों में से शरीअत के अनुसार चालीस अशर्फ़ियां (तत्कालीन सिक्का) तेरी हैं और चालीस तेरे बड़े भाई की। अतः चालीस अशर्फ़ियां जो तेरा अधिकार बनता था तुझे देती हूँ। यह कहकर वे चालीस अशर्फ़ियां उनकी कह कर वे चालीस अशर्फ़ियां उनकी बग़ल के नीचे कुर्ते में सी दीं और कहा कि अमन के स्थान पर पहुँच कर निकाल लेना और आवश्यकता के समय व्यय करना। सय्यद अब्दुलक़ादिर साहिब[रह.] ने अपनी मां से कहा कि मुझे कोई उपदेश दें। उन्होंने कहा कि बेटा झूठ कभी न बोलना, इस से बड़ी बरकत होगी, इतना सुनकर आप ने विदाई ली। संयोग ऐसा हुआ कि जिस जंगल से आप[रह.] गुज़रे उसमें कुछ बटमार डाकू रहते थे जो यात्रियों को लूट लिया करते थे। दूर से सय्यद अब्दुल क़ादिर साहिब[रह.] पर भी उनकी दृष्टि पड़ी, निकट आए तो उन्होंने एक कम्बल ओढ़े हुए एक भिक्षु सा देखा। एक ने हँसते हुए मालूम किया कि तेरे पास कुछ है? आप[रह.] अभी अपनी मां से ताज़ा उपदेश सुनकर आए थे कि झूठ न बोलना, तुरन्त उत्तर दिया कि हां चालीस अशर्फ़ियां मेरी बग़ल के नीचे हैं जो मेरी मां ने जेब की तरह सी दी हैं, उस डाकू ने समझा कि यह उपहास करता है। दूसरे डाकू ने जब पूछा तो उसे भी यही उत्तर दिया। अतः प्रत्येक चोर को यही उत्तर दिया, वे उन्हें अपने सरदार के पास ले गए कि बार-बार

यही कहता है। सरदार ने कहा अच्छा तनिक इसका कपड़ा देखो तो। जब तलाशी ली गई तो वास्तव में चालीस अशर्फ़ियां निकलीं, वे आश्चर्य में पड़ गए कि वह विचित्र आदमी है, हम ने ऐसा मनुष्य कभी नहीं देखा। डाकुओं के उस सरदार ने आपरह॰ से पूछा कि क्या कारण है कि तूने इस प्रकार से अपने धन का पता बता दिया? आप ने फ़रमाया कि मैं ख़ुदा के धर्म की तलाश में जाता हूँ, रवानगी के समय मां ने उपदेश दिया था कि झूठ कभी न बोलना। यह पहली परीक्षा थी मैं झूठ क्यों बोलता। यह सुनकर डाकुओं का सरदार रो पड़ा और कहा कि आह! मैंने एक बार भी ख़ुदा तआला का आदेश न माना। चोरों को सम्बोधन करते हुए कहा कि इस बात और इस व्यक्ति की दृढ़ता ने मेरा काम तो पूरा कर दिया है मैं अब तुम्हारे साथ नहीं रह सकता और तौबा करता हूँ उसके कहने के साथ ही शेष चोरों ने भी तौबा कर ली।

''चोरों क़ुतुब बनाया ई''

मैं ''चोरों क़ुतब बनाया ई'' इसी घटना को समझता हूँ। अतः सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानीरह॰ फ़रमाते हैं कि पहले बैअत करने वाले चोर ही थे।

धैर्य

इसी लिए अल्लाह तआला फ़रमाता है يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا (आलेइमरान :201) धैर्य एक बिन्दु की भांति उत्पन्न होता है फिर वृत्त का रूप धारण करके सब पर व्याप्त हो जाता है अन्ततः दुराचारियों पर भी उसका प्रभाव पड़ता है। इसलिए आवश्यक है कि मनुष्य संयम को हाथ से न जाने दे और संयम के मार्गों पर दृढ़तापूर्वक आचरण करे क्योंकि संयमी का प्रभाव अवश्य पड़ता है और उसकी धाक विरोधियों के हृदय में भी पैदा हो जाती है।

संयम के अंग

संयम के बहुत से अंग हैं- अहंकार, निरंकुशता, अवैध माल तथा दुराचार से बचना भी संयम है। जो व्यक्ति सदाचार प्रदर्शित करता है उसके शत्रु भी मित्र हो जाते हैं अल्लाह तआला फ़रमाता है –

اِدْفَعْ بِالَّتِیْ ھِیَ اَحْسَنُ (अलमोमिनून :97) अब विचार करो कि यह हिदायत क्या शिक्षा देती है? इस हिदायत में अल्लाह तआला का यह आशय है कि यदि विरोधी गाली भी दे तो उसका उत्तर गाली से न दिया जाए अपितु उस पर धैर्य से काम लिया जाए, इसका परिणाम यह होगा कि विरोधी तुम्हारी श्रेष्ठता को स्वीकार करके स्वयं ही लज्जित और शर्मिन्दा होगा और यह दण्ड उस दण्ड से बढ़ कर होगा जो प्रतिशोध के तौर पर तुम उसे दे सकते हो। यों तो एक तुच्छ सा व्यक्ति वध करने तक जा सकता है परन्तु मानवता की मांग और संयम का आशय नहीं है सदाचार एक ऐसा जौहर है कि उद्दंड मनुष्य पर भी उसका प्रभाव पड़ता है। किसी ने क्या ख़ूब कहा है कि –

لطف کن لطف کہ بیگانہ شود حلقہ بگوش

ईमान लाने के विभिन्न कारण

पापी लोग जो नबियों के मुकाबले पर थे विशेषकर वे लोग जो हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुकाबले पर थे, उन का ईमान लाना चमत्कारों पर निर्भर न था और न चमत्कार और अद्‌भुत चमत्कार (स्वभाव से हटकर चमत्कार) उन के सन्तोष का कारण थे अपितु वे लोग आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उत्तम शिष्टाचारों को ही देखकर आप (स.अ.व.) की सच्चाई को मान गए थे। नैतिक चमत्कार वह काम कर सकते हैं जो शक्ति प्रदर्शन वाले चमत्कार नहीं कर सकते اَلْاِسْتِقَامَۃُ فَوْقَ الْکَرَامَۃِ का यही अर्थ है। अनुभव करके देख लो कि

स्थायित्व कैसे चमत्कार दिखाता है, करामत (चमत्कार) की ओर तो तनिक ध्यान ही नहीं होता, विशेषकर वर्तमान युग में, परन्तु यदि मालूम हो जाए कि अमुक व्यक्ति सदाचारपूर्ण आदमी है तो उसकी ओर जितना झुकाव होता है वह कोई गुप्त बात नहीं। उत्तम आचरण का प्रभाव उन लोगों पर भी पड़ता है जो कई प्रकार के निशान देखकर भी सन्तोष और सन्तुष्टि नहीं पा सकते। बात यह है कि कुछ लोग बाह्य चमत्कार और अद्भुत चमत्कारों को देखकर ईमान लाते है और कुछ सच्चाइयों और आध्यात्म ज्ञानों को देख कर, परन्तु अधिकांश लोग वे होते हैं जिनके पथ-प्रदर्शन और सन्तोष का कारण उत्तम आचरण और ध्यान देना होते हैं।

हमारे नबी करीम (स.अ.व.) **के चमत्कार**

हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को प्रत्येक प्रकार के ख़वारिक (अद्भुत चमत्कार, वे चमत्कार जो स्वभाव से हटकर हों) और सामान्य चमत्कार प्राप्त थे, हम आप की शान क्या वर्णन करें, जिस ओर देखो असंख्य चमत्कार मिलेंगे उपरोक्त तीनों प्रकार के चमत्कार मिलेंगे। आप उपरोक्त तीनों प्रकार के चमत्कारों का समाहार थे। प्रत्यक्ष अद्भुत चमत्कार (ख़वारिक) जैसे चन्द्रमा का फटना इत्यादि अन्य चमत्कार जिन की संख्या तीन हज़ार से भी अधिक है। आध्यात्म ज्ञान और सच्चाइयों के चमत्कारों से तो सम्पूर्ण क़ुर्आन करीम भरा पड़ा है जो हर समय ताज़ा और नूतन है और नैतिक चमत्कारों की दृष्टि से स्वयं आप का पवित्र अस्तित्व اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ (अलक़लम :5) का चरितार्थ है। क़ुर्आन करीम अपनी विलक्षणता के प्रमाण में اِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ (अलबक़रह :24) कहता है। ये चमत्कार आध्यात्मिक हैं, जिस प्रकार एकेश्वरवाद के प्रमाण दिए हैं, इसी तौर पर उसकी नीति, उसकी भाषा को अलंकृत और सुगम होने के सदृश लाने पर भी मनुष्य समर्थ नहीं एक अन्य स्थान पर फ़रमाया -

لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ

(बनी इस्राईल : 89)

क़ुर्आन करीम की अलंकृत और सुगम शैली चमत्कार है

अत: आध्यात्मिक चमत्कारों के बारे में कोई यह न सोच ले कि यह मुसलमानों की धारणा और मिथ्या विचार है। आजकल के नेचरी नहीं अपितु (वे लोग जो) नेचर के विरुद्ध (हैं) यह स्वीकार नहीं करते कि सरलता और सुगमता क़ुर्आन करीम का चमत्कार है। सय्यद अहमद ने भी ठोकर खाई है और वे इस की सरलता और सुगमता को चमत्कार नहीं मानते। जब हम स्मरण करते हैं तो हमें खेद होता है कि सय्यद अहमद ने चमत्कारों से इन्कार किया है, सय्यद साहिब किसी प्रकार से चमत्कार नहीं मान सकते, क्योंकि वह कहते हैं कि एक साधारण स्तर का मनुष्य अथवा उच्च स्तर का मनुष्य भी उदाहरण बना सकता है परन्तु खेद तो यह है कि वह इतना नहीं जानते कि क़ुर्आन करीम लाने वाला वह शान रखता है कि – يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ (अलबय्यिनह :3) ऐसी किताब जिसमें समस्त किताबें और समस्त सच्चाइयां विद्यमान हैं। किताब से अभिप्राय और सामान्य अर्थ वे उत्तम बातें हैं जो मनुष्य स्वाभाविक तौर पर अनुकरणीय समझता है।

क़ुर्आन के अन्दर प्रत्येक प्रकार की आवश्यकताओं के साधन विद्यमान हैं

क़ुर्आन करीम नीतियों और आध्यात्म ज्ञानों का संग्रहीता है तथा वह तर और शुष्क अर्थात् निरर्थक बातों का कोई भण्डार अपने अन्दर नहीं रखता। प्रत्येक बात की व्याख्या वह स्वयं करता है तथा प्रत्येक प्रकार की आवश्यकताओं का सामान उसके अन्दर विद्यमान है, वह प्रत्येक दृष्टि से निशान और आयत

है। यदि कोई इस बात का इन्कार करे तो हम प्रत्येक दृष्टि से उसकी चमत्कारिकता प्रमाणित करने और प्रदर्शित करने को तैयार हैं। आजकल तौहीद और ख़ुदा की हस्ती पर बहुत बलपूर्वक प्रहार हो रहे हैं। ईसाइयों ने भी बहुत कुछ ज़ोर दिखाया और लिखा है परन्तु जो कुछ कहा और लिखा वह इस्लाम के ख़ुदा के बारे में ही लिखा है न कि एक मुर्दा, सलीबप्राप्त और असहाय ख़ुदा के बारे में। हम दावे के साथ कहते हैं कि जो व्यक्ति अल्लाह तआला की हस्ती और अस्तित्व पर कलम उठाएगा उसे अन्ततः उसी ख़ुदा की ओर आना पड़ेगा जिसे इस्लाम ने प्रस्तुत किया है, क्योंकि प्रकृति के ग्रन्थ के एक-एक पन्ने में उसका पता मिलता है और स्वाभाविक तौर पर मनुष्य उसी ख़ुदा की छाप अपने अन्दर रखता है। अतः ऐसे लोगों का पग जब उठेगा वह इस्लाम ही के मैदान की ओर उठेगा। यह भी तो एक महान् चमत्कार है।

क़ुर्आनी चमत्कार का इन्कार करने वालों को चुनौती

यदि कोई व्यक्ति क़ुर्आन करीम के इस चमत्कार का इन्कार करे तो हम एक ही पहलू से परीक्षण कर लेते हैं अर्थात् यदि कोई व्यक्ति क़ुर्आन करीम को ख़ुदा तआला की वाणी नहीं मानता तो इस प्रकाश और विज्ञान के युग में ऐसा दावेदार ख़ुदा की हस्ती पर सबूत लिखे उसके मुक़ाबले पर हम वे समस्त सबूत क़ुर्आन करीम ही से निकालकर दिखा देंगे और यदि वह व्यक्ति ख़ुदा की तौहीद (एकत्व) के बारे में सबूतों का दावा करके लिखे जो क़ुर्आन करीम में नहीं पाए जाते अथवा उन सच्चाइयों और पवित्र शिक्षाओं पर सबूतों का उल्लेख करे जिनके बारे में उसका विचार हो कि वे क़ुर्आन करीम में नहीं हैं तो हम ऐसे व्यक्ति को स्पष्ट तौर पर दिखा देंगे कि क़ुर्आन करीम का दा'वा فِيۡهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ कैसा सच्चा और साफ है और या मूल और स्वाभाविक धर्म के बारे में सबूत लिखना चाहे तो हम प्रत्येक दृष्टि से क़ुर्आन करीम का चमत्कार सिद्ध करके दिखा देंगे और बता देंगे कि समस्त सच्चाइयां और

पवित्र शिक्षाएं क़ुर्आन करीम में विद्यमान हैं।

क़ुर्आन करीम के आध्यात्म ज्ञानों और रहस्यों की प्राप्ति हेतु पवित्र शक्ति की आवश्यकता है

अत: क़ुर्आन करीम ऐसी किताब है जिसमें हर प्रकार के आध्यात्म ज्ञान और रहस्य विद्यमान हैं परन्तु उन्हें प्राप्त करने के लिए मैं पुन: कहता हूँ कि उसी पवित्र शक्ति की आवश्यकता है। इसलिए स्वयं अल्लाह तआला ने फ़रमाया है – لَّا يَمَسُّهُۥٓ إِلَّا ٱلْمُطَهَّرُونَ (अलवाक़िअ: :80)

'मक़ामात हरीरी' इत्यादि और क़ुर्आन करीम

इसी प्रकार क़ुर्आन करीम की सरलता और सुगमता में (इसका मुक़ाबला असम्भव है) उदाहरणतया सूरह फ़ातिहा का वर्तमान क्रम छोड़ कर कोई अन्य क्रम प्रयोग करो तो वे श्रेष्ठ मतलब और महान् उद्देश्य जो इस क्रम में विद्यमान हैं सम्भव नहीं कि किसी अन्य क्रम में वर्णन हो सकें। कोई सी सूरह ले लो चाहे قُلْ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ही क्यों न हो। जितनी नर्मी और कोमलता को ध्यान में रखते हुए उसमें ज्ञान और सच्चाइयां हैं वह कोई दूसरा वर्णन न कर सकेगा। यह भी केवल क़ुर्आन का ही चमत्कार है। मुझे आश्चर्य होता है जब कुछ अज्ञान 'मक़ामाते हरीरी' या सबआ मुअल्लक़: को अद्वितीय और अनुपम कहते हैं और इस प्रकार से क़ुर्आन करीम की अद्वितीयता पर प्रहार करना चाहते हैं, वे इतना नहीं समझते कि प्रथम तो हरीरी के लेखक ने उसके अद्वितीय होने का कहीं दावा नहीं किया। द्वितीय यह कि लेखक हरीरी स्वयं क़ुर्आन करीम की चमत्कारिक सुगमता को मानता था, इसके अतिरिक्त आरोप लगाने वाले ईमानदारी और सच्चाई को मस्तिष्क में नहीं रखते अपितु उन्हें छोड़कर मात्र शब्दों की ओर जाते हैं। उपरोक्त पुस्तकें सत्य और नीति से रिक्त हैं।

चमत्कार की विशेषता

चमत्कारी विशेषता और कारण तो यही है कि हर प्रकार की बातों को दृष्टिगत रखे, सरलता और सुगमता भी हाथ से न जाने दे, सच्चाई और नीति को भी न छोड़े। यह चमत्कार केवल क़ुर्आन करीम ही का है जो सूर्य के समान प्रकाशमान है और हर दृष्टि से अपने अन्दर चमत्कारिक शक्ति रखता है, इन्जील की भांति केवल मौखिक ही जमा-खर्च नहीं कि ''एक गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल भी फेर दो'' यह ध्यान और विचार नहीं कि ऐसी शिक्षा नीतिगत कृत्य से कहां तक संबंध रखती है और मानव-स्वभाव का इसमें कहां तक ध्यान रखा गया है ?

इसकी तुलना में क़ुर्आन करीम की शिक्षा पढ़ेंगे तो ज्ञात हो जाएगा कि मनुष्य के विचार इस प्रकार हर पहलू पर समर्थ नहीं हो सकते और ऐसी पूर्ण और दोषरहित शिक्षा जैसी कि क़ुर्आन करीम की है पार्थिव सोच का परिणाम नहीं हो सकती। क्या यह सम्भव है कि हमारे समक्ष एक हज़ार दरिद्र लोग हों और उनमें से हम कुछेक को कुछ दे दें और शेष का ध्यान तक न रखें, इसी प्रकार इन्जील एक ही पहलू पर पड़ी हैं शेष पहलुओं का उसे ध्यान तक नहीं रहा। हम यह दोष इन्जील को नहीं देते क्योंकि यह यहूदियों के कर्मदण्डों का परिणाम है, उनकी जैसी योग्यताएं थीं उन्हीं के अनुसार इन्जील आई ''जैसी रूह वैसे ही फ़रिश्ते'' (अर्थात् मनुष्य स्वयं बुरा हो तो वह अपनी जैसी ही वस्तुओं को पसन्द करता है) इसमें किसी का क्या दोष ?

इंजील की शिक्षा सामयिक थी

इसके अतिरिक्त इन्जील एक नियम है जो स्थान, समय और जाति से विशेष्य था जैसा कि अंग्रेज़ भी स्थानिक और सामयिक कानून जारी कर दिया करते हैं जिन का वह समय गुज़र जाने के पश्चात् कोई प्रभाव नहीं रहता, इसी

प्रकार इन्जील भी एक विशेष्य कानून है सामान्य नहीं, परन्तु इसके विपरीत क़ुर्आनी शिक्षा का दामन बहुत विशाल है। अतः ख़ुदा तआला फ़रमाता है –

وَاِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ وَمَا نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ

(अजहजर :22) अर्थात् हम अपने ख़ज़ानों में से एक निश्चित अनुमान से ही उतारते हैं। इन्जील की आवश्यकता (केवल) इतनी ही थी। इसलिए इंजील का सार (केवल) एक पृष्ठ में आ सकता है।

क़ुर्आन युग-युगों के लिए है

परन्तु क़ुर्आन करीम की आवश्यकताएं थीं सम्पूर्ण युग का सुधार। क़ुर्आन का उद्देश्य था जानवरों जैसी अवस्था से मनुष्य बनाना, मानव शिष्टाचारों से सभ्य मनुष्य बनाना ताकि शरई (धार्मिक नियम) सीमाओं और आदेशों के साथ समस्या का समाधान हो और फिर ख़ुदा वाला मनुष्य बनाना। यद्यपि ये शब्द संक्षिप्त हैं परन्तु उनकी सहस्त्रों शाखाएं हैं। चूंकि यहूदियों, नेचरियों, अग्नि पूजकों और भिन्न-भिन्न जातियों में दुराचार की भावना काम कर रही थी इसलिए आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुदाई आदेश के अनुसार सब को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया – يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا (अलआराफ़ :159) इसलिए आवश्यक था कि क़ुर्आन करीम उन शिक्षाओं का संग्रहीता होता जो भिन्न-भिन्न समयों में जारी रह चुकी थीं और उन समस्त सच्चाइयों को अपने अन्दर रखता जो आकाश से भिन्न-भिन्न समयों में भिन्न-भिन्न नबियों द्वारा पृथ्वी के निवासियों को पहुँचाई गई थीं। क़ुर्आन करीम की दृष्टि में सम्पूर्ण मानव थे न कि कोई विशेष जाति, देश और समय, तथा इंजील की दृष्टि में केवल एक जाति विशेष थी, इसलिए मसीह अलैहिस्सलाम ने बारम्बार कहा कि ''मैं इस्राईल की खोई हुई भेड़ों की तलाश में आया हूँ।''

तौरात के पश्चात् क़ुर्आन करीम की आवश्यकता

कुछ लोग कहते हैं कि क़ुर्आन क्या लाया? इस में वही कुछ तो है जो तौरात में लिखा है और इसी अदूरदर्शिता ने कुछ ईसाइयों में ''क़ुर्आन की आवश्यकता नहीं'' जैसी पत्रिकाएं लिखने का दुस्साहस पैदा किया। काश वे सच्चे विवेक और सद्‌बुद्धि से काम लेते ताकि वे न भटकते। ऐसे लोग कहते हैं कि तौरात में लिखा है कि तू व्यभिचार न कर, ऐसा ही क़ुर्आन में लिखा है कि व्यभिचार (ज़िना) न कर, क़ुर्आन एकेश्वरवाद का पाठ पढ़ाता है, तौरात भी एक ख़ुदा की उपासना की शिक्षा देती है, फिर अन्तर क्या हुआ? प्रत्यक्ष तौर पर यह प्रश्न बड़ा जटिल है और यदि किसी अज्ञान व्यक्ति के सामने प्रस्तुत किया जाए तो वह घबरा जाए। वास्तविकता यह है कि इस प्रकार के बारीक और जटिल प्रश्नों का समाधान भी अल्लाह तआला की विशेष कृपा के बिना सम्भव नहीं। यही तो क़ुर्आनी मआरिफ़ हैं जो यथा समय प्रकट होते हैं। वास्तविकता यह है कि क़ुर्आन करीम और तौरात में समानता अवश्य है, इस से हमें इन्कार नहीं परन्तु तौरात ने केवल मूल इबारत को लिया है जिसके साथ सबूत, तर्क और व्याख्या नहीं है परन्तु क़ुर्आन करीम ने तार्किक स्वरूप धारण किया है, इसलिए कि तौरात के उतरने के समय लोगों की योग्यताएं असभ्यता के रूप में थीं (परन्तु क़ुर्आन करीम के उतरने के समय योग्यताएं तार्किकता का रूप धारण कर चुकी थीं) अतः क़ुर्आन करीम ने वह मार्ग धारण किया जो सदाचार के लाभों को प्रकट करता है और बताता है कि सदाचार के लाभ ये हैं और न केवल लाभ और हितों का वर्णन ही करता है अपितु बौद्धिक तौर पर सबूतों और तर्कों के साथ उन्हें प्रस्तुत करता है ताकि सद्‌बुद्धि से काम लेने वालों को इन्कार की गुंजायश न रहे। जैसा कि मैंने अभी वर्णन किया है कि क़ुर्आन करीम के समय योग्यताएं तार्किकता का रूप धारण कर गईं थीं और तौरात के समय असभ्यता की स्थिति थी। हज़रत आदम से

लेकर युग प्रगति करता चला गया है यहाँ तक कि क़ुर्आन करीम के समय वह वृत्त की भांति पूर्ण हो गया। हदीस में है कि युग गोलाकार हो गया। अल्लाह तआला फ़रमाता है –

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ

(अलअहज़ाब :41)

आवश्यकताएं नुबुव्वत का इंजन है

आवश्यकताएं नुबुव्वत का इंजन हैं। अंधकारमय रातें उस प्रकाश को खींचती हैं जो संसार को अंधकार से मुक्ति दे। इस आवश्यतानुसार नुबुव्वत का सिलसिला आरम्भ हुआ और जब क़ुर्आन करीम के युग तक पहुंचा तो पूर्ण हो गया। अब (जैसे) समस्त आवश्यकताएं पूर्ण हो गईं। अतः अनिवार्य हुआ कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमुलअंबिया थे। अब बड़ा और स्पष्ट अन्तर (तौरात और क़ुर्आन करीम की शिक्षा में) एक तो यही है कि क़ुर्आन करीम ने सबूत प्रस्तुत किए हैं जिन्हें तौरात ने छुआ तक नहीं।

क़ुर्आन और तौरात की शिक्षा में दूसरा अन्तर

और दूसरा अन्तर यह है कि तौरात ने केवल बनी इस्राईल को सम्बोधित किया है तथा अन्य जातियों से कोई सम्पर्क और संबंध ही नहीं रखा। यही कारण है कि उसने सबूत और तर्कों पर बल नहीं दिया, क्योंकि तौरात की दृष्टि अन्य कोई सम्प्रदाय (या धर्म जैसे) नास्तिक दार्शनिकता और ब्रह्म इत्यादि का न था, विपरीत इसके क़ुर्आन करीम के सम्बोधित समस्त जातियों और सम्प्रदाय थे और वहां तक पहुँच कर समस्त आवश्यकताएं समाप्त हो गई थीं। इसलिए क़ुर्आन करीम ने आस्थाओं को भी और व्यवहारिक आदेशों को भी युक्ति संगत तौर पर वर्णन किया।

पर्दे का आदेश

अत: क़ुर्आन करीम फ़रमाता है –

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ (अन्नूर :31)
अर्थात् मोमिनों को कह दे किसी के सतर (शरीर के वे भाग जिन्हें छुपाना आवश्यक है) को आँखें फाड़-फाड़ कर न देखें और शेष समस्त गुप्तांगों की सुरक्षा करें अर्थात् मनुष्य पर अनिवार्य है कि आँख निद्रावस्था जैसी हो ताकि किसी ऐसी स्त्री जिससे विवाह वैध हो को देखकर किसी बुराई में न पड़े। कान भी सूराख़ों में आते हैं जो क़िस्से और अश्लील बातें सुनकर बुराई में लिप्त हो जाते हैं। इसलिए सामान्य तौर पर फ़रमाया कि समस्त सूराख़ों को सुरक्षित रखो और बेहूदा बातों के सुनने से बिल्कुल बन्द रखो ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ (अन्नूर) यह मोमिनों के लिए अति उत्तम है तथा शिक्षा का यह ढंग अपने अन्दर ऐसी उच्च स्तर की पवित्रता रखता है कि जिस के होते हुए दुराचारियों में न होगे।

क़ुर्आन प्रमाण और तर्क भी स्वयं ही वर्णन करता है

देखो! क़ुर्आन ने इसी एक बात को जो तौरात में भी अपने शब्दों और अपने अर्थ पर वर्णन हुई। और क़ुर्आन ने कैसी व्याख्या और विस्तार के साथ तथा सबूतों और तर्कों के साथ बलपूर्वक वर्णन किया, यही तो क़ुर्आन का चमत्कार है कि वह अपने अनुयायी को किसी अन्य का मुहताज नहीं होने देता, सबूत और तर्क भी स्वयं ही वर्णन करके उसे सन्तुष्ट कर देता है। क़ुर्आन करीम ने सबूतों के साथ आदेशों का उल्लेख किया है और प्रत्येक आदेश के पृथक तौर पर तर्क दिए हैं। अत: ये दो बड़े अन्तर हैं जो तौरात और क़ुर्आन में हैं। तौरात में सिद्ध करने का ढंग नहीं, दावे का सबूत स्वयं ढूंढना पड़ता है, क़ुर्आन अपने दावे को प्रत्येक प्रकार के सबूत से सिद्ध करता

है फिर प्रस्तुत करता है तथा ख़ुदा के आदेशों को ज़बरदस्ती स्वीकार नहीं कराता अपितु मनुष्य के मुख से नत मस्तक होने का स्वर निकलवाता है, न किसी बलात और विवशता से अपितु अपनी सिद्ध करने की उत्तम शैली और प्रतिष्ठा से। तौरात का सम्बोधित एक वर्ग विशेष है तथा क़ुर्आन के सम्बोधित सम्पूर्ण विश्व के लोग जो प्रलय तक पैदा होंगे। अब बताओ कि तौरात और क़ुर्आन क्योंकर एक हो जाएं और तौरात के होने से क़ुर्आन की आवश्यकता क्योंकर न पड़े। क़ुर्आन जब कहता है कि तू व्यभिचार (ज़िना) न कर तो उस का अभिप्राय संसार की समस्त प्रजा होता है, परन्तु जब यही शब्द तौरात बोलती है तो उसका सम्बोधन और संकेत वही बनीइस्राईल जाति होती है। इससे भी क़ुर्आन की श्रेष्ठता का ज्ञान हो सकता है, परन्तु दूरदर्शी और ख़ुदा से भयभीत होने वाला हृदय हो तो।

क़ुर्आन करीम भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के ख़वारिक़ (अद्‌भुत चमत्कार) **अपने अन्दर रखता है।**

(इसके अतिरिक्त) तौरात और क़ुर्आन में यह भी बड़ा अन्तर है कि क़ुर्आन भौतिक और आध्यात्मिक हर प्रकार के अद्‌भुत चमत्कार अपने अन्दर रखता है। उदाहरणतया चन्द्रमा के फटने का चमत्कार भौतिक चमत्कारों की श्रेणी से है। कुछ अज्ञानी चन्द्रमा-फटने के चमत्कार पर प्रकृति के नियम की ओट में छुपकर ऐतिराज़ करते हैं, परन्तु उन्हें इतना ज्ञात नहीं कि ख़ुदा तआला की क़ुदरतों और नियमों को न तो परिधि में लिया जा सकता है और न अनुमान लगाया जा सकता है।

प्रकृति के नियम का परिसीमन नहीं हो सकता

एक समय तो वे मुख से ख़ुदा बोलते हैं परन्तु दूसरे समय यद्यपि कि

उनके हृदय, उन की आत्मा ख़ुदा तआला की महान् और दूर से दूर क़ुदरतों को देख कर सज्दे में गिर पड़े उसे बिल्कुल भूल जाते हैं। यदि ख़ुदा की हस्ती और हैसियत यही है कि उस की शक्तियां हमारे ही विचारों और अनुमान तक सीमित हैं तो फिर दुआ की क्या आवश्यकता रही ? परन्तु नहीं, मैं तुम्हें बताता हूँ कि अल्लाह तआला की क़ुदरतों और इरादों को कोई अपनी परिधि में नहीं ले सकता। ऐसा व्यक्ति जो यह दावा करे वह ख़ुदा का इन्कारी है परन्तु कितना हाहाकार है उस अज्ञान पर जो अल्लाह तआला को असीमित क़ुदरतों का स्वामी समझ कर भी यह कहे कि चन्द्रमा के फटने का चमत्कार प्रकृति के नियम के विरुद्ध है। जान लो कि ऐसा व्यक्ति सद्बुद्धि और दूरदर्शी हृदय से वंचित है। भली भांति स्मरण रखो कभी प्रकृति के नियम पर भरोसा न कर लो अर्थात् कहीं प्रकृति के नियम की सीमा निर्धारित न कर लो कि बस ख़ुदा की ख़ुदाई का समस्त रहस्य यही है, फिर तो सारा ताना-बाना खुल गया। नहीं। इस प्रकार की दिलेरी और साहस नहीं करना चाहिए जो मनुष्य को बन्दगी के स्तर से गिरा दे, जिसका परिणाम विनाश है। ऐसी मूर्खता और बेवक़ूफ़ी करना कि ख़ुदा की क़ुदरतों को सीमित करना किसी मोमिन से नहीं हो सकता। इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी का यह कथन बहुत उचित है कि जो व्यक्ति ख़ुदा तआला को बुद्धि के मापदण्ड से अनुमान लगाने का इरादा करेगा वह मूर्ख है। देखो वीर्य से ख़ुदा तआला ने मनुष्य को पैदा किया। ये शब्द कह देने अत्यन्त सरल हैं और यह बिल्कुल साधारण सी बात दिखाई देती है परन्तु यह एक रहस्य और भेद है कि पानी की एक बूंद से मनुष्य को पैदा करता है और उसमें इस प्रकार की शक्तियां रख देता है। क्या किसी बुद्धि की शक्ति है कि वे उसके विवरण और मर्म तक पहुँचे। नेचरियों और दार्शनिकों ने बहुत ज़ोर लगाया परन्तु वह उसकी वास्तविकता से अवगत न हो सके। इसी प्रकार एक-एक कण ख़ुदा के अधीन है। अल्लाह तआला इस बात पर सामर्थ्यवान है कि यह बाह्य व्यवस्था भी यथावत रहे और एक स्वभाव से हटकर बात

(ख़ारिक़ आदत) भी प्रकट हो जाए। आध्यात्म ज्ञान रखने वाले लोग इन विवरणों को भली भांति देखते तथा उस से आनंद उठाते हैं। कुछ लोग बहुत छोटी-छोटी और तुच्छ बातों पर ऐतिराज़ कर देते हैं और सन्देहग्रस्त हो जाते हैं। उदाहरणतया इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अग्नि ने नहीं जलाया। यह बात भी ऐसी ही है जैसे चन्द्रमा के फटने से संबंधित। ख़ुदा भली भांति जानता है कि अग्नि उस सीमा तक जलाती है और उन कारणों के पैदा होने से शीतल हो जाती है। यदि ऐसा मसाला निकल आए या बता दिया जाए तो तुरन्त मान लेंगे परन्तु ऐसी स्थिति में परोक्ष पर ईमान और सुधारण का आनंद और विशेषता क्या प्रकट होगी। हमने यह कभी नहीं कहा कि ख़ुदा कारणों को उत्पन्न नहीं करता परन्तु कुछ कारण (साधन) ऐसे होते हैं जो दृष्टिगोचर होते हैं और कुछ कारण दृष्टि गोचर नहीं होते। तात्पर्य यह है कि ख़ुदा के कार्य रंगा-रंग होते हैं। ख़ुदा तआला की क़ुदरत कभी लाचार नहीं होती और स्वयं वह थकता नहीं। وَهُوَالۡخَلّٰقُ الۡعَلِيۡمُ اَفَعَيِيۡنَا بِالۡخَلۡقِ الۡاَوَّلِ (क़ाफ़ :16) उसकी शान है। अल्लाह तआला की असीम क़ुदरतों और कार्यों का कैसा ही बुद्धिमान और विद्वान मनुष्य क्यों न हो अनुमान नहीं लगा सकता अपितु उसे अपनी विवशता को प्रकट करना पड़ता है।

मुझे एक घटना स्मरण है, डाक्टर भली भांति जानते हैं। अब्दुल करीम नामक एक व्यक्ति मेरे पास आया, उसके पेट में एक रसौली थी जो मलद्वार की ओर बढ़ती जाती थी। डाक्टरों ने उसे कहा कि इसका कोई उपचार नहीं है, इसे बन्दूक से मार देना चाहिए। अतः बहुत से रोग इस प्रकार के हैं जिनकी वास्तविकता डाक्टरों को उचित प्रकार से ज्ञात नहीं हो सकती। उदाहरणतया प्लेग या हैज़ा ऐसे रोग हैं कि यदि डाक्टर को प्लेग की ड्यूटी पर नियुक्त किया जाए तो उसे स्वयं ही दस्त लग जाते हैं। जहां तक सम्भव हो मनुष्य ज्ञान प्राप्त करे और दर्शनशास्त्र की जांच-पड़ताल में तल्लीन हो जाए, परन्तु अन्ततः उसे ज्ञात होगा कि उस ने कुछ भी नहीं किया। हदीस में आया है कि जैसे सागर

के किनारे एक चिड़िया पानी से चोंच भरती हो, इसी प्रकार ख़ुदा तआला के कलाम और कार्य के आध्यात्म ज्ञानों और रहस्यों से हिस्सा मिलता है फिर क्या असहाय मनुष्य, हां मूर्ख दार्शनिक इसी हैसियत और शेखी पर ख़ुदा तआला के एक कृत्य चन्द्रमा के फटने पर ऐतिराज़ करता और उसे प्रकृति के नियम के विपरीत ठहराता है। हम यह नहीं कहते कि ऐतिराज़ न करो। नहीं, अपितु करो और अवश्य करो, ख़ुशी से करो और दिल खोलकर करो।

ऐतिराज़ करते समय दो बातें दृष्टिगत रखो

परन्तु दो बातें ध्यान में रख लो। प्रथम ख़ुदा का भय (और उसकी असीमित शक्ति) द्वितीय – (मनुष्य की नेस्ती और सीमित ज्ञान) बड़े-बड़े दार्शनिक भी अन्ततः यह स्वीकार करने पर विवश हुए हैं कि हम अनभिज्ञ हैं।

उदाहरणतया डाक्टरों से पूछो कि खोखली मांस-पेशी को वे सब जानते और समझते हैं परन्तु प्रकाश की वास्तविकता और उस का मर्म तो बताओ कि क्या है, आवाज़ की वास्तविकता पूछो तो यह तो कह देंगे कि कान के पर्दे पर यों होता है वह होता है परन्तु आवाज़ की वास्तविकता कदापि नहीं बता सकेंगे। अग्नि की गर्मी और पानी की शीतलता पर क्यों का उत्तर न दे सकेंगे। वस्तुओं के मर्म और तह तक पहुँचना किसी डाक्टर या दार्शनिक का काम नहीं है। देखिए हमारी आकृति दर्पण में प्रतिबिम्बित होती है, परन्तु हमारा सर टूटकर दर्पण के अन्दर नहीं चला जाता। हम भी सुरक्षित हैं और हमारा चेहरा भी दर्पण के अन्दर दृष्टिगोचर होता है। अतः स्मरण रखो कि अल्लाह तआला भली-भांति जानता है कि ऐसा हो सकता है कि चन्द्रमा फटे और फट कर भी संसार की व्यवस्था में विघ्न न पड़े। वास्तविकता यह है कि ये वस्तुओं के गुण हैं, कौन साहस कर सकता है। इसलिए ख़ुदा तआला के ख़वारिक (स्वभाव से हटकर होने वाले चमत्कार) और चमत्कारों का इन्कार करना और इन्कार के लिए जल्दी करना जलदबाज़ों और मूर्खों का कार्य है।

ख़ुदा की शक्तियों और चमत्कारों को सीमित समझना बुद्धिमत्ता नहीं

ख़ुदा की क़ुदरतों और चमत्कारों को सीमित समझना बुद्धिमत्ता नहीं। वह अपनी वास्तविकता न जानता है तथा न समझता है और आकाशीय बातों पर विचार प्रकट करता है। ऐसे ही लोगों के लिए कहा –

تو کار زمیں رانکو ساختی   کہ باآسمان نیز پرداختی*

मनुष्य का कर्तव्य है कि अपनी सामर्थ्य से बढ़कर कार्य न करे। अधिकांश रोग और बीमारियों के कारण और लक्षण डाक्टरों को मालूम नहीं, तो क्या ऐसी कमज़ोरी पर उसके लिए उचित है कि वह सामर्थ्य से बढ़ कर चले? कदापि नहीं अपितु बन्दगी का यही ढंग है कि سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَا कहने वालों के साथ हो। देखो सितारे जो इतने बड़े-बड़े पिण्ड हैं, आकश में बिना स्तम्भ के लटकते हैं तथा स्वयं आकाश बिना किसी सहारे के सहस्त्रों वर्ष से इसी प्रकार चले आए हैं। चन्द्रमा प्रतिदिन धुला-धुलाया निकलता है, सूर्य प्रतिदिन उदय होता है तथा उचित गति और उचित मार्ग पर चलता है। हमारे कार्यों में कोई न कोई ग़लती अवश्य हो जाती है परन्तु अल्लाह तआला के कार्य देखो कि यही चन्द्रमा और सूर्य अपने एक ही मार्ग पर चलते हैं। यदि प्रतिदिन इन बातों को सोचो कि सूर्य प्रतिदिन निर्धारित ढंग पर उदय होता है दिशाओं को बताता है तो पागल हो जाओ। देखो हम पर इतनी अवस्थाएं आती हैं और सूर्य पर कोई अवस्था नहीं आती। एक घड़ी जो दो हज़ार रुपए की हो यदि वह बारह के स्थान पर दस और दस के स्थान पर बारह बजाए तो बेकार और ख़राब समझी जाएगी, परन्तु ख़ुदा तआला की स्थापित की हुई घड़ी ऐसी है कि उसमें लेशमात्र अन्तर नहीं और न उसे किसी चाबी की

---

* अनुवाद :- तू पृथ्वी के कार्यों को भी भली भांति करता है और आकाशीय कार्यों में भी व्यस्त है। (अनुवादक)

आवश्यकता, न साफ़ करने की आवश्यकता। क्या ऐसे स्रष्टा की शक्तियों की गणना कर सकते हैं। मनुष्य स्तब्ध रह जाता है जब वह देखता है कि हमारी वस्तुएं कपड़े, बरतन इत्यादि जो प्रयोग में आते हैं घिसते रहते हैं, बच्चे जवान और वृद्ध होकर मरते हैं, परन्तु जो सूर्य कल उदय हुआ था आज भी वही सूर्य है और असंख्य युगों से इसी प्रकार चला आया है और चला जाएगा परन्तु उस पर कोई पिघलने इत्यादि की स्थिति या समय का प्रभाव नहीं होता, कितनी धृष्टता है कि एक कीड़ा होकर ख़ुदा की श्रेष्ठ हस्ती पर प्रहार करें और शीघ्र आदेश कर दें कि ख़ुदा में शक्ति नहीं।

नबियों के चमत्कारों का कारण

इस्लाम का ख़ुदा बड़ा शक्तिशाली ख़ुदा है। किसी को अधिकार प्राप्त नहीं कि उसकी शक्तियों पर ऐतिराज़ करे। नबियों को जो चमत्कार दिए जाते हैं उसका कारण यही है कि मानव-अनुभव पहचान नहीं सकते और मनुष्य जब इन अद्‌भुत बातों को देखता है तो एक बार तो यह कहने पर विवश हो जाता है कि वह ख़ुदा तआला की ओर से है परन्तु यदि अपनी बुद्धि का दावा करे और ख़ुदा को समझने में अग्रसर न हो तो दोनों और से मार्ग बन्द हो जाता है। एक ओर चमत्कारों का इन्कार, दूसरी ओर अपरिपक्व बुद्धि का दावा। जिसका परिणाम यह होता है कि वह अज्ञान मनुष्य इन सूक्ष्म से सूक्ष्म मर्म को ज्ञात करने की चिन्ता में लग जाता है जो चमत्कारों की तह में है, जिसकी फ़्लास्फ़ी पार्थिव बुद्धि और क्षुद्र विचारों पर प्रकट नहीं हो सकती, इससे वह इन्कार की ओर लौटते-लौटते नुबुव्वत के अस्तित्व का ही इन्कारी हो जाता है तथा सन्देहों और भ्रान्तियों का एक विशाल भंडार एकत्र कर लेता है जो उसके दुर्भाग्य का कारण हो कर रहता है। कभी यह कह देता है कि यह भी हम जैसा एक मनुष्य है जो खाता-पीता और मानव आवश्यकताएं रखता है, उसकी शक्तियां हम से अधिक क्यों कर हो सकती हैं? उस की

शक्तियों में आध्यात्मिक शक्ति और दुआओं में स्वीकारिता का प्रभाव विशेष तौर पर क्योंकर आ जाएगा? खेद! इस प्रकार की बातें बनाते हुए ऐतिराज़ करते हैं, जिस के कारण जैसा मैंने अभी कहा नुबुव्वत का ही इन्कार कर देते हैं। विचार करने और समझने का स्थान है कि साधारण तौर पर तो मानते नहीं और असाधारण तौर पर ऐतिराज़ करते हैं। अब यह जान-बूझ कर और स्पष्टतया नबियों के अस्तित्व का इन्कार नहीं तो और क्या है। क्या इन्हीं अक्लों और विवेकों पर गर्व है कि दार्शनिक होकर नास्तिक अथवा मूर्ति-पूजक हो गए। अल्लाह तआला की गुप्त शक्तियां कभी इल्हाम या वह्यी के अतिरिक्त अपना चमत्कार नहीं दिखा सकतीं, वे वह्यी और इल्हाम ही के रूप में दिखाई देती हैं।

बुद्धिमान वह है जो नबी को पहचान लेता है

यह ख़ुदा तआला की कृपा और उस की दयालुता की मांग है कि उसने संसार में अपने नबी भेजे। बुद्धिमान वह है जो नबी को पहचान लेता है, क्योंकि वह ख़ुदा को पहचानता है और मूर्ख वह है जो नबी का इन्कार करता है, क्योंकि नुबुव्वत का इन्कार ख़ुदा के इन्कार को अनिवार्य है और जो वली की पहचान करता है वह नबी की पहचान करता है। दूसरे शब्दों में यों कह सकते हैं कि नबी ख़ुदाई के लिए बतौर लौह स्तम्भ के है तथा वली नबी के लिए। अब तनिक ठंडे हृदय से विचार करो कि अल्लाह तआला ने तेरह सौ वर्ष पूर्व संसार में इस सिलसिले को प्रकट किया और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से प्रकट किया, परन्तु आज तेरह सौ वर्ष पश्चात् और इस समय कि चौदहवीं शताब्दी हिज्री के भी पन्द्रह वर्ष व्यतीत हो गए हैं, इस को आर्यों, ब्रह्म समाज वालों, नेचरियों, नास्तिकों अथवा ईसाइयों के समक्ष वर्णन करो तो वे हंस देते हैं और उपहास में उड़ा देते हैं। ऐसे संकट

के समय में कि एक ओर आधुनिक विद्याओं के प्रकाश, दूसरी ओर नेचरियों में एक विशेष क्रान्ति उत्पन्न हो जाने के पश्चात् विभिन्न सम्प्रदायों और धर्मों की बहुतात है इन बातों का प्रस्तुत करना और लोगों से स्वीकार कराना अत्यन्त जटिल बात हो गई थी तथा इस्लाम और उसकी बातें एक कहानी समझी जाने लगी थी, परन्तु अल्लाह तआला ने जो إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ (अलहजर : 10) का वादा देकर क़ुर्आन और इस्लाम की सुरक्षा का स्वयं उत्तरदायी होता है, मुसलमानों को इस संकट से बचा लिया तथा उपद्रव में न पड़ने दिया। अतः मुबारक हैं वे लोग जो इस सिलसिले को महत्व देते और इस से लाभान्वित होते हैं। बात यह है कि यदि सबूत न मिले तो यह बिल्कुल उचित है कि जैसी मानव स्वभाव की विशेषता है कि वह बदगुमानी की ओर तुरन्त लौटती है तो लोग आन्तरिक तौर ही एक कथा समझ कर क़ुर्आन और इस्लाम से पृथक हो जाते। उदाहरणतया देखो, यदि अन्दर आहट हो तो बाहर वाला अकारण सोचेगा कि अन्दर कोई व्यक्ति अवश्य है, परन्तु जब वह दो चार दिन तक देखता है कि अन्दर से कोई नहीं निकला तो फिर उसका विचार परिवर्तित होना आरम्भ हो जाता है। फिर वह अन्दर जाने के बिना ही समझ लेता है कि यदि मनुष्य होता तो उसे खाने-पीने की आवश्यकता होती और वह अवश्य बाहर आता। यदि नुबुव्वत के प्रकाश और बरकतें जो वलियों की वह्यी के रूप में आती हैं इस फ़्लास्फ़ी और प्रकाश के युग में प्रकट न होतीं तो मुसलमानों के बच्चे मुसलमानों के घर में रह कर इस्लाम और क़ुर्आन को एक कथा और वृत्तान्त समझ लेते तथा इस्लाम से उनका कोई सम्पर्क और सम्बंध न रहता इस प्रकार से मानो इस्लाम को समाप्त करने का सिलसिला स्थापित हो जाता, परन्तु नहीं! अल्लाह तआला का स्वाभिमान उसके वादे के निभाने का जोश कब ऐसा होने देता था जैसा कि अभी मैंने कहा कि ख़ुदा तआला ने वादा फ़रमाया कि (अलहजर :10) إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ

क़ुर्आन का नाम 'ज़िक्र' रखने का कारण

अब देखो क़ुर्आन करीम का नाम ज़िक्र रखा गया है इसलिए कि वह मनुष्य की आन्तरिक शरीअत स्मरण कराता है। जब जातिवाचक संज्ञा को मस्दर (उदगम, वह शब्द जिस से क्रियाएं और संज्ञाएं बनती हैं) के रूप में लाते हैं तो वह अतिशयोक्ति का काम देता है जैसे 'ज़ैदुन अदलुन' का अर्थ बना 'ज़ैद बहुत न्यायवान है'। क़ुर्आन कोई नवीन शिक्षा नहीं लाया अपितु उस आन्तरिक शरीअत को स्मरण कराता है जो मनुष्य के अन्दर विभिन्न शक्तियों के रूप में रखी हैं, शील है, त्याग है, वीरता है, बलात है, आक्रोश है, निस्पृहता है इत्यादि। अत: जो स्वभाव आन्तरिक तौर पर रखा गया था, क़ुर्आन ने उसे स्मरण कराया जैसे فِیۡ کِتٰبٍ مَّکۡنُوۡنٍ (अलवाक़िया:79) अर्थात प्रकृति के ग्रन्थ में कि जो किताब गुप्त थी और जिसे प्रत्येक मनुष्य नहीं देख सकता था, इसी प्रकार उस किताब का नाम ज़िक्र रखा ताकि वह पढ़ी जाए तो वह आन्तरिक और आध्यात्मिक शक्तियों और उस हृदय के प्रकाश को जो मनुष्य के अन्दर परमेश्वर प्रदत्त है स्मरण कराए। अत: अल्लाह तआला ने क़ुर्आन को भेज कर स्वयं एक आध्यात्मिक चमत्कार दिखाया ताकि मनुष्य उन आध्यात्म ज्ञानों, सच्चाइयों और आध्यात्मिक अद्‌भुत चमत्करों को ज्ञात करे जिन का उसे ज्ञान न था, परन्तु खेद कि क़ुर्आन के इस मूल उद्देश्य को छोड़ कर जो هُدًی لِّلۡمُتَّقِیۡنَ(ऐसे संयमियों और जो उपदेशों को सुनने वालों के लिए तैयार हों उनके लिए पथ प्रदर्शन करती है) है। इसे केवल कुछ कहानियों का संकलन समझा जाता है और नितान्त असावधानी और स्वार्थपरता से अरब के द्वैतवादियों की भांति पूर्वकालीन लोगों की पुस्तकें कह कर टाला जाता है। वह युग था आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अवतरण का और क़ुर्आन के उतरने का, जब वह संसार से लुप्त हो चुकी शक्तियों को स्मरण कराने के लिए आया था, अब वह युग आ गया जिसके

बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी की थी कि लोग क़ुर्आन पढ़ेंगे परन्तु क़ुर्आन उन के कंठ से नीचे नहीं उतरेगा।

इस युग में भी आकाश से एक शिक्षक आया

अत: अब तुम इन आंखों से देख रहे हो कि लोग कैसी मधुर आवाज़ और उत्तम उच्चारण के साथ पढ़ते हैं, परन्तु वह उनके कंठ से नीचे नहीं उतरता। इस लिए जैसे क़ुर्आन करीम जिस का दूसरा नाम ज़िक्र है उस प्रारम्भिक काल में मनुष्य के अन्दर गुप्त और लुप्त सच्चाइयों तथा धरोहरों को स्मरण कराने के लिए आया था। अल्लाह तआला के इस दृढ़ वादे के अनुसार कि إِنَّا لَهُ لَحٰفِظُوْنَ इस युग में भी एक शिक्षक आया जो وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ط का चरितार्थ और प्रतिज्ञात (वादा दिया गया) है। वह वही है जो तुम्हारे मध्य बोल रहा है। मैं पुन: रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी की ओर लौटते हुए कहता हूँ कि आप (स.अ.व.) ने इस युग के बारे में ही सूचना दी थी कि लोग क़ुर्आन को पढ़ेंगे, परन्तु वह उनके कंठ से नीचे न उतरेगा। अब हमारे विरोधी, नहीं नहीं अल्लाह तआला के वादों को महत्व न देने वाले और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बातों पर ध्यान ने देने वाले ख़ूब कंठ फुला-फुला कर يٰعِيْسٰٓى إِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ (आले इमरान : 56) और .... فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ क़ुर्आन में बड़े विचित्र उच्चारण के साथ पढ़ते हैं, परन्तु समझते नहीं। अफ़सोस तो यह है कि यदि कोई उपदेशक हमदर्द बन कर समझाना चाहे तो समझने का प्रयास ही नहीं करते। न करें, इतना तो करें कि तनिक उसकी बात ही सुन लें, परन्तु क्यों सुनें? वे सुनने वाले कान भी रखें, धैर्य और सद्भावना से भी काम लें। यदि ख़ुदा तआला कृपा के साथ पृथ्वी की ओर ध्यान न देता तो इस्लाम भी इस युग में अन्य धर्मों के समान निष्प्राण और कथा ही समझा जाता। कोई मुर्दा धर्म किसी अन्य को जीवन

नहीं दे सकता, परन्तु इस्लाम इस समय जीवन देने को तैयार है, परन्तु चूंकि यह अल्लाह का नियम है कि अल्लाह तआला कोई कार्य बिना कारणों के नहीं करता, हां यह बात पृथक है कि वे कारण हमें दिखाई दें या न दें, परन्तु इस में कोई सन्देह नहीं कि कारण अवश्य होते हैं। इसी प्रकार आकाश से प्रकाश उतरते हैं जो पृथ्वी पर पहुँच कर कारणों का रूप धारण कर लेते हैं। जब अल्लाह तआला ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के युग को अंधकार और पथ-भ्रष्टता में लिप्त पाया तथा चारों ओर से पथ-भ्रष्टता और अंधकार की घनघोर घटा संसार पर छा गई, उस समय इस अंधकार को दूर करने और पथ-भ्रष्टता को पथ-प्रदर्शन और सौभाग्य से परिवर्तित करने के लिए एक चमकता हुआ सूर्य फ़ारान की चोटियों पर चमका अर्थात् आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अवतरित हुए।

वर्तमान युग की अवस्था और सुधारक की आवश्यकता

और इसी प्रकार इस युग में जिसमें हम रहते हैं ईमानी शक्तियों के मुर्दा होने से उनका स्थान दुराचार और पापों ने ले लिया है, लोगों की समस्याएं एक ओर, उपासनाएं (इबादतें) दूसरी ओर अर्थात् प्रत्येक बात में दोष आ गया है। यदि केवल यही संकट होता तो कुछ हानि नहीं थी और न कुछ ख़तरा था, परन्तु इन समस्त बातों के अतिरिक्त सब से बड़ा संकट जिस का मुझे कई बार वर्णन करना पड़ा है जिसे इस्लाम का प्रत्येक हितैषी का हृदय महसूस कर चुका है या कर सकता है वह, वह विषाक्त प्रभाव है जो वर्तमान युग की भौतिक चिकित्सा, खगोलीय विद्या तथा झूठे दर्शनशास्त्र के कारण इस्लाम और मुसलमानों पर पड़ रहा है, विद्वान तो इस ओर ध्यान नहीं देते, उन्हें तो गृह-युद्धों, आन्तरिक विवादों और परस्पर कुफ़्रबाज़ी से अवकाश प्राप्त हो तो इधर ध्यान करें। संयमी यदि अपने एकान्तवास में दुआओं से काम लेते तो भी कुछ शुभ लक्षण पैदा होते, परन्तु वह पीर-पूजा और सुनने की वैधता

इत्यादि विवादों में लिप्त हैं। वास्तविक सूफ़ीवाद का स्थान अब कुछ रीति-रिवाजों ने ले लिया है जिन का क़ुर्आन और सुन्नत से पता नहीं लगता। अतः इस्लाम चारों ओर से अज्ञानियों और निकृष्ट लोगों की तलवार की ढाल बना हुआ है। ऐसे समय में कि वे आवश्यकताएं जो किसी सुधारक और रिफ़ार्मर के आगमन के लिए अनिवार्य हैं अपनी चरम सीमा को पहुँच गई हैं, प्रत्येक व्यक्ति स्वयं एक नया धर्म रखता है। इन समस्त बातों और परिस्थितियों पर अनुमान लगाते हुए इस्लाम का भविष्य समाप्ति के निकट दिखाई देता था, डाक्टर या वैद्य जब किसी हैज़े के रोगी का शरीर बर्फ़ के समान ठंडा या उसे सरसाम (एक रोग जिससे मस्तिष्क में सूजन आ जाती है) में ग्रस्त देखते हैं तो उसे असाध्य बता कर खिसक जाते हैं और उसकी जीर्ण दशा देख कर डाक्टर भी निराशा और हताशा प्रकट कर देता है। अब इस समय इस्लाम की दशा पर निःसन्देह उसका अन्त निराशा तक पहुँच गया था, परन्तु यदि वह भी मनुष्य के अपने विचारों का परिणाम या अपने प्रयासों का फल होता तो इन कष्टों और संकटों के मध्य कि उस पर चारों ओर से चोट पड़ती है और उसकी अपनी आन्तरिक स्थिति परस्पर वैमनस्य के कारण कमज़ोर हो गई है, ऐसी स्थिति में कम के कम इस्लाम का स्थापित रहना जिसे समाप्त करने के लिए विरोधियों ने एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया और लगा रहे हैं बहुत कठिन हो जाता है। कोई वर्ष नहीं जाता जब कि इस्लाम पर प्रहार करने की कोई नई योजना नहीं बनाई जाती। यदि कोई आविष्कार या नई स्कीम बनाई जाती है तो मूल को ध्यान में रख कर इस्लाम पर प्रहार कर दिया जाता है।

वर्तमान युग की प्रगति भी इस्लाम का एक चमत्कार है

अतः ऐसे उपद्रव के समय में निकट था कि शत्रु इकट्ठे होकर एक ही बार में मुसलमानों को विमुख कर देते, परन्तु अल्लाह तआला की असाधारण सहायता ने इस्लाम को सम्भाले रखा। यह भी एक सबूत है इस्लाम की

सच्चाई का, वर्तमान उन्नति भी इस्लाम का एक चमत्कार है। अतः देखो कि विरोधियों ने अपनी समस्त शक्तियां और ताक़तें, यहां तक कि तन, मन और धन तक भी इस्लाम को मिटाने में व्यय कर दिया, परन्तु अल्लाह तआला ने अपने वादे के अनुसार إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ अर्थात् ख़ुदा स्वयं ही उन स्वाभाविक प्रतीकों को याद दिलाने वाला है और वही संकट के समय सुरक्षा करेगा। इस्लाम की नौका ख़तरे में जा पड़ी थी। पादरीयों का प्रहार जिन्होंने करोड़ों रुपया व्यय करके तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के लाभ और वादे, यहां तक कि लज्जाजनक कामानन्द तक को दिखा कर लोगों को इस्लाम से बदगुमान करने का प्रयास किया और दूसरी ओर इस्लामी आस्थाओं को बदनाम करते हैं। देखो अनावृष्टि के कारण **इस्तिस्क़ा** की नमाज़ पढ़ी जाती है। यदि मशीन द्वारा वर्षा बरसाने में सफलता मिल जाए जैसा कि आजकल कुछ लोग अमरीका इत्यादि में प्रयास करते हैं तो इस प्रकार एक स्तम्भ टूट जाएगा।

इस उन्नति के युग में ख़ुदा ने इस्लाम को सहायताविहीन नहीं छोड़ा

अतः मैं कहां तक वर्णन करूँ इस्लाम पर चारों ओर से प्रहार हो रहे हैं और उसे बदनाम करने का प्रयास हां अनथक प्रयास किया जाता है, परन्तु उन लोगों की योजनाएं और स्कीमें क्या कर सकती हैं, ख़ुदा स्वयं उसे इन प्रहारों से सुरक्षित रखना चाहता है और इस प्रगति के युग में इस्लाम को सहायताविहीन नहीं छोड़ा अपितु उसने इस्लाम की रक्षा की, अपने सच्चे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वादों को सत्य सिद्ध किया, उसकी मुबारक भविष्यवाणियों की वास्तविकता प्रकट कर दी और इस शताब्दी में एक व्यक्ति पैदा कर दिया। मैं बारम्बार कहता हूँ कि वह वही है जो तुम्हारे मध्य बोल रहा है, वह इस्लाम में सत्य की रूह फूंक देगा, वह वही है जो

लुप्त हो चुकी सच्चाइयों को आकाशों से लाता है और लोगों तक पहुँचाता है, वह बदगुमानियों और ईमानी कमज़ोरियों का निवारण करना चाहता है।

बदगुमानी एक बहुत बुरी विपत्ति है

बदगुमानी एक ऐसा रोग है और ऐसी बुरी विपत्ति है जो मनुष्य को अंधा करके अंधकारमय कुएँ में गिरा देती है, बदगुमानी ही है, जिसने एक मुर्दा मनुष्य की उपासना कराई, बदगुमानी ही तो है जो लोगों को ख़ुदा तआला की उत्पन्न करने, दया और आजीविका प्रदान करने की विशेषताओं इत्यादि से निलंबित करके (हम ख़ुदा की शरण चाहते हैं) एक निलंबित व्यक्ति और निरर्थक वस्तु बना देती है। अत: इसी बदगुमानी के कारण नर्क का बहुत बड़ा भाग यदि कहूं समस्त भाग भर जाएगा तो अतिशयोक्ति नहीं। जो लोग अल्लाह तआला के मामूरों (आदिष्टों) से बदगुमानी करते हैं वे ख़ुदा तआला की नै'मतों और उसकी कृपा को तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं। अत: यदि कोई हमारे इस सिलसिले का जिसे अल्लाह तआला ने अपने हाथ से स्थापित किया इन्कार करे तो हमें अफ़सोस होता है कि हाय! एक आत्मा विनाश का द्वार खटखटाती है। यह सिलसिला ऐसा प्रकाशमान है कि यदि कोई व्यक्ति अभिलाषी हृदय के साथ हमारी बातों को दो घंटे भी सुने तो वह सत्य को प्राप्त कर लेगा।

चमत्कार अनेक प्रकार के होते हैं

अब मैं चाहता हूँ कि कुछ बातें और कह कर इस भाषण को समाप्त करूँ, मैं थोड़ी देर के लिए चमत्कारों के क्रम की ओर पुन: लौटते हुए कहता हूँ कि एक प्रकार के अद्‌भुत चमत्कार तो चन्द्रमा के फटने इत्यादि के ज्ञान संबंधी हैं तथा दूसरे सच्चाइयों और आध्यात्मिक ज्ञानों के। चमत्कारों की तीसरी श्रेणी नैतिक चमत्कार हैं। नैतिक चमत्कार बहुत प्रभावशाली होते हैं।

दार्शनिक लोग आध्यात्म ज्ञानों और सच्चाइयों से सन्तुष्ट नहीं हो सकते, परन्तु श्रेष्ठतम सदाचार उन पर बहुत बड़ा और गहरा प्रभाव करते हैं। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नैतिक चमत्कारों में से एक यह भी है कि एक बार आप(स.अ.व.) एक वृक्ष के नीचे सोए हुए थे कि अचानक एक कोलाहल से जाग गए जो क्या देखते हैं कि एक जंगली गंवार तलवार खींच कर हुज़ूर (स.अ.व.) पर आ पड़ा है, उसने कहा हे मुहम्मद! (स.अ.व.) बता इस समय तुझे मेरे हाथ से कौन बचा सकता है? आप (स.अ.व.) ने पूर्ण सन्तोष और सच्चे धैर्य से जो प्राप्त था फ़रमाया कि अल्लाह। आप का यह कहना सामान्य लोगों की भांति न था। अल्लाह जो ख़ुदा तआला का निजी नाम है (जाति वाचक संज्ञा) और जो सर्वगुण सम्पन्न है आप के मुख से इस प्रकार निकला कि हृदय से निकला और हृदय पर ही जाकर ठहरा। कहते हैं कि इस्मे आ'ज़म (सर्वोत्कृष्ट नाम) यही है तथा इसमें महान् बरकतें हैं परन्तु जिसे वह अल्लाह स्मरण ही न हो वह उससे क्या लाभ प्राप्त करेगा। अतः आप (स.अ.व.) के मुख से अल्लाह का शब्द इस प्रकार से निकला कि उस पर भय व्याप्त हो गया और हाथ कांप गया तलवार गिर पड़ी, हज़रत (स.अ.व.) ने वही तलवार उठा कर कहा अब बता मेरे हाथ से तुझे कौन बचा सकता है? वह कमज़ोर हृदय जंगली किसका नाम ले सकता था। अन्ततः आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने श्रेष्ठतम सदाचार के आदर्श का प्रदर्शन करते हुए कहा जा तुझे छोड़ दिया और कहा कि प्रेम और वीरता मुझे से सीख। इस नैतिक चमत्कार ने उस पर ऐसा प्रभाव डाला कि वह मुसलमान हो गया।

जीवनी में लिखा है कि अबुलहसन ख़रक़ानी के पास एक मनुष्य आया, मार्ग में शेर मिला और कहा कि अल्लाह के लिए मेरा मार्ग छोड़ दे शेर ने आक्रमण किया और जब कहा कि अबुल हसन के लिए छोड़ दे तो उस ने छोड़ दिया। कथित व्यक्ति के ईमान में इस परिस्थिति ने कालापन सा उत्पन्न

कर दिया और उसने सफ़र त्याग दिया, वापस आकर यह आस्था प्रस्तुत की। उसे अबुलहसन ने उत्तर दिया कि यह बात कठिन नहीं। अल्लाह के नाम से तू परिचित न था, अल्लाह का सच्चा भय और प्रताप तेरे हृदय में न था और मुझ से तू परिचित था, इसलिए तेरे हृदय में मेरा महत्व था. अतः अल्लाह के शब्द में बड़ी-बड़ी बरकतें और विशेषताएं हैं इस शर्त पर कि कोई उसे अपने हृदय में स्थान दे और उसकी वास्तविकता पर कान रखे।

इसी प्रकार आंहज़रत के नैतिक चमत्कारों में एक और चमत्कार भी है कि आप के पास एक समय बहुत सी भेड़ें थीं, एक व्यक्ति ने कहा - इस से पूर्व इतना माल किसी के पास नहीं देखा। हुज़ूर (स.अ.व.) ने वे सब भेड़ें उसे दे दीं, उसने तुरन्त कहा कि निःसन्देह आप सच्चे नबी हैं। सच्चे नबी के अतिरिक्त किसी अन्य से ऐसी दानशीलता का व्यवहार में आना कठिन है। अतः आंहज़रत (स.अ.व.) के सर्वोत्तम सदाचार ऐसे थे कि - وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ क़ुर्आन में आया।

हमारी जमाअत के लिए उचित है कि वह नैतिक उन्नति करे

अतः हमारी जमाअत के लिए उचित है कि वह नैतिक उन्नति करे क्योंकि الاستقامة فَوْقَ الْكرامة कहावत प्रसिद्ध है, वे याद रखें कि यदि उन पर कोई कठोरता करे तो यथासम्भव उसका उत्तर नम्रता और कृपालतापूर्वक दें, कठोरता और ज़बरदस्ती की आवश्यकता प्रतिशोध के तौर पर भी न पड़ने दें। मनुष्य में मनोवृत्ति भी है तथा उसके तीन प्रकार हैं - तामसिक वृत्ति, राजसिक वृत्ति, सात्विक वृत्ति। तामसिक वृत्ति की अवस्था में मनुष्य भावनाओं तथा व्यर्थ उद्वेगों को सम्भाल नहीं सकता और अनुमान से निकल जाता तथा नैतिक अवस्था से गिर जाता है परन्तु राजसिक वृत्ति में सम्भाल लेता है। मुझे एक वृत्तान्त याद आया जिसे सा'दी ने 'बोस्तान' में लिखा है कि एक बुज़ुर्ग को कुत्ते ने काटा, घर आया तो घर वालों ने देखा कि

उसे कुत्ते ने काट खाया है एक भोली–भाली छोटी लड़की भी थी वह बोली कि आप ने क्यों न काट खाया? उसने उत्तर दिया – बेटी मनुष्य से कुत्तपन नहीं होता। इसी प्रकार से मनुष्य को चाहिए कि जब कोई उद्दण्ड गाली दे तो मोमिन पर अनिवार्य है कि मुख फेर ले अन्यथा वही कुत्तपन का उदाहरण चरितार्थ होगा। ख़ुदा के सानिध्य प्राप्त लोगों को बड़ी–बड़ी गालियां दी गईं बहुत बुरी तरह पीड़ित किया गया, परन्तु उन्हें اَعۡرِضۡ عَنِ الۡجٰهِلِيۡنَ (गंवारों से मुख फेर ले। –अनुवादक)का ही आदेश हुआ। स्वयं उस 'इन्सान–ए–कामिल' (पूर्ण मनुष्य) हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अत्यधिक कष्ट दिए गए, गालियां, दुर्वाद और उद्दण्डताएं की गईं परन्तु उस साक्षात सादाचार रूपी हस्ती ने उसके मुकाबले में क्या लिया, उनके लिए दुआ की और चूंकि अल्लाह तआला ने वादा कर लिया था कि अशिष्टों से मुख फेर लेगा तो तेरे सम्मान और प्राण को हम सुरक्षित रखेंगे और यह बाज़ारी लोग उस पर आक्रमण न कर सकेंगे। अतः ऐसा ही हुआ कि हुज़ूर (स.अ.व.) के विरोधी आप के सम्मान को आघात न पहुंचा सके और स्वयं ही अपमानित और लज्जित होकर आपके पैरों पर गिरे या सामने तबाह हो गए। अतः यह विशेषता राजसिक वृत्ति की है। जो मनुष्य असमंजस में भी सुधार कर लेता है। प्रतिदिन की बात है यदि कोई अशिष्ट और दुराचारी गाली दे या कोई उपद्रव करे उस से जितना मुख फेरोगे उतना ही सम्मान सुरक्षित कर लोगे और उस से जितनी लड़ाई और मुकाबला करोगे तबाह हो जाओगे तथा अपमान खरीद लोगे। सात्विक वृत्ति की अवस्था में मनुष्य को दान–पुण्य में महारत हो जाती है, वह संसार और सांसारिक वस्तुओं से विरक्त हो जाता है और संसार में चलता फिरता और संसार वालों से मिलता–जुलता है, परन्तु वास्तव में वह यहां नहीं होता, जहां वह होता है वह संसार और ही होता है, वहां का आकाश और पृथ्वी और होती है।

सच्चे अहमदियों से ख़ुदा तआला का वादा

अल्लाह तआला ने क़ुर्आन में फ़रमाया है –

وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

यह सन्तोषजनक वादा नासिरा में जन्म लेने वाले इब्ने मरयम को दिया गया था परन्तु शुभ सन्देश देता हूँ कि यसू मसीह के नाम से आने वाले इब्ने मरयम को भी अल्लाह तआला ने इन्हीं शब्दों में सम्बोधित करके शुभ संदेश दिया है। अब आप विचार कर लें कि जो मेरे साथ संबंध रख कर इस महान् वादे और शुभ संदेश में सम्मिलित होना चाहते हैं क्या वे, वे लोग हो सकते हैं जो तामसिक वृत्ति की अवस्था में पड़े हुए पाप और दुराचार के मार्गों पर कार्यरत है? नहीं, कदापि नहीं। जो अल्लाह तआला के इस वादे को वास्तविक तौर पर महत्व देते हैं और मेरी बातों को कथा और कहानी नहीं समझते तो स्मरण रखो और कान खोल कर सुन लो, मैं पुनः एक बार उन लोगों को सम्बोधित करते हुए कहता हूँ जो मेरे साथ संबंध रखते हैं और वह संबंध कोई साधारण सम्बन्ध नहीं अपितु बहुत दृढ़ संबंध है और ऐसा संबंध है कि जिसका प्रभाव न केवल मुझ तक अपितु उस हस्ती तक पहुँचता है जिसने मुझे भी उस चुने हुए पूर्ण इन्सान की हस्ती तक पहुँचाया है जो संसार में सत्य और ईमानदारी की भावना लेकर आया, मैं तो यह कहता हूँ कि यदि इन बातों का प्रभाव मेरे ही अस्तित्व तक पहुँचता तो मुझे कुछ भी संशय और चिन्ता न थी और न उनकी परवाह थी परन्तु इस पर ही अन्त नहीं अपितु उसका प्रभाव हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और स्वयं ख़ुदा तआला की चुनी हुई हस्ती तक पहुंच जाता है। अतः ऐसी स्थिति में तुम भली-भांति ध्यान से सुन रखो कि यदि इस शुभ सन्देश से कुछ भाग प्राप्त करना चाहते हो और उस के चरितार्थ होने के अभिलाषी हो और इतनी बड़ी सफलता (कि प्रलय तक कुफ्रबाज़ों पर विजयी रहोगे) की सच्ची प्यास

तुम्हारे अन्दर है, तो फिर मैं इतना ही कहता हूं कि यह सफलता उस समय तक प्राप्त न होगी जब तक राजसिक वृत्ति की अवस्था से गुज़र कर सात्विक वृत्ति के मीनार तक न पहुँच जाओ।

इस से अधिक मैं और कुछ नहीं कहता कि तुम लोग एक ऐसे मनुष्य के साथ संबंध रखते हो जो ख़ुदा का मामूर (अदिष्ट) है। अत: उसकी बातों को हृदय के कानों से सुनो और उन का पालन करने के लिए तन-मन से तैयार हो जाओ ताकि उन लोगों में से न हो जाओ जो इक़रार के पश्चात् इन्कार की गन्दगी में गिर कर हमेशा का प्रकोप ख़रीद लते हैं। इति

(रिपोर्ट जलसा सालाना -1897 ई. पृष्ठ 62-100)

(3)

भाषण 30 दिसम्बर, 1897 ई.

हज़रत मसीह मौऊद(अ.) की अपनी जमाअत के लोगों के लिए सहानुभूति और हमदर्दी

वास्तविकता यह है कि हमारे मित्रों का संबंध हमारे साथ शरीर के अंगों की भांति है और यह बात हमारे दिन-प्रतिदिन के अनुभव में आती है कि एक छोटे से छोटे अंग उदाहरणतया उंगली ही में दर्द हो तो समस्त शरीर बेचैन और व्याकुल हो जाता है। अल्लाह तआला भली भांति जानता है कि ठीक उसी प्रकार हर समय और हर पल सदैव इसी चिन्ता में रहता हूं कि मेरे मित्र हर प्रकार के आराम और समृद्धि में रहें। यह सहानुभूति और हमदर्दी किसी बनावट और दिखावे की दृष्टि से नहीं अपितु जिस प्रकार मां अपने बच्चों में से प्रत्येक के आराम और चैन की चिन्ता में डूबी रहती है चाहे वे कितने ही क्यों न हों इसी प्रकार मैं ख़ुदा की ख़ातिर अपने मित्रों के लिए अपने हृदय में सहानुभूति और हमदर्दी पाता हूँ और यह हमदर्दी कुछ ऐसी आतुरता की अवस्था लिए होती है कि जब हमारे सज्जनों में से किसी का पत्र किसी प्रकार के कष्ट अथवा रोग संबंधी परिस्थितियों पर आधारित पहुँचता है तो स्वभाव में एक बेचैनी और घबराहट उत्पन्न हो जाती है और एक शोक और चिन्ता व्याप्त हो जाती है तथा ज्यों, ज्यों लोगों की संख्या बढ़ती जाती है उतना ही यह शोक और चिन्ता भी बढ़ती जाती है और कोई समय ऐसा खाली नहीं

रहता जब किसी प्रकार की चिन्ता और अफ़सोस संलग्न न हो क्योंकि इतने अधिक लोगों में से कोई न कोई किसी न किसी चिन्ता और कष्ट में ग्रस्त हो जाता है तथा उसकी सूचना पर इधर हृदय में व्याकुलता और बेचैनी उत्पन्न हो जाती है। मैं नहीं बता सकता कि कितने समय शोक और चिन्ताओं में गुज़रते हैं। चूंकि अल्लाह तआला के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसी हस्ती नहीं जो ऐसे अफ़सोस और चिन्ताओं से मुक्ति दे। इसलिए मैं हमेशा दुआओं में लगा रहता हूँ और सर्वप्रथम दुआ यही होती है कि मेरे मित्रों को शोक और चिन्ताओं से सुरक्षित रखे, क्योंकि मुझे तो उनकी ही चिन्ताएं शोक और संताप में डालती हैं फिर यह दुआ सामूहिक तौर पर की जाती है कि यदि किसी को कोई शोक और कष्ट पहुंचा है तो अल्लाह तआला उसे उससे मुक्ति दे। समस्त प्रयास और पूर्ण जोश यही होता है कि अल्लाह तआला से दुआ करूँ। दुआ की स्वीकारिता में बड़ी-बड़ी आशाएं हैं।

इल्हाम उजीबो कुल्ला दुआइका से अभिप्राय

अपितु मेरे साथ अल्लाह तआला का स्पष्ट वादा है कि أُجِيْبُ كُلَّ دُعَائِكَ (मैं तेरी प्रत्येक दुआ स्वीकार करूँगा। -अनुवादक) परन्तु मैं भली-भांति समझता हूँ कि कुल से अभिप्राय यह है कि जिनके न सुनने से हानि पहुँचती है परन्तु यदि ख़ुदा तआला प्रशिक्षण और सुधार चाहता है तो अस्वीकार करना ही दुआ की स्वीकारिता है। प्रायः मनुष्य किसी दुआ में अफल रहता है और समझता है कि ख़ुदा तआला ने दुआ अस्वीकार कर दी हालांकि ख़ुदा तआला उसकी दुआ सुन लेता है और वह स्वीकारिता अस्वीकारिता के रूप में ही होती है। क्योंकि इसके लिए अप्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष रूप में हित और भलाई उसकी अस्वीकारिता में है ही होती है। चूंकि मनुष्य सूक्ष्मदर्शी और दूरदर्शी नहीं अपितु बाह्य रूप पर मुग्ध है इसलिए उसके लिए उचित है कि जब ख़ुदा तआला से कोई दुआ करे और प्रत्यक्षतः वह उसके वांछित उद्देश्य के अनुकूल

फलदायक न हो तो ख़ुदा पर बदगुमान न हो कि उसने मेरी दुआ नहीं सुनी, वह तो प्रत्येक की दुआ सुनता है اُدْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَکُمْ ؕ फ़रमाता है। रहस्य और भेद यही होता है कि दुआ करने वाले के लिए अच्छाई और भलाई दुआ के रद्द होने में ही होती है।

दुआ के नियम

दुआ का नियम यही है। अल्लाह तआला दुआ स्वीकार करने में हमारे संशय और इच्छा के अधीन नहीं होता। देखिए बच्चे अपनी माताओं को कितने प्रिय होते हैं और वह चाहती हैं कि उन्हें किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचे, परन्तु यदि बच्चे व्यर्थ तौर पर आग्रह करें तथा रोकर तेज़ चाक़ू या अग्नि का प्रकाशित और चमकता हुआ अंगारा मांगें तो क्या मां बावजूद सच्चे प्रेम और वास्तविक हमदर्दी के कभी सहन करेगी कि उसका बच्चा अग्नि का अंगारा लेकर हाथ जला ले या चाकू की तेज़ धार पर हाथ मार कर हाथ काट ले। कदापि नहीं। इसी नियम से दुआ के स्वीकार होने का नियम समझ सकते हैं। मैं स्वयं इस बात का अनुभव रखता हूँ कि जब दुआ में कोई भाग हानिप्रद होता है तो वह दुआ कदापि स्वीकार नहीं होती है। यह बात भली प्रकार समझ में आ सकती है कि हमारा ज्ञान निश्चित और उचित नहीं होता। बहुत से कार्य हम ख़ुशी से मुबारक समझ कर करते हैं और अपने विचार में उन का परिणाम बहुत ही शुभ समझते हैं, परन्तु परिणाम स्वरूप वह एक चिन्ता और कष्ट बन कर संलग्न हो जाता है। अतः समस्त मानव इच्छाओं का सत्यापन नहीं कर सकते कि सब उचित हैं। चूंकि मनुष्य ग़लती और भूल का मिश्रण है इसलिए होना चाहिए और होता है कि कोई इच्छा हानिकारक होती है और यदि अल्लाह तआला उसे स्वीकार कर ले तो यह बात उसकी दया की विशेषता के बिल्कुल विपरीत है। यह एक सत्य और विश्वसनीय बात है कि ख़ुदा तआला अपने बन्दों की दुआओं को सुनता है और उन्हें स्वीकारिता से

सम्मानित करता है परन्तु हर शुष्क और तरल अर्थात् समस्त को नहीं, क्योंकि मनोवेग के कारण मनुष्य परिणाम और अन्त को नहीं देखता और दुआ करता है परन्तु अल्लाह तआला जो वास्तविक हितैषी और परिणामदर्शी है उन हानियों और दुष्परिणामों को दृष्टिगत रखकर जो उस दुआ के अन्तर्गत दुआ करने वाले को स्वीकारिता के रूप में पहुँच सकते हैं उसे रद्द कर देता है और यह दुआ का रद्द ही उसके लिए दुआ की स्वीकारिता होती है। अतः ऐसी दुआएं जिनमें मनुष्य दुर्घटनाओं और आघातों से सुरक्षित रहता है अल्लाह तआला स्वीकार कर लेता है परन्तु हानिकारक दुआओं को अस्वीकारिता के रूप में स्वीकार कर लेता है। मुझे यह इल्हाम अनेकों बार हो चुका है أُجِيبُ كُلَّ دُعَائِكَ दूसरे शब्दों में यों कहो कि प्रत्येक ऐसी दुआ जो वास्तव में लाभप्रद और लाभदायक है स्वीकार की जाएगी। मैं जब इस विचार को अपने हृदय में पाता हूँ तो मेरी आत्मा हर्षोल्लास से भर जाती है। जब मुझे सर्व–प्रथम यह इल्हाम हुआ, लगभग पच्चीस या तीस वर्ष का समय हुआ है तो मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि अल्लाह तआला मेरी दुआएं जो मेरे या मेरे सज्जनों के बारे में होंगी अवश्य स्वीकार करेगा, फिर मैंने सोचा कि इस मामले में कंजूसी नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह ख़ुदा का एक इनाम है और अल्लाह तआला ने संयमियों की विशेषता में फरमाया है وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ अतः मैने अपने मित्रों के लिए यह नियम बना रखा है कि चाहे वे स्मरण कराएं या न कराएं कोई बात ख़तरे वाली प्रस्तुत करें या न करें उनकी धार्मिक और भौतिक भलाई के लिए दुआ की जाती है।

दुआ की स्वीकारिता के भी कुछ नियम होते हैं

परन्तु यह बात भी हार्दिक तौर पर सुन लेना चाहिए कि दुआ के स्वीकार होने के लिए भी कुछ नियम होते हैं, उनमें से कुछ तो दुआ करने वाले के बारे में होते हैं और कुछ दुआ कराने वाले के संबंध में। दुआ कराने वाले के लिए

आवश्यक होता है कि वह ख़ुदा के भय और डर को दृष्टिगत रखे और उसकी अपनी निस्पृहता से भयभीत रहे तथा मैत्री और ख़ुदा की उपासना अपना आचरण बना ले, संयम और सत्य से ख़ुदा को प्रसन्न करे तो ऐसी स्थिति में दुआ के लिए स्वीकारिता का द्वारा खोला जाता है और यदि वह ख़ुदा तआला को क्रोधित करता है, उससे बिगाड़ और युद्ध करता है तो उसकी उद्दण्डता और दुराचार दुआ के मार्ग में एक बाधा और चट्टान हो जाते हैं और उसके लिए स्वीकारिता का द्वार बन्द हो जाता है। अतः हमारे मित्रों के लिए अनिवार्य है कि वे हमारी दुआओं को व्यर्थ होने से बचाएं और उन के मार्ग में कोई बाधा न डाल दें जो उनकी अशिष्ट गतिविधियों से पैदा हो सकती हैं।

संयम का मार्ग धारण करो, क्योंकि यही शरीअत का सार है

उनको चाहिए कि वे संयम का मार्ग धारण करें क्योंकि संयम ही एक ऐसी वस्तु है जिसे शरीअत का सार कह सकते हैं और यदि शरीअत (धार्मिक विधान) को संक्षिप्त तौर पर वर्णन करना चाहें तो शरीअत का मस्तिष्क संयम (तक़्वा) ही हो सकता है। तक़्वा (संयम) के स्तर और पद बहुत हैं परन्तु यदि सच्चा अभिलाषी हो कर प्रारम्भिक स्तर और पड़ावों को स्थायित्व और निष्कपटता से पार करे तो वह उस सत्य और सत्य की अभिलाषा के कारण श्रेष्ठ पदों को प्राप्त कर लेता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है - اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ जैसे अल्लाह तआला संयमियों की दुआओं को स्वीकार करता है, मानो यह उसका वादा है और उसके वादे भंग नहीं होते, जैसा कि फ़रमाया - اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ अतः जिस परिस्थिति में संयम की शर्त दुआ की स्वीकरिता के लिए एक पृथक न होने वाली शर्त है तो एक मनुष्य लापरवाह और पथ-भ्रष्ट होकर यदि दुआ को स्वीकार कराना चाहे तो क्या वह मूर्ख और अज्ञान नहीं है। अतः हमारी जमाअत पर अनिवार्य है कि यथासम्भव उनमें से प्रत्येक संयम के मार्गों पर चले ताकि दुआ की स्वाकारिता

का हर्षोल्लास प्राप्त करे और ईमान में अधिकता से भाग ले।

मानव मनोवृत्ति की तीन अवस्थाएँ

क़ुर्आन करीम से विदित होता है कि मानव मनोवृत्तियों की तीन अवस्थाएं हैं। प्रथम–तामसिक, द्वितीय– राजसिक, तृतीय– सात्विक। तामसिक वृत्ति की अवस्था में मनुष्य मानो शैतान के पंजे में फंसा होता है तथा उसकी ओर अत्यधिक झुकाव होता है, परन्तु राजसिक वृत्ति की अवस्था में वह अपनी ग़लतियों पर लज्जित और शर्मिन्दा होकर ख़ुदा की ओर झुकता है, परन्तु उस अवस्था में भी एक युद्ध रहता है। कभी शैतान की ओर झुकता है और कभी रहमान (ख़ुदा) की ओर, परन्तु सात्विक वृत्ति की अवस्था में वह ख़ुदा के दासों के वर्ग में सम्मिलित हो जाता है। यह मानो उच्च बिन्दु है जिसके सामने नीचे की ओर तामसिक है। इस तराज़ू के मध्य राजसिक है तो तराज़ू की जीभ की तरह है, निचले बिन्दु की ओर जितना झुकता है उतना ही अल्लाह तआला की ओर निकट होता जाता है तथा निचली और पार्थिव अवस्थाओं से निकलकर ऊपरी और आकाशीय वरदान से हिस्सा लेता है।

संसार की कोई वस्तु अलाभकारी नहीं

यह बात भी ख़ूब स्मरण रखना चाहिए कि हर बात में लाभ होता है। संसार में देख लो उच्च श्रेणी की वनस्पतियों से लेकर कीड़ों और चूहों तक भी कोई वस्तु ऐसी नहीं जो मनुष्य के लिए लाभ और फ़ायदे से खाली हो। ये समस्त वस्तुएं चाहे वे पार्थिव हैं अथवा आकाशीय, अल्लाह तआला की विशेषताओं के प्रतिबिम्ब और अवशेष हैं और जब विशेषताओं में लाभ ही लाभ है तो बताओ अस्तित्व में कितना लाभ और हित होगा। यहां यह बात भी स्मरण रखना आवश्यक है कि जिस प्रकार इन वस्तुओं से किसी समय हानि उठाते हैं तो अपनी ग़लती और अज्ञानता के कारण, इसलिए नहीं कि

वास्तव में उन वस्तुओं में हानि ही है, नहीं अपनी ग़लती और भूल से। इसी प्रकार हम अल्लाह तआला की कुछ विशेषताओं का ज्ञान न रखने के कारण कष्ट और संकटों में ग्रस्त होते हैं अन्यथा ख़ुदा तआला तो सरासर दया और कृपा है। संसार में कष्ट उठाने और दुःख पाने का यही रहस्य है कि हम अपने हाथों अपनी कुधारण और दोषपूर्ण ज्ञान के कारण संकटों में ग्रस्त होते हैं। अतः हम विशेषता संबंधी आँख के छिद्र से ही अल्लाह तआला को दयालु और कृपालु और असीम अनुमान से बाहर लाभप्रद हस्ती पाते हैं और इन लाभों से अत्यधिक लाभान्वित वही होता है जो उसके अधिक निकट होता जाता है और यह पद उन लोगों को ही प्राप्त होता है जो संयमी (मुत्तक़ी) कहलाते हैं तथा अल्लाह तआला के सानिध्य में स्थान पाते हैं। संयमी ज्यों-ज्यों ख़ुदा के निकट होता जाता है उसे हिदायत का एक प्रकाश प्राप्त होता है जो उसकी जानकारियों और बुद्धि में एक विशेष प्रकार का प्रकाश पैदा करता है और ज्यों-ज्यों दूर होता जाता है। उसके हृदय और मस्तिष्क पर एक विनाशकारी अंधकार अधिकार कर लेता है, यहां तक कि صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ का चरितार्थ हो कर अपमान और विनाश का पात्र बन जाता है, परन्तु उसकी तुलना में नूर और प्रकाश से लाभान्वित मनुष्य उच्च श्रेणी का आराम और सम्मान पाता है। अतः ख़ुदा तआला स्वयं फ़रमाता है يٰۤاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ارْجِعِيْۤ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً अर्थात् हे वह सात्विक वृत्ति जो सन्तोष प्राप्त है और फिर यह सन्तोष ख़ुदा के साथ पाया है। कुछ लोग शासन से प्रत्यक्षतया संतोष और तृप्ति प्राप्त करते हैं, कुछ की सन्तुष्टि और तृप्ति का कारण उनका माल और सम्मान हो जाता है और कुछ अपनी सुन्दर और होशियार सन्तान तथा नाती-पोतों को देख-देख कर बाह्य तौर पर सन्तुष्ट कहलाते हैं परन्तु यह आनंद और नाना प्रकार के सांसारिक आनन्द मनुष्य को सच्चा सन्तोष और सच्ची सन्तुष्टि नहीं दे सकते अपितु एक प्रकार के अपवित्र लालच उत्पन्न करके इच्छा और प्यास को

जन्म देते हैं जलंधर के रोगी की भांति उनकी प्यास नहीं बुझती, यहां तक कि उनको तबाह कर देती है, परन्तु यहां ख़ुदा तआला फ़रमाता है – वह मनोवृत्ति जिसने अपना सन्तोष ख़ुदा तआला में प्राप्त किया है यह बन्दे के लिए सम्भव है उस समय उसकी समृद्धि धन-सम्पत्ति के बावजूद सांसारिक प्रतिष्ठा, वैभव और ऐश्वर्य के होते हुए भी ख़ुदा ही में होती है। ये स्वर्ण आभूषण यह संसार और इसके धंधे उसकी वास्तविक सन्तुष्टि का कारण नहीं होते। अतः जब तक मनुष्य ख़ुदा तआला में ही सन्तोष और आराम नहीं पाता वह मुक्ति नहीं पा सकता, क्योंकि मुक्ति सन्तोष का ही एक पर्यायवाची शब्द है।

'नफ़से मुतमइन्ना' (सात्विक वृत्ति) के बिना मनुष्य मुक्ति नहीं पा सकता

मैंने कुछ लोगों को देखा और अधिकांश की परिस्थितियों का अध्ययन किया है। संसार में जो धन-दौलत और झूठे आनन्द तथा प्रत्येक प्रकार की नेमतें, सन्तान और नाती-पोते रखते थे, जब मरने लगे और उन्हें इस संसार को छोड़ जाने और साथ ही उन वस्तुओं से अलग होने और परलोक में जाने का ज्ञान हुआ तो उन पर उत्कंठा और अनुचित लालसाओं की अग्नि भड़की और ठंडी सांसें भरने लगे। अतः यह भी एक प्रकार का नर्क है जो मनुष्य के हृदय को सन्तुष्टि और सन्तोष नहीं दे सकता अपितु उसे घबराहट और बेचैनी की अवस्था में डाल देता है। इसलिए यह बात भी मेरे मित्रों की दृष्टि से ओझल नहीं रहना चाहिए कि प्रायः मनुष्य परिवार और दौलत के प्रेम हां अवैध और अनुचित प्रेम में ऐसा लीन हो जाता है तथा प्रायः इसी प्रेमावेश और नशे में ऐसे अनुचित कार्य कर गुज़रता है जो उसमें और ख़ुदा तआला में एक पर्दा पैदा कर देते हैं तथा उसके लिए एक नर्क तैयार कर देते हैं। उसे इस बात का ज्ञान नहीं होता, जब वह उन सब से सहसा पृथक किया जाता है उस पल से वह अवगत नहीं होता। तब वह एक बड़ी व्याकुलता में ग्रस्त हो जाता है।

यह बात बड़ी सरलता से समझ में आ सकती है कि जब किसी वस्तु से प्रेम हो तो उस से पृथकता और वियोग पर एक पश्चाताप और कष्टदायक शोक पैदा हो जाता है। यह बात अब ही नहीं अपितु तार्किक रूप रखती है जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ الَّتِیْ تَطَّلِعُ عَلَی الْاَفْـِٕدَةِ अत: यह वही अल्लाह को छोड़ कर उसके अतिरिक्त की प्रेम अग्नि है जो मानव-हृदय को जला कर राख कर देती है और एक आश्चर्यजनक प्रकोप और पीड़ा में ग्रस्त कर देती है। मैं पुन: कहता हूँ कि यह सरासर सत्य और निश्चित बात है कि सात्विक वृत्ति के अभाव में मनुष्य मुक्ति नहीं पा सकता।

'याअय्यतुहन्नफ़्सुलमुतमइन्न:' का आन्तरिक अर्थ

जैसा कि हम पूर्व में वर्णन कर चुके हैं कि तामसिक वृत्ति की अवस्था में मनुष्य शैतान का दास होता है और राजसिक वृत्ति में उसे एक पराक्रम और युद्ध करना पड़ता है। कभी वह विजयी होता है तो कभी शैतान, परन्तु सात्विक वृत्ति की अवस्था एक शान्ति और सन्तोष की अवस्था होती है कि वह आराम से बैठ जाता है। इसलिए इस आयत में कि يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ से स्पष्ट तौर पर ज्ञात होता है कि इस अन्तिम अवस्था में कितनी सन्तुष्टि होती है। अत: इसका अनुवाद यह है कि हे सात्विक वृत्ति (नफ़्सेमुतमइन्न:) ख़ुदा की ओर चली आ। प्रत्यक्ष तौर पर तो यह अर्थ है कि मृत्यु के अन्तिम क्षणों में ख़ुदा की ओर से आवाज़ आती है कि हे सात्विक वृत्ति अपने रब्ब की ओर चली आ, वह तुझ से प्रसन्न और तू उस से सन्तुष्ट। चूंकि क़ुर्आन के लिए प्रत्यक्ष और आन्तरिक दोनों है इसलिए आन्तरिक की दृष्टि से यह अर्थ है कि हे सन्तोष पर पहुँची हुई मनोवृत्ति अपने रब्ब की ओर चली आ। अर्थात् स्वाभाविक तौर पर तेरी यह अवस्था हो चुकी है कि तू सन्तोष और सन्तुष्टि के पद पर पहुँच गई है तथा तुझ में और ख़ुदा तआला में कोई दूरी नहीं है। लव्वाम: (राजसिक वृत्ति) की अवस्था में तो कष्ट होता है परन्तु सात्विक की

अवस्था में ऐसा होता है कि जैसे ऊपर से पानी गिरता है इसी प्रकार ख़ुदा का प्रेम मनुष्य के रोम-रोम में समा जाता है तथा वह ख़ुदा के प्रेम से जीवित रहता है, ख़ुदा के अतिरिक्त का प्रेम जो उस के लिए एक जलाने और नर्क को पैदा करने वाला होता है, उसके स्थान पर एक प्रकाश और नूर भर दिया जाता है, उसकी प्रसन्नता ख़ुदा तआला की और अल्लाह तआला की प्रसन्नता उसका उद्देश्य हो जाता है, ख़ुदा का प्रेम ऐसी अवस्था में उसके लिए बतौर प्राण होता है, जिस प्रकर जीवन के लिए जीवन के संसाधन आवश्यक हैं उसके जीवन के लिए ख़ुदा और केवल ख़ुदा ही की आवश्यकता होती है। दूसरे शब्दों में इसका अर्थ यह है कि ख़ुदा तआला ही उस की वास्तविक प्रसन्नता और पूर्ण आराम होता है।

मानव अस्तित्व का उद्देश्य

सात्विक वृत्ति का लक्षण यह है कि वह किसी बाह्य प्रेरणा के बिना ही ऐसा रूप धारण कर लेती है कि ख़ुदा के बिना रह नहीं सकती और यही मानव अस्तित्व का उद्देश्य है और ऐसा ही होना चाहिए। निश्चिन्त मनुष्य शिकार, शतरंज, गंजफ़ा (एक खेल जिसमें 96 गोल कार्ड होते हैं और तीन खिलाड़ी) इत्यादि मनोविनोद के कार्य अपने लिए पैदा कर लेते हैं, परन्तु सात्विक जब कि अवैध और अस्थायी और प्राय: शोक और बेचैनी पैदा करने वाले कामों से पृथक हो गया। अब अलग हो कर उसे पृथक किया हुआ संसार क्यों याद आए। इसलिए ख़ुदा ही से प्रेम हो जाता है। यह बात भी हृदय से समाप्त नहीं होना चाहिए कि प्रेम दो प्रकार का होता है। एक व्यक्तिगत प्रेम होता है तथा एक स्वार्थ से सम्बद्ध होता है या यों कहा कि उसका कारण केवल कुछ अस्थायी बातें होती हैं जिनके दूर होते ही वह प्रेम शिथिल होकर शोक और कष्ट का कारण हो जाता है, परन्तु व्यक्तिगत प्रेम वास्तविक शान्ति उत्पन्न करता है। चूंकि मनुष्य स्वाभाविक तौर पर ख़ुदा ही के लिए उत्पन्न हुआ है, जैसा कि फ़रमाया وَمَاخَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ इसलिए

ख़ुदा तआला ने उसके स्वभाव में ही अपने लिए कुछ न कुछ रखा हुआ है और अपने नितान्त गुप्त से गुप्त कारणों से उसे अपने लिए बनाया हुआ है। अत: जब मनुष्य झूठी और आडम्बरपूर्ण हां, अस्थायी और कष्ट पर समाप्त होने वाले प्रेमों से पृथक हो जाता है फिर वह ख़ुदा ही के लिए हो जाता है और स्वाभाविक तौर पर कोई दूरी नहीं रहती और ख़ुदा की ओर दौड़ा चला आता है। अत: इस आयत يَاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ में इसी की ओर संकेत है। ख़ुदा तआला का आवाज़ देना यही है कि मध्य का आवरण उठ गया और दूरी नहीं रही। यह संयम का अन्तिम पद होता है, जब वह सन्तोष और सन्तुष्टि पाता है। दूसरे स्थान पर क़ुर्आन करीम ने इस सन्तोष का नाम मुक्ति और स्थायित्व भी रखा है और اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ में उसी स्थायित्व या सन्तोष या मुक्ति की ओर सूक्ष्म संकेत है और स्वयं मुस्तक़ीम (सीधा) का शब्द बता रहा है।

चन्द्रमा का फटना तथा अग्नि के शीतल होने के चमत्कार भी भौतिक संसाधनों से रिक्त नहीं

यह सच्ची बात है कि ख़ुदा तआला असाधारण तौर पर कोई काम नहीं करता। वास्तविकता यह है कि वह कारण पैदा करता है चाहे हम उन कारणों से सूचित हों या न हों। अत: कारण अवश्य होते हैं। इसलिए चन्द्रमा का फटना अथवा يٰنَارُ كُوْنِىْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا के चमत्कार भी कारणों से खाली नहीं अपितु वे भी कुछ गुप्त से गुप्त कारणों के परिणाम हैं तथा सत्य और यथार्थ विज्ञान पर आधारित हैं। अदूरदर्शी और अंधे दर्शन के प्रेमी उसे नहीं समझ सकते। मुझे तो यह आश्चर्य होता है कि जिस स्थिति में यह एक बात मान्य है कि किसी वस्तु का ज्ञान होने से उस वस्तु का दुर्लभ होना अनिवार्य नहीं होता तो अज्ञान दार्शनिक इन कारणों की अज्ञानता पर जो उन चमत्कारों का कारण हैं मूल चमत्कारों का इन्कार करने का साहस करता है। हां हमारा यह विचार

है कि यदि अल्लाह तआला चाहे तो अपने किसी बन्दे को उन गुप्त कारणों से अवगत कर दे परन्तु यह कोई अनिवार्य बात नहीं है। देखो मनुष्य अपने लिए जब घर बनाता है तो जहां अन्य समस्त आराम के साधनों का ध्यान रखता है वहां सर्वप्रथम इस बात को भी दृष्टिगत रखता है कि अन्दर जाने और बाहर निकलने के लिए भी कोई द्वार बना ले और यदि अधिक सामान हाथी, घोड़े, गाड़ियां भी हैं तो यथायोग्य प्रत्येक वस्तु और सामान के निकलने और जाने के लिए द्वार बनाता है, न यह कि सांप की बांबी की तरह एक छोटा सा छिद्र।

बन्दगी प्रतिपालन के वरदान के अभाव में नहीं रह सकती

इसी प्रकार अल्लाह तआला के कार्य अर्थात् प्रकृति के नियम पर एक विशाल और गहरी दृष्टि डालने से हम ज्ञात कर सकते हैं कि उसने अपनी सृष्टि को उत्पन्न करके यह कभी नहीं चाहा कि वह बन्दगी से उद्दंण्ड होकर प्रतिपालन से सम्बद्ध न हो। प्रतिपालन ने बन्दगी को दूर करने का इरादा कभी नहीं किया। सच्चा दर्शन यही है। जो लोग बन्दगी को कोई स्थायी अधिकार वाली वस्तु समझते हैं वह बहुत ग़लती पर हैं ख़ुदा ने उसे ऐसा नहीं बनाया। हमारी जानकारियां, विचार और अक़्लों का परस्पर समान न होना तथा हर बात पर यथोचित और पूर्ण प्रकाश डालने के योग्य न होना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि बन्दगी प्रतिपालन के वरदान के अभाव में नहीं रह सकती। हमारे शरीर का कण-कण फ़रिश्तों का आदेश रखता है। यदि ऐसा न होता तो फिर दवा और उस से बढ़कर दुआ का नियम अलाभकारी और निष्प्राण होता।

पृथ्वी, आकाश और जो कुछ इन दोनों में है पर दृष्टि डालो और विचार करो कि क्या यह समस्त सृष्टियां स्वयं अपनी स्थापना और अपने अस्तित्व में स्थायी अधिकार रखती हैं या किसी की मुहताज हैं ?

समस्त सृष्टियां आकाशीय पिण्डों से लेकर पार्थिव तक अपनी-अपनी प्रकृति में ही बन्दगी का रंग रखती हैं। हर पत्ते से यह पता मिलता है तथा

प्रत्येक शाखा और आवाज़ से यह स्वर निकलता है कि शाने ख़ुदावन्दी अपना कार्य कर रही है, उसके बारीक से बारीक अधिकार जिन्हें हम विचार और शक्ति द्वारा वर्णन नहीं कर सकते अपितु पूर्ण रूप से समझ भी नहीं सकते अपना कार्य कर रहे हैं। अतः अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ अर्थात् अल्लाह तआला एक ऐसी हस्ती है जो सम्पूर्ण विशेषताओं का संग्रह और प्रत्येक दोष से पवित्र वही उपासना के योग्य है, उसी का अस्तित्व असंदिग्ध और स्पष्ट है, क्योंकि वह स्वयं जीवित और स्वयं से क़ायम है और उसके अतिरिक्त अन्य किसी वस्तु में स्वयं जीवित और क़ायम रहने की विशेषता नहीं पाई जाती। क्या मतलब कि अल्लाह तआला के बिना अन्य किसी में यह विशेषता दिखाई नहीं देती कि बिना किसी अनिवार्य कारण के स्वयं ही विद्यमान और क़ायम (स्थापित) हो या यह कि इस संसार को जो विशेष नीति और सुदृढ़ और संतुलित क्रम से बनाया गया है अनिवार्य कारण हो सके। अतः इस से विदित होता है कि ख़ुदा तआला के अतिरिक्त अन्य ऐसी कोई हस्ती नहीं है जो इन सृष्टियों में परिवर्तन और बदलाव कर सकती हो अथवा प्रत्येक वस्तु के जीवन का कारण और उस की स्थापना का कारण हो

वुजूदी धर्म सत्य से दूर चला गया है

इस आयत पर विचार करने से यह भी विदित होता है कि वुजूदी धर्म सत्य से दूर चला गया है तथा उसने ख़ुदाई गुणों के समझने में ठोकर खाई है, वह मालूम नहीं कर सकता कि उसने बन्दगी और शाने ख़ुदाई के रिश्ते पर ही ठोकर खाई है। वास्तविकता यह मालूम होती है कि उनमें से जो लोग कश्फ़ वाले हुए हैं तथा उनमें से घोर परिश्रम करने वालों ने मालूम करना चाहा तो बन्दगी और प्रतिपालन के रिश्ते में अन्तर न कर सके और वस्तुओं की सृष्टि को स्वीकार कर लिया।

क़ुर्आन करीम हृदय पर उतर कर जीभ पर आता है और हृदय का कितना संबंध था कि ख़ुदा की वाणी का पात्र हो गया। इस बारीक विवाद से वे धोखा खा सकते थे परन्तु बात यह है कि मनुष्य जब ग़लत समझ कर पग उठाता है तो फिर कठिनाइयों के भंवर में फंस जाता है, जैसा मैंने अभी वर्णन किया है। ख़ुदा तआला के अधिकार मनुष्य के साथ ऐसे बारीक से बारीक हैं कि कोई शक्ति उस का वर्णन नहीं कर सकती और यदि ऐसा होता तो उसका प्रतिपालन और सम्पूर्ण विशेषताएं क़ुर्आन में लिखित न पाई जातीं। हमारी नास्ति ही उस की हस्ती का प्रमाण है तथा यह एक सत्य बात है कि जब मनुष्य हर प्रकार से असहाय होता है तो उसका नास्ति होना ही होता है। इस सूक्ष्म रहस्य को कुछ लोग न समझकर خلق الاشیاء ھو عَیْنُہٗ कह उठते हैं। वुजूदी* और शुहूदी** में से वुजूदी तो वही है जो خلق الاشیاء ھو عَیْنُہٗ कहते और मानते हैं और शुहूदी वे हैं जो फ़ना नज़री (काल्पनिक तल्लीनता) को मानते हैं और कहते हैं कि प्रेम में मनुष्य इतनी तन्मयता कर सकता है कि वह ख़ुदा में तन्मय हो सकता है और फिर उसके लिए वह यह कहने के योग्य होता है कि –

من تن شدم تو جاں شدی۔ من تو شدم تومن شدی
تاکس نہ گوید بعد ازیں من دیگرم تو دیگری!***

इसके बावजूद ख़ुदाई अधिकारों को उन्हें भी स्वीकार करना पड़ता है चाहे वुजूदी हों या शुहूदी हों। इनके कुछ बुज़ुर्ग पारंगत बायज़ीद बस्तामी(रह)

---

* वह वर्ग जो वह आस्था रखता है कि ख़ुदा का अस्तित्व हो जो सामने दिखाई दे। (अनुवादक)

** सूफ़ियों की परिभाषा में वह वर्ग जिसे ख़ुदा का जल्वा अपितु प्रत्येक वस्तु बिल्कुल ख़ुदा दिखाई देती है। (अनुवादक)

*** अनुवाद– मैं तेरे लिए शरीर बन गया और तू मेरे लिए प्राण और मैं तेरा अस्तित्व बन गया और तू मेरा, ताकि इसके पश्चात् कोई यह न कहे कि मैं और तू अलग-अलग अस्तित्व हैं। (अनुवादक)

से लेकर शिब्ली(रह), ज़ुन्नून(रह) और मुहियुद्दीन इब्ने अरबी(रह) तक के प्रवचन सामान्यतया ऐसे हैं कि कुछ प्रत्यक्ष तौर पर और कुछ गुप्त तौर पर इसी ओर गए हैं। मैं यह बात और स्पष्ट करके वर्णन करना चाहता हूँ कि हमारा यह अधिकार नहीं कि हम उन्हें उपहास की दृष्टि से देखें। नहीं-नहीं वे बुद्धिजीवी थे। बात यों है कि ख़ुदा को पहचानने का यह एक सूक्ष्म और गहरा रहस्य था उसकी डोर हाथ से निकल गई थी। यही बात थी और कुछ नहीं। ख़ुदा के उच्च अधिकारों पर मनुष्य ऐसा लगता है जैसा कि स्वयं को तबाह करने वाला। उन्होंने मनुष्य को ऐसा देखा और उन के मुख से ऐसी बातें निकलीं और बुद्धि उस ओर फिर गई। अतः यह बात ध्यानपूर्वक स्मरण रखो कि मनुष्य आत्मशुद्धि से ऐसे पद पर पहुँचता है (जैसा कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस उच्चतम पद पर पहुँचे) कि जहां अधिकारिक शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु स्रष्टा और सृष्टि में एक अन्तर है और स्पष्ट अन्तर है उसे कभी हृदय से दूर नहीं करना चाहिए।

मनुष्य अस्तित्व को लगने वाले रोगों से स्वतंत्र नहीं। न यहां न वहां। खाता-पीता है, पाप होते हैं, छोटे पाप भी और बड़े पाप भी तथा इसी प्रकार परलोक में भी, कुछ नर्क में होंगे और कुछ स्थायी (अनश्वर) स्वर्ग में। तात्पर्य यह है कि मनुष्य कभी भी बन्दगी (दासता) के लिबास से बाहर नहीं हो सकता। तो फिर मैं नहीं समझ सकता कि वह कौन सा पर्दा है कि जब वह उतार कर प्रतिपालन का लिबास धारण कर लेता है। बड़े-बड़े संयमियों और तपस्वियों से दासता ही संलग्न रही।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रतिष्ठा

क़ुर्आन करीम को पढ़ कर देख लो। और तो और हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बढ़कर संसार में किसी पूर्ण इन्सान का आदर्श उपलब्ध नहीं और न भविष्य में प्रलय तक हो सकता है। फिर देखो

कि अधिकारिक चमत्कारों के मिलने पर भी हुज़ूर (स.अ.व.)के अस्तित्व के साथ हमेशा दासता संलग्न रही और हमेशा اَنَابَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ही फ़रमाते रहे। यहां तक कि कलिमा-ए-तौहीद (एकेश्वरवाद के वाक्य) में अपनी बन्दगी (दासता) के इक़रार का एक अनिवार्य भाग ठहराया, जिस के बिना मुसलमान, मुसलमान ही नहीं हो सकता। विचार करो! और पुनः विचार करो!! अतः जिस दशा में पूर्ण पथ-प्रदर्शक की जीवन पद्धति हमें यह शिक्षा दे रही है कि सानिध्य के श्रेष्ठ स्थान सानिध्य पर पहुँच कर बन्दगी के इक़रार को हाथ से नहीं जाने दिया तो और किसी का तो ऐसा सोचना और किसी का तो ऐसा सोचना और ऐसी बातों का हृदय में लाना ही व्यर्थ और निरर्थक है।

अधिकार के दो प्रकार

हां! यह सच्ची बात है जिस का कोई इन्कार नहीं कर सकता कि अल्लाह तआला के अधिकार असीम और असंख्य हैं, उनकी संख्या और गणना असम्भव है। मनुष्य जितना संयम और तपस्या करता है उतना ही वह अल्लाह तआला के निकट होता जाता है और इस दृष्टि से उन अधिकारों का एक रूप उस पर आता जाता है और उस पर अल्लाह के अधिकारों के ज्ञान का द्वार खुलता है इस बात का वर्णन कर देना भी यथोचित मालूम होता है कि अधिकार भी दो प्रकार के होते हैं। एक सृष्टि की दृष्टि से, दूसरे सानिध्य की दृष्टि से। नबियों के साथ एक अधिकार तो इसी सृष्टि की दृष्टि से होता है जो يَأْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِي فِي الْأَسْوَاقِ ط इत्यादि के रूप में होता है। स्वास्थ्य, रोग इत्यादि उसके ही अधिकार में होता है और एक नवीन अधिकार सानिध्य की श्रेणियों में होता है। अल्लाह तआला इस प्रकार उन के निकट होता है कि उनसे वार्तालाप और सम्बोधन आरम्भ हो जाते हैं और उनकी दुआओं का उत्तर मिलता है, परन्तु कुछ लोग नहीं समझ सकते और यहां तक ही नहीं अपितु केवल वार्तालाप और संबोधन से बढ़कर एक समय ऐसा आ जाता है

कि ख़ुदाई की चादर उन पर पड़ी हुई होती है और ख़ुदा तआला उन्हें अपनी हस्ती के तरह-तरह के नमूने दिखाता है तथा यह एक उचित उदाहरण इस सानिध्य और संबंध का है कि जैसे लोहे को किसी अग्नि में रख दें तो वह प्रभावित होकर लाल अग्नि का एक टुकड़ा ही दिखाई देता है, उस समय उस में अग्नि के समान प्रकाश भी होता है और जलाना जो अग्नि की एक विशेषता है वह भी इसमें आ जाती है परन्तु इसके बावजूद यह एक स्पष्ट बात है कि वह लोहा अग्नि या अग्नि का टुकड़ा नहीं होता।

मनुष्य द्वारा ऐसे कर्म कब होते हैं जो अपने अन्दर ख़ुदाई विशेषताएं रखते हैं

इसी प्रकार से हमारे अनुभव में आया है कि आध्यात्म ज्ञानी ख़ुदा के सानिध्य में ऐसे पद तक जा पहुँचते हैं जब कि ख़ुदाई का रंग मानव रंग-रूप को सर्वांगपूर्ण अपने रंग के नीचे समानान्तर कर लेता है और जिस प्रकार अग्नि लोहे को अपने नीचे ऐसे छुपा लेती है कि प्रत्यक्ष में अग्नि के अतिरिक्त और कुछ दिखाई ही नहीं देता और प्रतिबिम्बित तौर पर वह अपने अन्दर ख़ुदाई विशेषताओं का रंग पैदा करता है।

उस से उस समय बिना दुआ और विनती के ऐसे कार्य सामने आते हैं जो अपने अन्दर ख़ुदाई की विशेषताएं रखते हैं और वे मुख से ऐसी बातें निकालते हैं कि जिस प्रकार कहते हैं उसी प्रकार हो जाती हैं। क़ुर्आन करीम में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ और मुख से ऐसे कार्यों के होने की स्पष्ट बहस है जैसा कि مَارَمَيْتَ اِذْرَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ और ऐसा ही चन्द्रमा के फ़टने का चमत्कार और इसी प्रकार अधिकांश रोगियों और असहायों का अच्छा कर देना सिद्ध है। क़ुर्आन करीम में हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सन्दर्भ में यह प्रवचन हुआ कि مَايَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى यह उस दृढ़ और उच्चतम सानिध्य ही की ओर संकेत है

तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नितान्त आत्मशुद्धि और ख़ुदा के सानिध्य का एक सबूत है।

हदीस में आता है कि अल्लाह तआला मोमिन बन्दे के हाथ, पैर और आँखें इत्यादि, इत्यादि हो जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि समस्त अंग ख़ुदाई आज्ञाकारिता के रंग से ऐसे रंगीन हो जाते हैं कि जैसे वे एक ख़ुदाई आगमन हैं जिनके द्वारा समय-समय पर ख़ुदाई कार्य प्रकटित होते हैं अथवा एक स्वच्छ दर्पण हैं, जिसमें ख़ुदा की समस्त इच्छाएं पूर्ण स्वच्छता के साथ प्रतिबिम्ब स्वरूप प्रकटित होती रहती हैं या यों कहो कि उस अवस्था में यह अपनी मानवता से पूर्णतया पृथक हो जाते हैं जैसे जब मनुष्य बोलता है तो उसके हृदय में विचार होता है कि लोग उसकी अलंकृत सुगम भाषा, लालित्य तथा संभाषण कुशलता की प्रशंसा करें, परन्तु वे लोग जो ख़ुदा के कहने पर बोलते हैं तथा उनकी रूह जब जोश मारती है तब अल्लाह तआला ही की ओर से एक तरंग उसे प्रभावित करके आन्दोलित कर देती है तथा वे अपने स्वर और वार्ता से नहीं बोलते अपितु ख़ुदाई प्रेरणा से प्रेरित होकर बोलते हैं और इसी प्रकार जब वे देखते हैं तो जैसा कि नियम है कि देखने में विचार करना सम्मिलित है उन का देखना अपने अधिकार से नहीं अपितु ख़ुदा तआला के प्रकाश से। वह उन्हें ऐसी वस्तु दिखा देता है जो अन्य विचारशील दृष्टि भी नहीं देख सकती।

मोमिन के विवेक से डरना चाहिए

यह जो आया है कि اِتَّقُوْا فِرَاسَةَ الْمُؤْمِنِ अर्थात् मोमिन के विवेक से बचो, क्यों कि तुम्हारी प्रगति है और उसकी सुगति, तुम्हारा मौखिक कथन है, उसका कर्म। जैसे एक घड़ी चलती है, उसके पुर्ज़े तो उसे चलाते रहेंगे। बादल होने पर तुम तीन बजे के स्थान पर सात बजे का समय कह सकते हो परन्तु घड़ी जो इसी मतलब के लिए बनाई गई है वह

तो उचित समय बताएगी और ग़लती नहीं करेगी। अत: यदि उस से झगड़ा करोगे तो लज्जा के अतिरिक्त क्या लोगे? इसी प्रकार स्मरण रखो कि संयमी (मुत्तक़ी) का यह कार्य नहीं कि वह उन लोगों से झगड़ा करे और मुक़ाबला करे जो ख़ुदा के सानिध्य की श्रेणी रखते हैं और संसार में भिन्न-भिन्न नामों से पुकारे जाते हैं। अत: मौमिन के मुकाबले के समय डरो, इत्तक़ू (डरो) के चरितार्थ बनो, ऐसा न हो कि तुम झूठे निकलो और उस दुराचार के दुष्परिणाम भुगतो, क्योंकि मोमिन तो अल्लाह तआला के प्रकाश से देखता है और वह प्रकाश तुम्हें नहीं मिला। इसलिए तुम टेढ़े चल सकते हो, परन्तु मोमिन हमेशा सीधा ही चलता है। तुम स्वयं ही बताओ कि क्या वह मनुष्य जो अंधकार में चल रहा है उस व्यक्ति का मुकाबला कर सकता है जो दीपक के प्रकाश में जा रहा है? कदापि नहीं। अल्लाह तआला ने स्वयं फ़रमाया है - هَلۡ يَسۡتَوِى الۡاَعۡمٰى وَالۡبَصِيۡرُ ؕ क्या अंधा और दृष्टा समान हो सकते हैं? कदापि नहीं। अत: जब हम कारणों को देखते हैं तो कितनी ग़लती है कि हम उस से लाभ नहीं उठाते।

तात्पर्य यह है कि मोमिन के विवेक से डरना चाहिए तथा मोमिन के मुकाबले के लिए तैयार हो जाना मनीषी मनुष्य का कार्य नहीं। मोमिन की पहचान इन्हीं लक्षणों और निशानों से हो सकती है जो हम ने अभी वर्णन किए हैं। इसी ख़ुदाई फ़िरासत का भय था जो सहाबा रज़ि. पर था और ऐसा ही नबियों के साथ यह भय ख़ुदा के निशान के तौर पर आता है, वे पूछ लेते थे कि यदि यह ख़ुदा की वह्यी है तो हम विरोध नहीं करते और वे एक भय में आ जाते थे। वार्ताकार के महत्व के अनुसार उसकी वाणी में एक महानता और भय होता है। देखो सांसारिक शासकों के सामने जाते समय भी एक कष्ट और भय होता तथा विचार होता है कि उनके हाथ में लेखनी है। इसी प्रकार जो लोग यह ज्ञात कर लेते हैं कि मोमिन के साथ ख़ुदा है, वे उसका विरोध छोड़ देते हैं और यदि समझ में न आए तो अकेले बैठ कर उस पर विचार करते

हैं और मुकाबला करके सोचते हैं। यह अत्यन्त आवश्यक होता है कि मार्ग से परिचित और प्रकाश वाले के लिए दूसरे अधीन हो जाएं और यही हदीस اِتَّقُوْافِرَاسَةِالْمُوْمِنِ का आशय और अर्थ है अर्थात् जब मोमिन कुछ वर्णन करे तो ख़ुदा तआला से डरना चाहिए क्योंकि वह जो कुछ बोलता है वह ख़ुदा की तरफ से बोलता है। उद्देश्य यह है कि मोमिन जब ख़ुदा से प्रेम करता है तो ख़ुदाई प्रकाश उस पर व्याप्त हो जाता है, यद्यपि वह प्रकाश उसे अपने अन्दर छुपा लेता और उसके मानव होने को एक सीमा तक भस्म कर जाता है जैसे अग्नि में पड़ा हुआ लोहा हो जाता है परन्तु फिर भी वह दासता और मानवता समाप्त नहीं हो जाती। यही वह रहस्य है जो قُلْ اِنَّمَآ اَنَابَشَرٌ مِّثْلُكُمْ कि तह में केन्द्रित है। मानवता तो होती है परन्तु वह ख़ुदाई के रंग के नीचे छुप जाती है और उसकी समस्त शक्तियां और अंग ख़ुदा के मार्गों में ख़ुदा की इच्छाओं से युक्त हो कर उसकी इच्छाओं का चित्र हो जाते हैं और यही वह विशेषता है जो उसे करोड़ों लोगों के आध्यात्मिक प्रशिक्षण का अभिभावक बना देती है तथा पूर्ण प्रतिपालन का एक पात्र ठहरा देता है। यदि ऐसा न हो तो कभी भी एक नबी इतनी सृष्टि के लिए हादी और पथ-प्रदर्शक न हो सके। चूंकि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सम्पूर्ण विश्व के मनुष्यों के प्रशिक्षण के लिए आए थे, इसलिए यह रंग हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम में चरम सीमा तक विद्यमान था और यही वह पद है जिस पर क़ुर्आन करीम ने अनेकों स्थानों पर हुज़ूर के बारे में साक्ष्य दी है और अल्लाह तआला की विशेषताओं के मुक़ाबले पर और उसी रूप में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की विशेषताओं की चर्चा की है - مَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ (अलअंबिया :108)

''इन्नी रसूलुल्लाहे इलैकुम जमीअन'' के अर्थ

और इसी प्रकार फ़रमाया -

يَاَيُّهَاالنَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا क़ुर्आन करीम के अन्य स्थानों पर विचार करने से ज्ञात होता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने उम्मी (अनपढ़) फ़रमाया है। इसलिए कि ख़ुदा तआला के अतिरिक्त आप (स.अ.व.) का कोई शिक्षक न था, परन्तु इसके बावजूद कि आप अनपढ़ थे हुज़ूर के धर्म में अनपढ़ों मध्यम वर्ग के लोगों के अतिरिक्त उच्च वर्ग के दार्शनिकों और विद्वानों को भी कर दिया يَاَيُّهَاالنَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا के अर्थ अत्यन्त उत्तम तौर पर समझ में आ सकते हैं। جَمِيْعًا (जमीअन) के दो अर्थ हैं प्रथम - समस्त लोग अर्थात् समस्त सृष्टि, द्वितीय- समस्त वर्गों के लोगों के लिए अर्थात् मध्यम, निम्न स्तर तथा उच्च स्तर के दार्शनिकों तथा हर प्रकार की बुद्धि रखने वालों के लिए। अतः प्रत्येक बुद्धि और प्रत्येक स्वभाव का व्यक्ति मुझ से सम्पर्क कर सकता है।

क़ुर्आन करीम प्रत्येक प्रकार के अभिलाषी को अपने अभीष्ट तक पहुंचाता है

क़ुर्आन करीम को देखकर आश्चर्य होता है कि उस उम्मी (अनपढ़) ने किताब और हिकमत ही नहीं बताई अपितु आत्मशुद्धि के मार्गों से परिचित किया और यहां तक कि اَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ तक पहुँचा दिया देखो और ध्यानपूर्वक देखो कि क़ुर्आन करीम हर प्रकार के अभिलाषी को अपने अभीष्ट तक पहुँचाता और हर ईमानदारी और सच्चाई के प्यासे को तृप्त करता है, परन्तु विचार तो करो कि यह हिकमत और आध्यात्म ज्ञान का सागर सच्चाई उसी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जो एक ओर तो अनपढ़ कहलाता है और दूसरी ओर वे विशेषताएं और सच्चाइयां उस के मुख से निकल रही हैं कि संसार के इतिहास में उस का उदाहरण नहीं पाया जाता। यह अल्लाह तआला की बहुत बड़ी कृपा है, ताकि लोग महसूस करें

कि अल्लाह तआला के संबंध मनुष्य के साथ कहां तक हो सकते हैं ? इस वर्णन से हमारा उद्देश्य यह है कि अल्लाह तआला के संबंध बहुत गंभीर स्तर तक पहुंच जाते हैं। सानिध्य प्राप्त लोगों से ख़ुदाई का ऐसा संबंध हो जाता है कि सृष्टि-पूजक मनुष्य उन्हें ख़ुदा समझ लेते हैं। यह बिल्कुल उचित और सही है कि

مردانِ خدا، خدا نباشد　　　لیکن زخدا جدا نباشد*

ख़ुदा तआला उन के साथ इस प्रकार होता है कि दुआओं के बिना भी उनकी सहायता करता है। मूल बात यह है कि मनुष्य की उच्च श्रेणी वही सात्विक वृत्ति है जिस पर मैंने वार्ता आरम्भ की है, इसी दशा में और समस्त दशाओं से ऐसे कारण हो जाते हैं कि सामान्य ख़ुदाई संबंध से बढ़कर विशेष संबंध हो जाता है जो पार्थिव और महत्वहीन नहीं होता अपितु उच्च स्तरीय और आकाशीय संबंध होता है। तात्पर्य यह है कि यह सन्तोष जिसे मुक्ति और दृढ़ता भी कहते हैं तथा اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ (हमें सदमार्ग दिखा) में भी इसी की ओर संकेत है और इसी मार्ग के लिए दुआ की शिक्षा दी गई है और यह दृढ़ता का मार्ग उन लोगों का मार्ग है जिन पर इनाम किया गया है, अल्लाह तआला की अनुकम्पाओं और सम्मानों के पात्र है। इनाम प्राप्त लोगों का मार्ग विशेष तौर पर वर्णन करने का उद्देश्य यह था कि दृढ़ता के मार्ग भिन्न-भिन्न हैं परन्तु वह दृढ़ता जो सफलता और मुक्ति के मार्गों का नाम है वे नबियों के मार्ग हैं। इसमें एक और संकेत प्रती होता है कि 'इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम' में वह दुआ मनुष्य की जीभ, हृदय और कर्म से होती है और जब मनुष्य ख़ुदा से नेक होने की दुआ करे तो उसे लज्जा आती है, परन्तु यही एक दुआ है जो इन कठिनाइयों को दूर कर देती है। اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ तेरी ही उपासना करते हैं और तुझ से ही सहायता चाहते हैं।

---

* अल्लाह के वली ख़ुदा नहीं होते, परन्तु ख़ुदा के पृथक भी नहीं होते। (अनुवादक)

इय्याका ना'बुदो की इय्याका नस्तईन पर प्राथमिकता का कारण

اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ पर اِيَّاكَ نَعْبُدُ को प्राथमिकता इसलिए है कि मनुष्य दुआ के समय समस्त शक्तियों से काम लेकर ख़ुदा तआला की ओर आता है। यह एक असभ्यता और उद्दंडता है कि शक्तियों से तथा प्रकृति के निर्धारित नियमों से काम न लेकर आए। उदाहरणतया किसान यदि बीजारोपण करने से पूर्व ही यह दुआ करे कि हे ख़ुदा! इस खेत को हरा-भरा कर और फल-फूल ला, तो यह उद्दंडता और उपहास है। इसी को ख़ुदा की परीक्षा और आज़मायश कहते हैं जिससे रोका है और कहा गया है कि ख़ुदा की परीक्षा मत लो। जैसा कि मसीह अलैहिस्सालम के माइदह (भोजन का स्थाल) मांगने की कहानी में इस बात को स्पष्टता के साथ वर्णन किया गया है। इस पर विचार करो और सोचो।

दुआ से पूर्व मनुष्य को चाहिए अपनी आस्था, और कर्मों पर दृष्टि रखे

यह सत्य बात है कि जो व्यक्ति कर्मों से काम नहीं लेता वह दुआ नहीं करता अपितु ख़ुदा तआला की परीक्षा लेता है। अत: दुआ से पूर्व अपनी समस्त शक्तियों से काम लेना आवश्यक है और इस दुआ के यही अर्थ हैं। प्रथम अनिवार्य है कि मनुष्य अपनी आस्थाओं और कर्मों पर दृष्टि डाले क्योंकि ख़ुदा तआला का स्वभाव है कि सुधार कारणों की पद्धति पर होता है, वह कोई न कोई कारण पैदा कर देता है जो सुधार का साधन हो जाता है। वे लोग यहां तनिक विशेष ध्यान दें जो कहते हैं कि जब दुआ हुई तो कारणों की क्या आवश्यकता है वे अज्ञान लोग सोचें कि दुआ स्वयं एक गुप्त कारण है जो अन्य साधनों को उत्पन्न कर देता है और इय्याका ना'बुदो की प्राथमिकता

(पहले आना) इय्याका नस्तईन पर जो दुआ रूपी वाक्य है इस बात की विशेष तौर पर व्याख्या कर रहा है। अत: ख़ुदा का स्वभाव हम इसी प्रकार का देख रहे हैं कि वह साधनों को उत्पन्न कर देता है। देखो प्यास को बुझाने के लिए पानी और भूख मिटाने के लिए भोजन उपलब्ध करता है परन्तु साधनों के द्वारा। अत: यह साधनों का क्रम इसी प्रकार चलता है तथा साधनों की सृष्टि अवश्य होती है क्योंकि ख़ुदा तआला के ये दो नाम ही हैं जैसा कि मौलवी मुहम्मद अहसन साहिब ने वर्णन किया था कि كَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا 'अज़ीज़' तो यह है कि प्रत्येक काम कर देना और 'हकीम' यह कि प्रत्येक काम किसी युक्ति से यथास्थान उचित और अनुकूल कर देना। देखो वनस्पतियां, और स्थूल पदार्थों में भांति-भांति के गुण रखे हैं। रसौत को ही देखो एक-दो तोला मात्रा में दस्त ले आता है इसी प्रकार सक़मोनिया (एक प्रकार का गोंद) अल्लाह तआला इस बात पर तो समर्थ है कि यों ही दस्त आ जाए या प्यास बिना पानी के ही बुझ जाए, परन्तु चूंकि प्रकृति के चमत्कारों का ज्ञान कराना भी आवश्यक था क्योंकि प्रकृति के चमत्कारों का ज्ञान और जानकारी जितनी विशाल होती जाती है उतना ही मनुष्य अल्लाह तआला के गुणों से अवगत हो कर सानिध्य प्राप्त करने योग्य होता जाता है। चिकित्सा विज्ञान और खगोल विज्ञान से सहस्त्रों गुण मालूम होते हैं।

विद्याएं पदार्थों के गुणों का ही नाम है

विद्याएं हैं ही क्या? केवल वस्तुओं के गुणों ही का तो नाम है, उपग्रह, तारा, वनस्पति के प्रभाव यदि न रखता तो अल्लाह तआला के 'अलीम' (बहुत ज्ञान रखने वाला) गुण पर ईमान लाना मनुष्य के लिए कठिन हो जाता। यह एक निश्चित बात है कि हमारे ज्ञान का आधार वस्तुओं का प्रभाव है। इस का तात्पर्य यह है कि हम हिकमत सीखें। विद्याओं का नाम हिकमत भी रखा है। जैसा कि फ़रमाया - وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ط

(अलबक़र : 270) (और जिसे हिकमत प्रदान की गई हो तो (समझो कि) उसे (एक) बहुत ही लाभप्रद वस्तु मिल गई है। –अनुवादक)

इहदिनस्सिरातमुस्तक़ीम (हमें सदमार्ग पर चला) का उद्देश्य

अत: اِهۡدِنَاالصِّرَاطَالۡمُسۡتَقِیۡمَ का उद्देश्य यही है कि इस दुआ के समय उन लोगों के कर्म, सदाचार, आस्थाओं का अनुसरण करना चाहिए जिन पर इनाम किया गया, जहां तक मनुष्य से सम्भव हो आस्था, सदाचार और कर्मों से काम ले। इस बात को तुम अवलोकन द्वारा देख सकते हो कि जब तक मनुष्य अपनी शक्तियों से काम नहीं लेता वह उन्नति नहीं कर सकता या उन्हें मूल उद्देश्य और अभीष्ट से हटा कर उन से कोई अन्य कार्य लेता है जिस के लिए उन की सृष्टि नहीं हुई तो भी वे उन्नति के मार्ग में नहीं बढ़ेंगे। यदि आँख को चालीस दिन बन्द रखा जाएगा तो उसके देखने की शक्ति समाप्त हो जाएगी। अत: यह बात आवश्यक है कि प्रथम शक्तियों को उनके स्वाभाविक कार्यों पर लगाओ तो और भी मिलेगा। हमारा अपना व्यक्तिगत अनुभव है कि जहां तक क्रियात्मक शक्तियों से काम लिया जाए अल्लाह तआला उस पर बरकत उतारता है। आशय यही है कि प्रथम आस्थाओं, सदाचारों और कर्मों को ठीक करो फिर – اِهۡدِنَاالصِّرَاطَالۡمُسۡتَقِیۡمَ (हमें सीधे रास्ते पर चला–अनुवादक) की दुआ मांगो तो उसका प्रभाव पूर्ण तौर पर प्रकट होगा।

दयनीय उम्मत कहने का कारण

विशेष तौर पर ज्ञात होता है कि दयनीय उम्मत एक ऐसे युग में उत्पन्न हुई है कि जिसके लिए आपदाएं पैदा होने लगी हैं। मनुष्य की गति पापों की ओर ऐसी है जैसे कि एक पत्थर नीचे चला जाता है। दयनीय उम्मत इसलिए कहलाती है कि पापों की अधिकता हो गई। जैसा कि फ़रमाया – ظَهَرَ الۡفَسَادُ فِی الۡبَرِّ وَ الۡبَحۡرِ (ख़ुश्की और तरी में उपद्रव पैदा हो गया था)

तथा एक अन्य स्थान पर फ़रमाया يُحۡيِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا ؕ (पृथ्वी को उसकी मृत अवस्था के पश्चात् जीवित करता है) इन सब आयतों पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि इन दोनों आयतों में अल्लाह तआला ने दो नक्शे दिखाए हैं। प्रथम – में तो उस युग का जब कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पैदा हुए थे, उस समय भी संसार की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई थी। सदाचार, कर्म और आस्थाएं सब का नाम जाता रहा था, इसलिए इस उम्मत को दयनीय कहा गया, क्योंकि उस समय बड़ी दया की आवश्यकता थी और इसलिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाया कि مَاۤ اَرۡسَلۡنٰکَ اِلَّا رَحۡمَۃً لِّلۡعٰلَمِیۡنَ (अलअंबिया :108)

दया-योग्य उस व्यक्ति को कहते हैं जिसे सांपों की धरती पर चलने का आदेश हो अर्थात् बहुत बड़े ख़तरे और संकट सामने हों। अतः दयनीय उम्मत इसलिए कहा कि यह दया-योग्य है। जब मनुष्य को कठिन कार्य दिया जाता है तो वह कठिनाई दया-योग्य होती है। उद्दंडताओं में अनुभवी, दुष्चिंतक पापियों से मुक़ाबला ठहरा और फिर उम्मी जैसे कि हुज़ूर (स.अ.व.) ने फ़रमाया कि हम अनपढ़ हैं और हिसाब नहीं जानते अतः अनपढ़ों को उद्दंड क़ौमों का मुकाबला करना पड़ा जो छल-कपट और उद्दंडताओं में निपुण थे। इसलिए इसका नाम दयनीय उम्मत रखा। मुसलमानों को अत्यधिक प्रसन्न होना चाहिए कि ख़ुदा तआला ने उन्हें दया-योग्य समझा। पहले उपदेशक नबी ऐसे समयों में आते थे कि लोग छल-कपट से परिचित न होते थे और कुछ अपनी ही जाति में आते थे, परन्तु अब लोग छल-कपट और संसार की विद्याओं, कलाओं, दर्शन और विज्ञान में पारंगत हैं और सदात्माओं को इस संसार की आधुनिक विद्याओं और भौतिक अक़्लों से तथा उनकी जटिलतम योजनाओं और छल से बहुत कम अनुकूलता है। एक हदीस में आया है कि हे ईसा अलैहिस्सलाम! मैं तेरे पश्चात् एक उम्मत (जाति) को उत्पन्न करने वाला हूँ जो न बुद्धि रखेगी और न विद्या, अर्थात् अनपढ़ होगी। आप ने पूछा

يَارَبِّ كَيْفَ يَعْرِفُوْنَكَ हे अल्लाह! जब कि वह ज्ञान और बुद्धि से खाली होंगे तो तुझे क्योंकर पहचानेंगे? अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मैं अपना ज्ञान और बुद्धि दूँगा।

इस्लाम के विरोधियों को भौतिक विद्याओं से तथा अहले इस्लाम को आध्यात्मिक विद्याओं से अनुकूलता है

इससे बहुत बड़ा शुभ सन्देश मिलता है। जैसे हमारे विरोधियों को भौतिक विद्याओं से अनुकूलता है इसी प्रकार मुसलमानों को आध्यात्मिक विद्याओं से। एक गंवार मुसलमान के सच्चे स्वप्न बड़े-बड़े दार्शनिकों, विशपों और पंडितों के स्वप्नों से शक्ति में बढ़ कर हैं यह अल्लाह की कृपा है जिसे चाहता है देता है। अतः मुसलमानों पर अनिवार्य है कि अपने उस सच्चे उपकारी का आभार प्रकट करें, क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِىْ لَشَدِيْدٌ अर्थात् यदि तुम मेरा धन्यवाद करोगे तो मैं अपनी प्रदान की हुई ने'मत को अधिक करूँगा और कुफ्र की स्थिति में मेरा प्रकोप बहुत कठोर है। स्मरण रखो कि जब उम्मत को दयनीत उम्मत ठहराया गया है और उसे ईश्वर प्रदत्त ज्ञानों से सम्मानित किया है तो क्रियात्मक तौर पर धन्यवाद अनिवार्य है अतः اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ में समस्त मुसलमानों पर अनिवार्य है कि اِيَّاكَ نَعْبُدُ का ध्यान रखें क्योंकि اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ को اِيَّاكَ نَعْبُدُ से पहले रखा है। अतः पहले क्रियात्मक तौर पर कृतज्ञ होना चाहिए और यही अर्थ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ में रखा है अर्थात् दुआ से पूर्व भौतिक संसाधनों का उपयोग और ध्यान आवश्यक तौर पर रखा जाए, फिर दुआ की ओर लौटा जाए प्रथम आस्थाओं, सदाचार और आदतों का सुधार हो फिर اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ

सदाचार मनुष्य के नेक होने के प्रतीक हैं

अब मैं एक और आवश्यक अपितु अति आवश्यक बात वर्णन करना चाहता हूँ। हमारी जमाअत को चाहिए कि असावधानी और लापरवाही से न सुने। स्मरण रखो कि सदाचार मनुष्य के नेक और सदाचारी होने का प्रतीक हैं। सामान्यतया हदीस में मुसलमानों की यही परिभाषा आई है कि मुसलमान वही है जिसके हाथ, और जीभ से मुसलमान सुरक्षित रहें।

(यहां तक हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने भाषण दिया था कि नमाज़ अस्र का समय हो गया। अतः आपने और समस्त उपस्थित गण ने नितान्त निष्ठा और हार्दिक जोश से अस्र की नमाज़ अदा की और फिर सब के सब ध्यानपूर्वक मर्दे ख़ुदा की बातें सुनने लगे और आपने अपने भाषण को पुनः प्रारम्भ किया।) (सम्पादक)

मैंने इस बात को छोड़ा था कि اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ की दुआ सिखाने में ख़ुदा ने चाहा है कि मनुष्य तीन बातें अवश्य दृष्टिगत रखे- प्रथम - नैतिक स्थिति, द्वितीय - आस्थाओं की स्थिति, तृतीय - कर्मों की स्थिति। सामूहिक तौर पर यों कहो कि मनुष्य ख़ुदा की प्रदान की हुई शक्तियों के माध्यम से अपने वर्तमान का सुधार करे फिर अल्लाह तआला से मांगे। यह मतलब नहीं कि सुधार की दशा में दुआ न करे। नहीं, उस समय भी मांगता रहे। اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ में फासला नहीं है, हां इय्याका ना'बुदो में समय की प्राथमिकता है क्योंकि जिस स्थिति में जिसने अपनी दया से हमारी दुआ और याचना के बिना हमें मनुष्य बनाया और नाना प्रकार की शक्तियां और ने'मतें प्रदान कीं, उस समय हमारी दुआ न थी, उस समय ख़ुदा की कृपा थी और यही प्राथमिकता है।

करुणा के दो प्रकार - दयालुता और कृपालुता

यह स्मरण रहे कि दया दो प्रकार की होती है। प्रथम रहमानियत (दयालुता) द्वितीय - रहीमियत (कृपालुता) के नाम से नामित है। रहमानियत तो ऐसा वरदान है कि जो हमारे अस्तित्व और हस्ती से भी पूर्व आरम्भ हुआ। उदाहरणतया अल्लाह तआला ने सर्वप्रथम अपने अनादि ज्ञान से देख कर इस प्रकार का धरती और आकाश तथा भौतिक और अकाशीय वस्तुएँ ऐसी उत्पन्न की हैं जो सब हमारे काम आने वाली हैं और काम आती हैं और इन समस्त वस्तुओं से मनुष्य ही सामान्यतया लाभ प्राप्त करता है। भेड़, बकरी और अन्य जानवर जब कि स्वयं मनुष्य के लिए लाभप्रद वस्तु हैं तो वे क्या लाभ उठाते हैं? देखो शारीरिक बातों में मनुष्य कैसी-कैसी उत्तम और श्रेष्ठ श्रेणी का आहार खाता है, श्रेष्ठ श्रेणी का मांस मनुष्य के लिए है, टुकड़े और हड्डियाँ कुत्तों के लिए। शारीरिक तौर पर जो हर्ष और आनन्द मनुष्य को प्राप्त हैं, यद्यपि जानवर भी उसमें सम्मिलित हैं, परन्तु मनुष्य को वे उच्च स्तर पर प्राप्त हैं तथा आध्यात्मिक आनंदों में जानवर सम्मिलित भी नहीं हैं। अत: ये दो प्रकार की 'दया' है। एक वह जो हमारे अस्तित्व से पूर्व समय से पहले प्रथमता के रूप में तत्वों इत्यादि को पैदा किया, जो हमारे काम में कार्यरत हैं और ये हमारे अस्तित्व, इच्छा और दुआ से पूर्व हैं जो रहमानियत (दया) की मांग से पैदा हुए।

दूसरी दया रहीमियत (कृपा) की है अर्थात् जब हम दुआ करते हैं तो अल्लाह तआला देता है। विचार करो तो विदित होगा कि प्रकृति के नियम का संबंध सदैव से दुआ का संबंध है। कुछ लोग आजकल इसे बिदअत समझते हैं। हमारी दुआ का जो संबंध ख़ुदा तआला से है मैं चाहता हूँ कि उसका भी वर्णन करूँ।

एक बच्चा जब भूख से बेचैन होकर दूध के लिए चिल्लाता और चीखता

है तो मां के स्तनों में दूध जोश मार कर आ जाता है, बच्चा दुआ का नाम भी नहीं जानता, परन्तु उसकी चीखें दूध को क्यों खींच लाती हैं ? इस का प्रत्येक को अनुभव है। प्राय: देखा गया है कि माएं दूध को महसूस भी नहीं करतीं, परन्तु बच्चे की चिल्लाहट है कि दूध को खींच लाती है तो क्या हमारी चीखें जब ख़ुदा के समक्ष हों तो वे कुछ भी खींच कर नहीं ला सकतीं ? आता है और सब कुछ आता है परन्तु आँखों के अंधे जो विद्वान और फ़्लास्फ़र बने बैठे हैं वे देख नहीं सकते। बच्चे को जो अनुकूलता मां से है उस रिश्ते और संबंध को अपने मस्तिष्क में रख कर यदि दुआ की फ़्सास्फ़ी पर विचार करे तो वह बहुत सरल और आसान मालूम होता है। दूसरी प्रकार की दया यह शिक्षा देती है कि एक दया मांगने के पश्चात् उत्पन्न होती है, मांगते जाओगे मिलता जाएगा। اُدۡعُوۡنِیۡۤ اَسۡتَجِبۡ لَکُمۡ ؕ कोई वाचालता नहीं अपितु यह मानव स्वभाव की एक अनिवार्यता है।

माँगना मनुष्य की और स्वाकारिता अल्लाह तआला की विशेषता है

मांगना मनुष्य की विशेषता है और स्वीकार करना अल्लाह तआला की। जो नहीं समझता और नहीं मांगता वह झूठा है। बच्चे का उदाहरण जो मैंने वर्णन किया है वह दुआ की फ़्लास्फ़ी को उत्तम तौर पर स्पष्ट करता है। रहमानियत और रहीमियत दो नहीं हैं। अत: जो एक को छोड़कर दूसरी को चाहता है उसे मिल नहीं सकता। रहमानियत की मांग यही है कि वह हमारे अन्दर रहीमियत से लाभ उठाने की शक्ति पैदा कर दे। जो ऐसा नहीं करता वह ने'मत का कृतघ्न है। इय्याका ना'बुदो के यही अर्थ हैं कि हम तेरी उपासना करते हैं। इन बाह्य संसाधनों और कारणों के उपयोग से जो तूने प्रदान किए हैं। देखो यह जीभ जो नाड़ियों और मांस पेशियों से सृष्टि की है, यदि ऐसी न होती तो हम बोल न सकते, ऐसी जीभ दुआ के लिए प्रदान की जो हृदय

के विचारों तक को प्रकट कर सके। यदि हम दुआ का काम जीभ से कभी न लें तो यह हमारा दुर्भाग्य है। बहुत से रोग ऐसे हैं कि यदि वे जीभ को लग जाएं तो सहसा ही जीभ अपना कार्य छोड़ बैठती है, यहां तक कि व्यक्ति गूंगा हो जाता है। अतः यह कैसी करुणा (रहीमियत) है कि हमें जीभ दे रखी है। इसी प्रकार कानों की बनावट में विकार आ जाए तो कुछ भी सुनाई न दे, ऐसा ही हृदय का हाल है, वह जो विनय और गिड़गिड़ाने की अवस्था रखी है तथा सोच-विचार की शक्तियां रखी हैं यदि रोग आ जाए तो वे सब लगभग बेकार हो जाती हैं। पागलों को देखो कि उन की शक्तियां कैसी बेकार हो जाती हैं तो क्या हम पर अनिवार्य नहीं इन ख़ुदा की प्रदान की हुई अनुकम्पाओं को महत्व दें? यदि वे शक्तियां जो ख़ुदा ने अपनी कृपा से हमें प्रदान की हैं बेकार छोड़ दें तो निःसन्देह हम ने'मत के कृतघ्न हैं। अतः स्मरण रखो यदि अपनी शक्तियों और ताकतों को निलम्बित करके दुआ करते हैं, क्योंकि हमने जब प्रथम अनुदान से कुछ काम नहीं लिया तो दूसरे को कब अपने लिए लाभप्रद और उपयोगी बना सकेंगे।

''हमें सदमार्ग पर चला'' में मनुष्य को ख़ुदा तआला से सद्बुद्धि मांगने का निर्देश दिया है

अतः اِيَّاكَ نَعۡبُدُ बता रहा है कि हे समस्त संसारों के प्रतिपालक! तेरे पहले अनुदान को भी हम ने बेकार और नष्ट नहीं किया اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ में यह निर्देश दिया है कि मनुष्य ख़ुदा तआला से सच्ची प्रतिभा मांगे, क्योंकि यदि उसकी कृपा और दया सहायक न हो तो असहाय मनुष्य ऐसे अंधकार में ग्रसित है कि वह दुआ ही नहीं कर सकता। अतः जब तक मनुष्य ख़ुदा की इस कृपा को जो रहमानियत के वरदान से उसे प्राप्त हुई है काम में लाकर दुआ न मांगे कोई उत्तम परिणाम नहीं निकाल सकता।

काफ़ी समय हुआ मैंने अंग्रेज़ी कानून में देखा था कि तक़ावी* के लिए प्रथम कुछ सामान दिखाना आवश्यक होता है इसी प्रकार प्रकृति के नियम की ओर देखो जो कुछ हमें पहले मिला है उससे क्या बनाया? यदि बुद्धि चेतना, आँख-कान रखते हुए नहीं बहके हो और मूर्खता तथा पागलपन की ओर नहीं गए तो दुआ करो तो और भी ख़ुदा का वरदान मिलेगा अन्यथा वंचित होने तथा दुर्भाग्य के लक्षण हैं।

हिकमत का अर्थ

प्राय: हमारे मित्रों को ईसाइयों से काम पड़ेगा, वे देखेंगे कि अज्ञानियों में कोई भी बात ऐसी नहीं जो नीतिवान ख़ुदा की ओर सम्बद्ध हो सके। 'हिक्मत' के अर्थ क्या हैं وَضعُ الشَّیءِ فی محلہ (किसी वस्तु को यथास्थान रखना) परन्तु उनमें देखोगे कि कोई कार्य और आदेश भी इसका चरितार्थ दृष्टिगोचर नहीं होता। اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ पर जब हम ध्यानपूर्वक विचार करते हैं तो स्पष्ट आदेश के संकेत के तौर ज्ञात होता है कि प्रत्यक्षतया तो इस से दुआ करने का आदेश मालूम होता है कि सद्मार्ग का पथ-प्रदर्शन मांगने की शिक्षा है, परन्तु اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ उस के पहले यह बता रहा है कि इस से लाभ उठाएं अर्थात् सद्मार्ग की श्रेणियों के लिए उचित शक्तियों से काम लेकर ख़ुदा की सहायता की याचना करना चाहिए।

सदाचार से क्या अभिप्राय है

अब सोचना चाहिए कि वे कौन सी बातें हैं जो मांगनी चाहिएं। प्रथम - सदाचार जो मनुष्य को मनुष्य बनाता है। सदाचार से कोई नर्मी करना ही न समझ ले। **'ख़ुल्क़'** और **'ख़ल्क़'** दो शब्द हैं जो एक दूसरे के मुकाबले के

---

* वह सरकारी क़र्ज़ जो किसानों को खेती सुधारने के लिए बतौर सहायता दिया जाता है। (अनुवादक)

अर्थों को सिद्ध करते हैं। **'ख़ल्क़'** प्रत्यक्ष पैदायश का नाम है। जैसे कान-नाक यहां तक कि बाल इत्यादि भी सब ख़ल्क़ में सम्मिलित हैं और **'ख़ुल्क़'** आन्तरिक पैदायश का नाम है। इसी प्रकार आन्तरिक शक्तियां जो मनुष्य और मनुष्य के अतिरिक्त में अन्तर करती हैं वे सब ख़ुल्क़ में सम्मिलित हैं यहां तक कि बुद्धि, विचार इत्यादि समस्त शक्तियां ख़ुल्क़ में ही सम्मिलित हैं।

'ख़ुल्क़' से मनुष्य अपनी मानवता को ठीक करता है। यदि मनुष्यों के कर्तव्य न हों तो मानना पड़ेगा कि आदमी है? गधा है? या क्या है? जब ख़ुल्क़ में अन्तर आ जाए तो फिर आकृति ही रहती है। उदाहरणतया बुद्धि मारी जाए तो पागल कहलाता है, केवल प्रत्यक्ष आकृति से ही मनुष्य कहलाता है। अत: सदाचार से अभिप्राय ख़ुदा तआला की प्रसन्नता चाहने (जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क्रियात्मक जीवन में साक्षात दिखाई देता है) की प्राप्ति है। इसलिए आवश्यक है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवन शैली के अनुसार अपना जीवन ढालने का प्रयास करे। ये सदाचार बतौर आधार के हैं यदि ये लड़खड़ाते रहे तो उस पर इमारत खड़ी नहीं कर सकते। सदाचार एक ईंट पर दूसरी ईंट का रखना है, यदि एक ईंट टेढ़ी हो तो समस्त दीवार टेढ़ी रहती है, किसी ने क्या अच्छा कहा है -

خشت اوّل چوں نہد معمار کج   تاثریاے زود دیوار کج*

सर्वांगपूर्ण आदर्श और उदाहरण आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं जो समस्त सदाचार में पूर्ण हैं

इन बातों को नितान्त ध्यान से सुनना चाहिए। अधिकांश लोगों को मैंने देखा और ध्यान से अध्ययन किया है कि कुछ लोग दानशीलता से तो काम लेते हैं परन्तु साथ ही क्रोधी और तुरन्त बुरा मान जाने वाले हैं, कुछ

---

* यदि राज प्रथम ईंट ही टेढ़ी रखेगा तो वह दीवार सुरैया नक्षत्र की ऊँचाई तक भी चली जाए तब भी टेढ़ी ही रहेगी। (अनुवादक)

लोग सहनशील तो हैं, परन्तु कंजूस हैं, कुछ आक्रोश और क्रोध की दशा में डन्डे मार-मार कर घायल कर देते हैं परन्तु आवभगत और विनम्रता नाम के लिए भी नहीं, कुछ को देखा है कि उनमें आदर-सत्कार और विनम्रता तो अत्यधिक हैं परन्तु साहस नहीं है, यहां तक प्लेग और हैज़े का नाम भी सुन ले तो दस्त लग जाते हैं। मैं यह नहीं सोचता कि जो ऐसी स्थिति में साहस नहीं दिखाता उसका ईमान नहीं। आदरणीय सहाबा रज़ि. में भी ऐसे कुछ लोग थे कि उन्हें लड़ाई की शक्ति और अनुभव न था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन्हें विवश समझते थे। ये सदाचार बहुत है। मैंने सर्वधर्म महोत्सव के भाषण में उन सब का स्पष्ट तौर पर और विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। प्रत्येक मनुष्य सर्वगुण सम्पन्न भी नहीं और बिल्कुल वंचित भी नहीं है। सम्पूर्ण आदर्श और उदाहरण रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं जो कुल सदाचारों में पूर्ण थे। इसलिए आप (स.अ.व.) की प्रतिष्ठा में फ़रमाया - اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ (अलक़लम :5) (तू नितान्त उच्च श्रेणी के सदाचारों पर स्थापित है। -अनुवादक)

रसूले करीम (स.अ.व.) **और हज़रत मसीह के सदाचारों की तुलना**

एक समय है कि आप अलंकृत सुगम शैली से एक वर्ग को आश्चर्य चकित करके जड़वत कर रहे हैं, एक समय आता है कि तीर और तलवार के मैदान में बड़ी वीरता दिखाते हैं, दानशीलता पर आते हैं तो स्वर्ण पर्वत दान करते हैं, सहनशीलता में अपनी प्रतिष्ठा दिखाते हैं तो बध-योग्य को छोड़ देते हैं। अत: रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अद्वितीय और पूर्ण आदर्श है जो ख़ुदा तआला ने दिखा दिया है। उसका उदाहरण एक बड़े महावृक्ष का है जिसकी छाया में बैठकर मनुष्य उसकी प्रत्येक भाग से अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण कर ले, उसका फल, उसका फूल, उसकी छाल,

उसके पत्ते, तात्पर्य यह कि प्रत्येक वस्तु लाभप्रद हो। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस महावृक्ष के समान हैं जिसकी छाया ऐसी है कि उसमें करोड़ों लोग मुर्गी के परों की तरह आराम और शरण लेते हैं। लड़ाई में सब से बहादुर वह समझा जाता था जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास होता था, क्योंकि आप बड़े भयंकर स्थान पर होते थे। सुब्हान अल्लाह! क्या शान है। 'उहद' में देखो कि तलवारों पर तलवारें पड़ती हैं। ऐसा घमासान का युद्ध हो रहा है कि सहाबा रज़ि. सहन नहीं कर सकते, परन्तु यह योद्धा सीना तान कर लड़ रहा है। इसमें सहाबा रज़ि. का दोष न था। अल्लाह तआला ने उन्हें क्षमा कर दिया अपितु इसमें रहस्य यह था कि ताकि इसमें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बहादुरी का नमूना दिखाया जाए। एक अवसर पर तलवार पर तलवार पड़ती थी और आप नुबुव्वत का दावा करते थे कि मुहम्मद रसूलुल्लाह मैं हूँ। कहते हैं हज़रत (स.अ.व.) के मस्तक पर सत्तर घाव लगे परन्तु घाव हल्के थे। यह महान् शिष्टाचार था।

एक समय आता है कि आप (स.अ.व.) के पास इतनी भेड़-बकरियां थीं कि 'क़ैसर' तथा 'किस्रा' के पास भी न हों आप (स.अ.व.) ने वह सब एक भिखारी को दे दीं। अब यदि आप (स.अ.व.) के पास न होता तो क्या देते। यदि शासन का रंग न होता तो यह कैसे सिद्ध होता कि आप बध-योग्य मक्का के काफ़िरों को प्रतिशोध में समर्थ होने के बावजूद क्षमा कर सकते हैं, जिन्होंने आदरणीय सहाबा रज़ि. और हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम तथा मुसलमान स्त्रियों को कठिन से कठिन यातनाएं और कष्ट दिए थे। जब वे सामने आए तो आप ने फ़रमाया - لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ''मैंने आज तुम्हें क्षमा कर दिया''। यदि ऐसा अवसर प्राप्त न होता तो हुज़ूर (स.अ.व.) के ऐसे उच्च सदाचार क्योंकर प्रकट होते यह शान आप की और केवल आप की ही थी। कोई ऐसा आचरण बताओ जो आप में न हो और फिर असीम और पूर्ण तौर पर न हो।

हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के जीवन को देखकर कहना पड़ता है कि उन के सदाचार बिल्कुल गुप्त ही रहे। उद्दण्ड यहूद जिन्हें सरकार के यहां कुर्सियां मिलती थीं और रोम की सरकार उनकी बहुलता के कारण उनका सम्मान करती थी, मसीह को पीड़ा पहुँचाते रहे, परन्तु सत्ता का कोई समय हज़रत मसीह के जीवन में नहीं आया जिस से ज्ञात हो जाता कि वह प्रतिशोध पर समर्थ होने के बावजूद कहां तक क्षमा से काम लेते हैं परन्तु इसके विपरीत आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सदाचार ऐसे हैं कि वे अवलोकन और अनुभव की कसौटी पर पूर्ण तौर पर खरे सिद्ध हुए। वे मात्र बातें ही नहीं अपितु उनकी सच्चाई का प्रमाण हमारे हाथ में ऐसा ही है जैसे गणित और हिसाब के नियम उचित और निश्चित हैं और हम दो और दो चार की तरह उन्हें सिद्ध कर सकते हैं, परन्तु किसी अन्य नबी का अनुयायी ऐसा नहीं कर सकता। इसीलिए आप का उदाहरण एक ऐसे वृक्ष से दिया जिस की जड़, छाल, फल, फूल और पत्ते तात्पर्य यह कि प्रत्येक वस्तु लाभप्रद अपितु अत्यन्त लाभप्रद, आराम दायक और आनन्ददायक है। चूंकि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पश्चात् उम्मत में एक फूट उत्पन्न हो गई, इसलिए सदाचार की वह व्यापकता भी न रही अपितु पृथक-पृथक और सामूहिक तौर पर वे समस्त शिष्टाचार बिखर गए। इसलिए कुछ लोग कुछ सदाचार को सरलता पूर्वक प्रकट कर सकते हैं।

आत्म शुद्धि और मुक्ति

ख़ुदा का निर्देश तो यह है कि - قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا मुक्ति पाएगा वह व्यक्ति जिसने आत्मशुद्धि की और तबाह हो गया वह व्यक्ति जिस ने मनोवृत्ति को बिगाड़ा। 'फलह' चीरने को कहते हैं, फ़लाहत खेती को कहते हैं, आत्म-शुद्धि में भी 'फ़लाहत' है। तप-जप, कठोर परिश्रम, मानव मनोवृत्ति को उसके विकारों और कठोरताओं से शुद्ध करके इस योग्य बना

देता है कि उसमें वास्तविक ईमान का बीजारोपण किया जाए, फिर वह ईमान रूपी वृक्ष फल देने योग्य बन जाता है। चूंकि प्रारम्भिक स्तरों और पड़ावों में संयमी को बड़े-बड़े कष्टों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, इसलिए 'फलाह' अभिप्राय लिया गया है। एक अन्य स्थान पर फ़रमाया है -قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ अल्लाह तआला काफ़िरों की दशा का वर्णन करता है कि विनाश हो गया अटकल बाज़ी करने वालों का जिनके हृदय **ग़म्रह** में पड़े हुए हैं। **ग़म्रह** दबाने वाली वस्तु को कहते हैं जो सर न उठाने दे। खेत पर भी **ग़म्रह** पड़ता है जैसे खेतों पर पड़ता है जिसे करंड कहते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अटकल बाज़ी करने वालों का सर्वनाश हो गया, अभी तक उन के हृदय **ग़म्रह** में पड़े हुए है। मोमिनों को इस आयत में एक उदाहरण दे कर चेतावनी दी जाती है कि जब तक **ग़म्रह** दूर न हो तब तक बुद्धिमत्ता पूर्वक काम नहीं हो सकता और वे मनीषी नहीं कहलाते। 'क़ुतिला' इसलिए कहा कि वह दया का स्थान है जैसे वे कर्ता भी स्वयं ही हैं, स्वयं को तबाह किया। कुछ लोगों में अटकलबाज़ होने का तत्व होता है वे विवेक और दूरदर्शिता से काम नहीं लेते अपितु बदगुमानियों और अटकलों से काम लेते हैं और वे इसी में अपनी श्रेष्ठता समझते हैं। मेरा उद्देश्य यह था कि सदाचार के भाग में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पूर्ण आदर्श प्रस्तुत करूँ जो एक पूर्ण मनुष्य थे, तत्पश्चात् विभिन्न तौर पर आप (स.अ.व.) के सदाचारों से भाग लिया गया। किसी ने एक लिया, दूसरे ने कोई और, तथा एक को दूसरे में 'ग़म्रह' हो गया। जिस प्रकार किसान के लिए आवश्यक है कि वह इस ग़म्रह को दूर करे अन्यथा इसका परिणाम अन्य पौधों पर अच्छा नहीं होगा। इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक है कि वह अपने आन्तरिक ग़म्रह को दूर करे अन्यथा आशंका है कि अन्य अच्छी विशेषताओं को भी न खो बैठे।

रसूले करीम (स.अ.व.) का कथन 'हर रोग की दवा है' केवल प्रत्यक्ष रोगों तक ही सीमित नहीं

यह बात उचित नहीं कि मनुष्य कुछ सदाचार को परिवर्तित करने पर समर्थ है और कुछ पर नहीं। नहीं-नहीं। प्रत्येक रोग का इलाज मौजूद है لِكُلِّ دَاءٍ دَوَاءٌ खेद, लोग आप (स.अ.व.) के इस मुबारक कथन को महत्व नहीं देते और उसे केवल बाह्य रोगों तक ही सीमित समझते हैं। यह कितनी अज्ञानता और ग़लती है जिस स्थिति में एक नश्वर शरीर के लिए उसके सुधार और भलाई के समस्त साधन मौजूद हैं तो क्या यह सम्भव है कि मनुष्य के आध्यात्मिक रोगों का इलाज ख़ुदा तआला के पास कुछ भी न हो? है और अवश्य है!!

यह एक निश्चित और यथार्थ बात है कि ख़ुदा तआला उन लोगों की सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं, परन्तु जो सुस्ती और आलस्य से कार्य करते हैं वे अन्ततः तबाह हो जाते हैं।

वृद्धावस्था के दो प्रकार

मनुष्य पर जैसे एक ओर बनावट में कमी का समय आता है जिसे वृद्धावस्था कहते हैं उस समय आँखें अपना कार्य छोड़ देती हैं और कान सुन नहीं सकते। अतः शरीर का प्रत्येक अंग अपने कार्य से खाली और लगभग निलंबित हो जाता है। इसी प्रकार स्मरण रखो कि वृद्धावस्था दो प्रकार की होती है। भौतिक और अभौतिक। भौतिक तो वह है जैसा कि उपरोक्त वर्णन हुआ, अभौतिक वह है कि कोई अपने साथ लगे हुए रोगों की चिन्ता न करे तो वह मनुष्य को कमज़ोर करके समय से पूर्व वृद्ध बना दें। जिस प्रकार शारीरिक व्यवस्था में यह इसी प्रकार आन्तरिक और आध्यात्मिक व्यवस्था में होता है। यदि कोई अपने विकृत सदाचार को उत्तम सदाचार और अच्छे

स्वभावों से परिवर्तित करने का प्रयास नहीं करता तो उसकी नैतिक स्थिति बिल्कुल गिर जाती है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रवचन और क़ुर्आन करीम की शिक्षा से यह बात स्पष्ट तौर पर सिद्ध हो चुकी है कि प्रत्येक रोग की दवा है परन्तु यदि मनुष्य पर सुस्ती और आलस्य का प्रभुत्व हो जाए तो तबाही और विनाश के अतिरिक्त और क्या उपचार है। यदि ऐसी निस्पृहता से जीवन व्यतीत करे जैसा कि एक वृद्ध करता है तो क्योंकर बचाव हो सकता है।

सदाचार में परिवर्तन इसी स्थिति में कर सकते हैं जब कि परिश्रम और दुआ से काम लें

जब तक मनुष्य जप-तप नहीं करेगा, दुआ से काम न लेगा वह ग़म्रह जो हृदय पर पड़ जाता है दूर नहीं हो सकता। अतः अल्लाह तआला ने फ़रमाया है إِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِأَنْفُسِهِمْ ؕ अर्थात् अल्लाह तआला हर प्रकार का संकट और विपत्ति को जो क़ौम पर आती है दूर नहीं करता है जब तक क़ौम स्वयं उसे दूर करने का प्रयास न करे, साहस न करे, वीरता से काम न ले तो क्योंकर परिवर्तन हो। यह अल्लाह तआला का एक अपरिवर्तनीय नियम है। जैसा कि फ़रमाया لَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا अतः हमारी जमाअत हो या कोई अन्य हो वे सदाचार में परिवर्तन इसी स्थिति में कर सकते हैं जब कि घोर परिश्रम और दुआ से काम लें अन्यथा सम्भव नहीं।

सदाचार परिवर्तन के बारे में दार्शनिकों की दो विचारधाराएं हैं

सदाचार परिवर्तन पर दार्शनिकों की दो विचारधाराएं हैं। एक तो वे हैं जो यह मानते हैं कि मनुष्य सदाचार परिवर्तन पर समर्थ नहीं है। वास्तविकता यह है कि आलस्य और सुस्ती न हो और हाथ पैर हिलाए तो परिवर्तित हो सकते हैं। मुझे यहां पर एक वृत्तान्त स्मरण आया है और वह यह है - कहते हैं कि

यूनानियों के प्रसिद्ध दर्शनिक अफ़्लातून के पास एक व्यक्ति आया और द्वार पर खड़े हो कर अन्दर सूचना पहुँचाई। अफ़्लातून का नियम था कि जब तक आने वाले की मुखाकृति और मुख मंडल के निशानों को मालूम नहीं कर लेता या अन्दर नहीं आने देता था तथा वह मुखाकृति द्वारा ज्ञात कर लेता था कि वर्णित व्यक्ति कैसा है, किस प्रकार का है। नौकर ने उसकी मुखाकृति नियमानुसार बताई। अफ़्लातून ने उत्तर दिया कि उस व्यक्ति को कह दो कि चूंकि तुम्हारे अन्दर अधम सदाचार बहुत हैं, मैं मिलना नहीं चाहता। उस व्यक्ति ने जब अफ़्लातून का यह उत्तर सुना तो नौकर से कहा कि तुम जा कर कह दो कि जो कुछ आप ने फ़रमाया वह उचित है परन्तु मैंने अपने अधम और नीच स्वभाग को ध्वस्त करके सुधार कर लिया है। इस पर अफ़्लातून ने कहा हाँ यह हो सकता है। अतः उसे अन्दर बुलाया और नितान्त आदर सम्मान के साथ उस से भेंट की। जिन दार्शनिकों का यह विचार है कि सदाचार में परिवर्तन सम्भव नहीं वे ग़लती पर हैं। हम देखते हैं कि कुछ नौकरी में कार्यरत लोग जो घूस लेते हैं जब वे सच्ची तौबा (पश्चाताप) कर लेते हैं फिर उन्हें कोई स्वर्ण-पर्वत भी दे तो उसकी ओर देखते भी नहीं।

सदाचारों की प्राप्ति हेतु सर्वाधिक प्रेरक और सहायक वस्तु तौबः (पापों से पश्चाताप) है

तौबा के लिए तीन शर्तें

वास्तव में तौबः (पाप या किसी भी बुरे कार्य को त्याग देने के लिए दृढ़ संकल्प हो जाना। अनुवादक) सदाचारों की प्राप्ति के लिए नितान्त प्रेरक और समर्थक वस्तु है तथा मनुष्य को पूर्ण बना देती है अर्थात् जो व्यक्ति अपने बुरे आचरण को परिवर्तित करना चाहता है, उसके लिए आवश्यक है कि सच्चे हृदय और अटल इरादे के साथ तौबः करे। यह बात भी स्मरण रखना

चाहिए कि तौबः की तीन शर्तें हैं, इन को पूर्ण किए बिना सच्ची तौबः जिसे तौबतुन्नुसूह कहते हैं प्राप्त नहीं होती। इन तीनों शर्तों में से प्रथम शर्त जिसे अरबी भाषा में 'इक़्लाअ' कहते हैं, अर्थात् उन बुरे विचारों को दूर कर दिया जाए जो इन व्यर्थ आदतों के प्रेरक हैं।

मूल बात यह है कि कल्पनाओं का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है क्योंकि कर्म की परिधि में आने से पूर्व प्रत्येक कार्य एक काल्पनिक रूप रखता है। अतः तौबः के लिए प्रथम शर्त यह है कि उन बुरे विचारों और बुरी कल्पनाओं का त्याग कर दे। उदाहरणतया यदि एक व्यक्ति किसी स्त्री से कोई अवैध संबंध रखता हो तो उसे तौबः करने के लिए पहले आवश्यक है कि उसके रूप को कुरूप ठहराए तथा उसकी समस्त नीच आदतों को अपने हृदय में उपस्थित करे, क्योंकि जैसा मैंने अभी कहा है कल्पनाओं का प्रभाव बहुत शक्तिशाली प्रभाव है तथा मैंने सूफी लोगों की चर्चाओं में पढ़ा है कि उन्होंने कल्पना को यहां तक पहुँचाया कि उन्होंने मनुष्य को बन्दर या सुअर के रूप में देखा तात्पर्य यह कि जैसी कोई कल्पना करता है वैसा ही रंग चढ़ जाता है। अतः जो विचार बुरे आनन्दों का कारण समझ जाते थे उन्हें ध्वस्त करे। यह प्रथम शर्त है।

दूसरी शर्त 'नदम' है अर्थात् लज्जा और शार्मिन्दगी प्रकट करना। प्रत्येक व्यक्ति की अन्तरात्मा अपने अन्दर यह शक्ति रखती है कि वह उसे प्रत्येक बुराई पर सतर्क करती है, परन्तु दुर्भाग्यशाली मनुष्य उसे निलंबित छोड़ देता है। अतः पाप और बुराई करने पर लज्जा प्रकट करे और यह सोचे कि ये आनन्द अस्थायी कुछ दिन के हैं और फिर यह भी सोचे कि हर बार इस आनन्द और हर्ष में कमी होती जाती है, यहाँ तक कि वृद्धावस्था में आकर जब शक्तियां बेकार और कमज़ोर हो जाएंगी, अन्ततः इन समस्त सांसारिक आनन्दों को त्यागना होगा। अतः जब कि स्वयं जीवन में ही ये समस्त आनंद छूट जाने वाले हैं तो फिर उन्हें करने का क्या लाभ? बड़ा ही भाग्यशाली है

वह मनुष्य जो तौबः की ओर लौटे तथा जिस में पहले 'इक़्लाअ' का विचार उत्पन्न हो अर्थात् दूषित विचार और व्यर्थ कल्पनाओं का उन्मूलन करे जब यह अपवित्रता और गन्दगी निकल जाए तो फिर शर्मिन्दा हो तथा अपने कृत्यों पर लज्जित।

तीसरी शर्त 'अज़्म' (संकल्प) है अर्थात् भविष्य के लिए दृढ़ संकल्प करे कि फिर उन बुराइयों की ओर नहीं लौटेगा और जब वह नित्यता धारण करेगा तो ख़ुदा तआला उसे सच्ची तौबः की सामर्थ्य प्रदान करेगा, यहां तक कि उस से वे बुराइयां पूर्णतया समाप्त होकर उत्तम सदाचार और प्रशंसनीय कर्म उसका स्थान ग्रहण कर लेंगे और यह विजय है सदाचार पर, इस पर शक्ति और ताक़त प्रदान करना ख़ुदा तआला का कार्य है, क्योंकि समस्त ताक़तों और शक्तियों का स्वामी वही है, जैसा कि फ़रमाया اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا (अलबक़रह :166) समस्त शक्तियां अल्लाह तआला ही के लिए हैं तथा कमज़ोर आधार वाला मनुष्य तो कमज़ोर हस्ती है خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا उसका यथार्थ है। अतः ख़ुदा से शक्ति पाने के लिए उपरोक्त तीनों शर्तों को पूर्ण करके मनुष्य आलस्य और सुस्ती को त्याग दे तथा पूर्णतया उद्यत होकर ख़ुदा तआला से दुआ मांगे। अल्लाह तआला सदाचार को परिवर्तित कर देगा।

वास्तविक बलवान और योद्धा कौन है

हमारी जमाअत में बलवानों और पहलवानों की शक्ति रखने वाले अभीष्ट नहीं हैं जो आचरण में परिवर्तन करने का प्रयास करने वाले हों। यह वास्तविकता है कि वह व्यक्ति बलवान और शक्तिशाली नहीं जो पर्वत को उसके स्थान से हटा सके। नहीं नहीं। यथार्थ योद्धा वही है जो आचरण परिवर्तन पर समर्थ हो। अतः स्मरण रखो कि समस्त साहस और शक्ति आचरण को परिवर्तित करने में लगाओ, क्योंकि यही वास्तविक शक्ति और शूरता है।

महान् आचरण बड़ा भारी चमत्कार है

मैंने कल या परसों वर्णन किया था कि महान् आचरण बड़ा भारी चमत्कार है जो खबारिक़ आदत (स्वाभाविक नियमों के विपरीत अद्‌भुत चमत्कार। अनुवादक) मामलों को भी संदिग्ध कर सकता है। उदाहरणतया यदि आज चन्द्रमा के दो भाग होने का चमत्कार हो तो यह खगोल और भौतिक शास्त्र के विद्वान और विज्ञान पर मुग्ध होने वाले होने वाले इसे तुरन्त चन्द्र और सूर्य ग्रहण के प्रकारों में सम्मिलित करके इसकी श्रेष्ठता को कम करना चाहेंगे और जो पुराना चमत्कार अब प्रस्तुत करते हैं तो उसे कहानी ठहराते हैं। उदाहरणतया यही चन्द्र और सूर्य ग्रहण देखो जो रमज़ान माह में हुआ, जो महदी के निशानों में से एक आकाशीय निशान था। मैंने सुना है कुछ लोग कहते हैं कि यह तो खगोल-विद्या की दृष्टि से सिद्ध था कि रमज़ान में ऐसा हो। यह कहकर मानो उस हदीस को इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम की ओर से है के महत्व को कम करना चाहते हैं, परन्तु ये मूर्ख इतना नहीं सोचते कि नुबुव्वत प्रत्येक व्यक्ति नहीं कर सकता। नुबुव्वत भविष्यवाणी करने को कहते हैं अर्थात् हर किसी का कार्य नहीं है कि वह भविष्यवाणियां करता फिरे। ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया महदी और मसीह के दावेदार के युग में एक चन्द्र और सूर्य-ग्रहण रमज़ान में होगा तथा सृष्टि क्रम के प्रारम्भ से आज तक कभी नहीं हुआ। अतः यदि बौद्धिक तौर पर किसी प्रकार की संदिग्धता हो तो ऐसे विरोधियों को चाहिए कि वे ऐतिहासिक तौर पर उस भविष्यवाणी के महत्व को कम करके दिखाएं अर्थात् किसी ऐसे समय का पता दें जब कि रमज़ान में चन्द्र और सूर्य-ग्रहण इस तौर पर हुआ हो कि पहले किसी दावेदार ने दावा भी किया हो और जिस बात का दावा किया हो उस बात के सबूत में रमज़ान माह के चन्द्र और सूर्य-ग्रहण की किसी पहले नबी के युग में भविष्यवाणी भी की

गई हो परन्तु यह सम्भव नहीं कि कोई दिखा सके।

हमारे रसूलुल्लाह (स.अ.व) **को महा शक्तिशाली चमत्कार सदाचार ही का दिया गया**

मेरा इस घटना को वर्णन करने का उद्देश्य मात्र यह था कि आदत के विपरीत चमत्कारों पर तो किसी न किसी रूप में लोग बहाने प्रस्तुत कर देते हैं और उसे टालना चाहते हैं परन्तु नैतिक स्थिति एक ऐसा चमत्कार है जिस पर कोई उंगली नहीं रख सकता और यही कारण है कि हमारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सब से बड़ा और महाशक्तिशाली चमत्कार सदाचार का ही दिया गया। जैसे कि फ़रमाया - وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ यों तो आंहज़रत (स.अ.व.) के प्रत्येक प्रकार के आदत के विपरीत चमत्कार सिद्ध करने की शक्ति में समस्त नबियों के चमत्कारों से बढ़े हुए हैं परन्तु उन सब में आप (स.अ.व.) के नैतिक चमत्कार की गणना सर्वप्रथम है, जिसका उदाहरण विश्व का इतिहास उपलब्ध नहीं कर सकता और न प्रस्तुत कर सकेगा।

मैं समझता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति जो अपने बुरे आचरण को त्याग कर, निकृष्ट आदतों को छोड़ कर अच्छी आदतों को ग्रहण करता है उसके लिए वही चमत्कार है। उदाहरणतया यदि बहुत ही क्रूर स्वभाव और क्रोधी मुष्य इन बुरी आदतों का परित्याग करता है तथा सहिष्णुता और क्षमा को ग्रहण करता है अथवा कृपणता को छोड़कर दानशीलता और द्वेष के स्थान पर हमदर्दी करता है तो नि:सन्देह यह चमत्कार है और इसी प्रकार अहंकार और अभिमान को छोड़कर जब विनम्रता और विनीतता (ख़ाकसारी) धारण करता है तो यह विनीतता ही चमत्कार है। अत: तुम में से कौन है जो नहीं चाहता कि चमत्कारी बन जाए। मैं जानता हूँ प्रत्येक यही चाहता है तो फिर यह एक शाश्वत और स्पष्ट चमत्कार है मनुष्य नैतिक स्थिति को ठीक करे क्योंकि यह ऐसा चमत्कार है जिस का प्रभाव कभी समाप्त नहीं होता अपितु

उसका लाभ दूरगामी है। मोमिन को चाहिए कि सृष्टि और स्रष्टा की दृष्टि में चमत्कारी हो जाए। बहुत से शराबी और भोग-विलास का जीवन व्यतीत करने वाले ऐसे देखे गए हैं जो किसी स्वभाव से हटकर होने वाले चमत्कार को नहीं मानते परन्तु नैतिकता को देखकर वे भी नतमस्तक हो गए हैं और इक़रार और स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई मार्ग न मिला। बहुत से लोगों के जीवन-चरित्रों में इस बात को देखोगे कि उन्होंने नैतिक चमत्कार ही को देखकर सच्चे धर्म को स्वीकार कर लिया।

एक दिन ख़ुदा तआला के समक्ष जाना है अतः इस संसार से उत्तम स्थिति में कूच करो

अतः मैं पुनः पुकार कर कहता हूं और मित्र सुन रखें कि वे मेरी बातों को व्यर्थ न करें और उन्हें एक कहानीकार या वत्तान्त की कहानियों का ही रूप न दें अपितु मैंने ये समस्त बातें नितान्त हित और सच्ची हमदर्दी से जो स्वाभाविक तौर पर मेरी आत्मा में है की हैं उन्हें ध्यानपूर्वक सुनो और उनका पालन करो।

हां भली भांति याद रखो और उसे सच समझो कि एक दिन अल्लाह तआला के समक्ष जाना है। अतः यदि हम यहां से उत्तम स्थिति में कूच करते हैं तो हमारा सौभाग्य और प्रसन्नता है अन्यथा भयंकर स्थिति है। स्मरण रखो कि जब मनुष्य बुरी स्थिति में जाता है तो उसके लिए एक निकृष्ट स्थान यहाँ से ही आरम्भ हो जाता है अर्थात् मृत्यु के अन्तिम पलों से ही उसमें परिवर्तन प्रारम्भ हो जाता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है -

اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى (ताहा :74)

अर्थात् ''जो व्यक्ति अपराधी बन कर आएगा उसके लिए एक नर्क है जिसमें न मरेगा और न जीवित रहेगा।'' यह कैसी स्पष्ट बात है। जीवन का वास्तविक आनन्द सुख-चैन ही में है अपितु वह इसी स्थिति में उसके जीवित होने की

कल्पना की जाती है जब कि वह हर प्रकार के अमन और आराम में हो। यदि वह किसी अन्य पीड़ा उदाहरणतया अंत्र-शूल या दांत-दर्द में ही ग्रसित हो जाए तो वह मुर्दों से भी निकृष्ट होता है और स्थिति ऐसी होती है कि न तो मुर्दा ही होता है और न जीवित ही कहला सकता है। अतः इसी पर अनुमान कर लो कि नर्क के कष्टदायक प्रकोप में कैसी बुरी स्थिति होगी।

अपराधी वह है जो अपने जीवन में ख़ुदा तआला से अपना संबंध -विच्छेद कर ले

अपराधी वह है जो अपने जीवन में ख़ुदा तआला से अपना संबंध विच्छेद कर ले। उसे तो आदेश था कि वह ख़ुदा के लिए हो जाता और सदात्माओं के साथ हो जाता, परन्तु वह अवसरवादिता और कामवासना का दास बन कर रहा तथा उद्दण्डों और ख़ुदा तथा रसूल के शत्रुओं से सहमत रहा, मानो उसने अपनी कार्य पद्धति से दिखा दिया कि ख़ुदा तआला से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया है। यह ख़ुदा तआला का एक स्वभाव है कि मनुष्य जिस ओर पग उठाता है उसके विपरीत ओर से वह दूर होता जाता है। वह ख़ुदा तआला से पृथक होकर यदि अवसरवादिता और कामवासनाओं का दास होता है तो ख़ुदा उस से दूर होता जाता है और ज्यों-ज्यों इधर संबंध बढ़ते हैं उधर कम होते हैं। यह बात प्रसिद्ध है कि - **दिल रा बदिल रहीस्त** (दिल को दिल से राह होती है) अतः यदि ख़ुदा तआला से क्रियात्मक तौर पर अप्रसन्नता प्रकट करता है तो समझ ले कि ख़ुदा तआला भी उस से अप्रसन्न है और यदि ख़ुदा तआला से प्रेम करता है और उसकी ओर पानी की तरह झुकता है तो समझ ले कि वह महरबान है, प्रेम करने वाले से अधिक ख़ुदा तआला उससे प्रेम करता है, वह ख़ुदा है कि अपने प्रेमियों पर बरकतें उतारता है और उन्हें महसूस करा देता है कि ख़ुदा उनके साथ है यहां तक कि उनकी वाणी में तथा उनके होठों में बरकत रख देता है और लोग उन के कपड़ों और उन की हर बात से बरकत

पाते हैं। उम्मते मुहम्मदिया में उस का स्पष्ट सबूत इस समय तक विद्यमान है।

जो ख़ुदा का हो जाता है ख़ुदा तआला उसका हो जाता है

कि जो ख़ुदा तआला के लिए होता है ख़ुदा उसका हो जाता है। ख़ुदा तआला अपनी ओर आने वाले का प्रयास और प्रयत्न व्यर्थ नहीं करता। यह सम्भव है कि ज़मीदार अपने खेत नष्ट कर ले, नौकर पदच्युत हो कर हानि पहुँचाए, परीक्षा देने वाला सफल न हो, परन्तु ख़ुदा की ओर प्रयास करने वाला कभी भी असफल नहीं रहता, उस का सच्चा वादा है कि وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ط (अलअन्कबूत :70) ख़ुदा तआला के मार्गों की खोज में जो खोजी बना वह अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचा, सांसारिक परीक्षाओं के लिए तैयारियां करने वाले, रातों को दिन बना देने वाले विद्यार्थियों के परिश्रम और स्थिति को देख कर हम दया कर सकते हैं तो क्या ख़ुदा तआला जिस की करुणा और कृपा असीम और अनन्त है अपनी ओर आने वाले को नष्ट कर देगा? कदापि नहीं, कदापि नहीं। अल्लाह तआला किसी के प्रयास को व्यर्थ नहीं करता। اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ (अत्तौबः :120) और फिर फ़रमाता है مَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ (अज़्ज़िलज़ाल :8) हम देखते हैं कि प्रति वर्ष सहस्त्रों विद्यार्थी वर्षों के प्रयासों और परिश्रमों पर पानी फिरता देख कर रोते रह जाते हैं तथा आत्महत्याएं कर लेते हैं, परन्तु अल्लाह तआला की सर्वव्यापी कृपा ऐसी है कि वह तुच्छ से कर्म को भी व्यर्थ नहीं करती, फिर कितने खेद का स्थान है कि मनुष्य संसार में काल्पनिक और भ्रमयुक्त बातों की ओर तो इतना मुग्ध होकर परिश्रम करता है कि मानो अपने ऊपर आराम अवैध कर लेता है और मात्र व्यर्थ आशा पर कि कदाचित मैं सफल हो जाऊँ, सहस्त्रों संताप और कष्ट सहन करता है, व्यापारी लाभ की आशा पर लाखों रुपया लगा देता है परन्तु विश्वास उसे भी नहीं होता कि अवश्य लाभ ही होगा परन्तु मैं ख़ुदा की ओर जाने वाले की (जिसके वादे

निश्चित और यक़ीनी हैं कि जिसकी ओर चलने वाले का थोड़ा सा भी परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता) मैं इतनी दौड़-धूप और परिश्रम नहीं देखता हूँ। ये लोग क्यों नहीं समझते? वे क्यों नहीं डरते कि अन्ततः एक दिन मरना है। क्या वे उन असफलताओं को देखकर भी उस व्यापार की चिन्ता में नहीं लग सकते जहां हानि का नामोनिशान ही नहीं तथा लाभ निश्चित है। ज़मीदार कितने परिश्रम से खेती करता है परन्तु कौन कह सकता है कि परिणाम अवश्य सुखद ही होगा।

स्मरण रखो कि वह मार्ग जहां मनुष्य कभी असफल नहीं हो सकता वह ख़ुदा का मार्ग है

अल्लाह तआला कैसा दयालु है और यह कैसा ख़ज़ाना है कि क़ौड़ी भी जमा हो सकती है रुपया और अशर्फ़ी भी। न चोर-चकार का भय, न यह ख़तरा है कि देवाला निकल जाएगा। हदीस में आया है कि यदि कोई मार्ग से एक कांटा भी हटा दे तो उसका भी पुण्य उसे दिया जाता है और पानी निकालता हुआ यदि एक डोल अपने भाई के घड़े में डाल दे तो ख़ुदा तआला उसका भी प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता। अतः स्मरण रखो कि वह मार्ग जहां मनुष्य कभी असफल नहीं हो सकता वह ख़ुदा का मार्ग है। सांसारिक विशाल मार्ग ऐसा है जहां पग-पग पर ठोकरें और निराशाओं की चट्टानें हैं। वे लोग जिन्होंने राज्यों तक को त्याग दिया मूर्ख तो न थे जैसे इब्राहीम अदहम, शाहशुजा, शाह अब्दुल अज़ीज़ जो मुजद्दिद भी कहलाते हैं, शासन, राज्य तथा सांसारिक वैभव को त्याग बैठे उसका यही कारण तो था कि प्रत्येक पग पर एक ठोकर मौजूद है। ख़ुदा एक रत्न है, उसकी पहचान के पश्चात् मनुष्य भौतिक वस्तुओं को तिरस्कार और अपमानपूर्ण दृष्टि से देखता है कि उन्हें देखने के लिए भी उसे तबियत पर एक ज़ोर-ज़बरदस्ती करना पड़ती है। अतः ख़ुदा तआला को पहचानने की अभिलाषा करो तथा उसकी ओर ही पग बढ़ाओ कि सफलता इसी में है।

ईमान प्राप्ति का उपाय क्या है ?

अल्लाह तआला से सुधार की इच्छा करना तथा अपनी शक्ति का प्रयोग करना यही ईमान का उपाय है। हदीस में आया है कि जो पूर्ण विश्वास के साथ अपना हाथ दुआ के लिए उठाता है अल्लाह तआला उसकी दुआ अस्वीकार नहीं करता है। अतः ख़ुदा से मांगो तथा विश्वास और सच्ची नीयत से मांगो। मेरी नसीहत फिर यही है कि उत्तम सदाचार प्रकट करना ही अपना चमत्कार प्रकट करना है। यदि कोई कहे कि मैं चमत्कारी बनना नहीं चाहता तो यह स्मरण रखे कि शैतान उसे धोखे में डालता है। चमत्कार से अहंकार और अभिमान अभिप्राय नहीं है। चमत्कार से लोगों को इस्लाम की सच्चाई और वास्तविकता मालूम होती है और पथ-प्रदर्शन होता है। मैं तुम्हें पुनः कहता हूँ कि अहंकार और अभिमान तो नैतिक चमत्कार में सम्मिलित ही नहीं। अतः यह शैतानी भ्रम है। देखो यह करोड़ों मुसलमान संसार के भिन्न-भिन्न भागों में दिखाई देते हैं, क्या ये तलवार के बल पर या बलात मुसलमान हुए हैं ? नहीं यह सरासर ग़लत है। यह इस्लाम का चमत्कारिक प्रभाव है जो उन्हें खींच लाया है। चमत्कार कई प्रकार के होते हैं। उन सब में से एक नैतिक चमत्कार भी है जो प्रत्येक मैदान में सफल है। उन्होंने जो मुसलमान हुए केवल सदात्मा लोगों का चमत्कार ही देखा और उस का प्रभाव पड़ा, उन्होंने इस्लाम को श्रेष्ठता की दृष्टि से देखा न कि तलवार को देखा। महान् अंग्रेज़ अन्वेषकों को यह बात स्वीकार करना पड़ी है कि इस्लाम की सच्चाई की भावना ही ऐसी शक्तिशाली है जो अन्य जातियों को इस्लाम में आने पर विवश कर देती है।

हमारी जमाअत के लोग मेरे अनुयायी होकर मुझे बदनाम न करें

जो व्यक्ति अपने पड़ोसी को अपने सदाचार में परिवर्तन दिखाता है कि

पहले क्या था और अब क्या है, वह मानो एक चमत्कार दिखाता है। उसका प्रभाव पड़ोसी पर अत्यन्त उच्च श्रेणी का पड़ता है। हमारी जमाअत पर ऐतिराज़ करते हैं कि हम नहीं जानते कि क्या उन्नति हो गई है, और आरोप लगाते हैं कि झूठ घड़ने, क्रोध और अक्रोश में लिप्त हैं। क्या यह उनके लिए लज्जा का कारण नहीं है कि मनुष्य अच्छा समझ कर इस सिलसिले में आया था जैसा कि एक आज्ञाकारी पुत्र अपने पिता का यश प्रकट करता है क्योंकि बैअत करने वाला पुत्र के आदेश में होता है और इसी लिए आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नियों को मोमिनों की माताएं (उम्मुल मोमिनीन) कहा है जैसे कि आप (स.अ.व.) समस्त मोमिनों के पिता हैं। शारीरिक पिता पृथ्वी पर लाने का कारण होता है और भौतिक जीवन का कारण, परन्तु आध्यात्मिक पिता आकाश पर ले जाता तथा उस मूल केन्द्र की ओर मार्ग-दर्शन करता है। क्या आप चाहते हैं कि कोई पुत्र अपने पिता को बदनाम करे? वैश्या के यहां जाए? और जुआ खेलता फिरे, मदिरापान करे या अन्य ऐसे दुष्कर्म करे जो पिता की बदनामी का कारण हों। मैं जानता हूँ कोई व्यक्ति ऐसा नहीं हो सकता जो इस कृत्य को पसन्द करे, परन्तु वह कपूत पुत्र ऐसा करता है तो फिर प्रजा का मुख बन्द नहीं हो सकता लोग उसके बाप की ओर सम्बद्ध करके कहेंगे कि यह अमुक व्यक्ति का अमुक पुत्र बदनाम करता है। अतः वह कपूत बेटा स्वयं ही पिता की बदनामी का कारण होता है। इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति एक सिलसिले में प्रवेश करता है तथा उस सिलसिले की श्रेष्ठता और सम्मान का ध्यान नहीं रखता अपितु उस के विपरीत करता है तो ख़ुदा के निकट पकड़ में आ जाता है क्योंकि वह केवल स्वयं को ही विनाश में नहीं डालता अपितु दूसरों के लिए एक बुरा आदर्श हो कर उन्हें सौभाग्य और सद्मार्ग से वंचित रखता है। अतः जहां तक आप लोगों की शक्ति है ख़ुदा तआला से सहायता मांगो और अपनी पूर्ण शक्ति और साहस से अपने दोषों को दूर करने का प्रयास करो। जहां विवश हो जाओ

वहां श्रद्धा और विश्वास से हाथ उठाओ क्यों कि विनम्रता और विनय से उठे हाथ जो श्रद्धा और विश्वास की प्रेरणा से उठते हैं खाली वापस नहीं होते। हम अनुभव द्वारा करते हैं कि हमारी सहस्त्रों दुआएं स्वीकार हुई हैं और हो रही हैं।

यह एक निश्चित बात है कि यदि कोई व्यक्ति अपने अन्दर लोगों के लिए हमदर्दी का जोश नहीं पाता वह कंजूस है। यदि मैं एक मार्ग देखूँ जिसमें भलाई और हित है तो मेरा कर्तव्य है कि मैं पुकार-पुकार कर लोगों को बताऊँ।

इस बात की परवाह नहीं होना चाहिए कि कोई उस का पालन करता है या नहीं -

کس بشنو و یا نشنو و من گفتگوئے میکنم*

मैं तुम में एक स्पष्ट परिवर्तन चाहता हूँ

यदि एक व्यक्ति भी सुशील स्वभाव रखने वाला निकल आए तो पर्याप्त है। मैं यह बात स्पष्ट तौर पर वर्णन करता हूँ मेरे यथा-योग्य यह बात नहीं है कि मैं जो कुछ आप लोगों से कहता हूँ मैं पुण्य की नीयत से कहता हूं। नहीं! मैं अपने अन्दर नितान्त जोश और दर्द पाता हूँ यद्यपि कि वे कारण अज्ञात हैं कि क्यों जोश है, परन्तु इस में लेशमात्र भी सन्देह नहीं कि यह जोश ऐसा है कि मैं रुक नहीं सकता। इसलिए आप लोग इन बातों को ऐसे मनुष्य की वसीयतें समझ कर कि शायद फिर मिलने का अवसर प्राप्त न हो उन पर इस प्रकार कार्यरत हों कि एक आदर्श हो और उन लोगों को जो हम से दूर हैं अपने कर्म और कथन से समझा दो। यदि यह बात नहीं है और कर्म की आवश्यकता नहीं है तो फिर मुझे बताओ कि यहां आने का क्या उद्देश्य है। मैं गुप्त परिवर्तन नहीं चाहता, प्रकट परिवर्तन उद्देश्य है ताकि विरोधी लज्जित हों तथा लोगों के हृदयों पर एक पक्षीय प्रकाश पड़े और वे निराश हो जाएं कि ये

---

* कोई सुने न सुने मैं तो बोल रहा हूँ (अनुवादक)

विरोधी पथ-भ्रष्टता में पड़े हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ पर बड़े-बड़े उपद्रवी आकर पापों और बुराइयों के छोड़ने पर दृढ़ प्रतिज्ञ हुए, क्यों? इस महान परिवर्तन ने जो सहाबा(रज़ि.) में हुआ तथा उनके अनुकरणीय आदर्शों ने उन्हें लज्जित किया।

इकरिमा का पवित्र आदर्श

इकरिमा का हाल आप ने सुना होगा 'उहद' के संकट का कर्ता-धर्ता यही था तथा उसका पिता अबू जहल था परन्तु अन्तत: उसे सहाबा रज़ि. के आदर्शों ने लज्जित कर दिया। मेरी धारणा यह है कि अद्‌भुत चमत्कारों ने ऐसा प्रभाव नहीं किया जैसा आदरणीय सहाबा रज़ि. के पवित्र आदर्शों और परिवर्तनों ने लोगों को स्तब्ध कर दिया, लोग हैरान हो गए कि हमारे चाचा का पुत्र कहां से कहां पहुँच गया अन्तत: उन्होंने स्वयं को धोखा समझा। इकरिमा ने एक समय हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर आक्रमण किया और दूसरे समय काफ़िरों की सेना को अस्त-व्यस्त कर दिया। अतएव आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के युग में सहाबा रज़ि. ने जो पवित्र आदर्श प्रदर्शित किए हैं, हम आज गर्व के साथ उन्हें सबूत और निशानियों के रूप में वर्णन कर सकते हैं। अत: इकरिमा ही का आदर्श देखो कि कुफ्र के दिनों में अपने अन्दर कुफ्र, अहंकार इत्यादि बुरी आदतें रखता था और इच्छुक था कि यदि बस चले तो इस्लाम को संसार से मिटा दे, परन्तु जब परमेश्वर की कृपा ने उसकी सहायता की और वह इस्लाम से सम्मानित हुआ तो ऐसे शिष्टाचार पैदा हुए कि वह अहंकार और अभिमान बिल्कुल शेष न रहा तथा विनय और नम्रता पैदा हुई कि वह नम्रता इस्लाम का सबूत बन गई और इस्लाम की सच्चाई के लिए एक प्रमाण ठहरा। एक अवसर पर काफ़िरों से सामना हुआ। इकरिमा इस्लामी सेना का सेनापति था, क़ाफ़िरों ने बहुत सख्त मुक़ाबला किया यहां तक कि इस्लामी सेना की स्थिति पराजय के

निकट हो गई, इकरिमा ने जब देखा तो घोड़े से उतरा, लोगों ने कहा – आप क्यों उतरते हैं कदाचित इधर–उधर होने का समय हो तो घोड़ा सहायता दे, तो उसने कहा कि इस समय मुझे वह समय याद आ गया है जब मैं पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुकाबला करता था। मैं चाहता हूं कि प्राण देकर पापों का प्रायश्चित करूँ। अब देखिए कि स्थिति कहां से कहां तक पहुँची कि बार–बार प्रशंसाओं से स्मरण किया गया। यह स्मरण रखो कि ख़ुदा तआला की प्रसन्नता उन लोगों के साथ होती है जो उस की प्रसन्नता अपने अन्दर एकत्र कर लेते हैं अल्लाह तआला ने प्रत्येक स्थान पर उन्हें रज़ियल्लाहो अन्हुम (ख़ुदा उन से प्रसन्न हुआ) कहा है। मेरी नसीहत यह है कि प्रत्येक मनुष्य उन शिष्टाचारों का पालन करे।

उचित आस्थाओं और शुभ कर्मों को भी दृष्टिगत रखो

इसके अतिरिक्त दो भाग और भी हैं जिन्हें दृष्टिगत रखना सच्चे हितैषी का काम होना चाहिए, उनमें से एक भाग उचित आस्थाओं का है। यह परमेश्वर की नितान्त कृपा है कि उसने हमें पूर्णतम आस्थाओं का मार्ग अपने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा बिना परिश्रम और प्रयास के प्रदर्शित किया है, वह मार्ग जो आप लोगों को इस युग में दिखाया गया है बहुत से संसार अभी तक उस से वंचित हैं। अतः ख़ुदा तआला की इस कृपा और नैमत का आभार प्रकट करो और आभार यही है कि हार्दिक निष्ठा से उन शुभ कर्मों को करो जो उचित आस्थाओं के पश्चात् दूसरे भाग में आते हैं और अपनी व्यवहारिक स्थिति से सहायता ले कर दुआ मांगो कि वह उन उचित आस्थाओं पर सुदृढ़ रखे और शुभ कर्मों की सामर्थ्य प्रदान करे। इबादतों (उपासनाओं) के भाग में रोज़ा, नमाज़ और ज़कात इत्यादि बातें सम्मिलित हैं। अब विचार करो कि उदाहरणतया नमाज़ ही है, यह संसार में आई है परन्तु संसार से नहीं आई। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने

फ़रमाया - قُرَّةُ عَيْنِى فِى الصَّلٰوةِ (अर्थात् मेरी आँखों की शीतलता नमाज़ में है-अनुवादक)

नमाज़ के पांच समय

वास्तव में आध्यात्मिक अवस्थाओं का एक प्रतिबिम्बित चित्र है

और यह भी स्मरण रखो कि नमाज़ के लिए जो पांच समय नियुक्त हैं ये कुछ ज़ोर-ज़बरदस्ती के तौर पर नहीं अपितु यदि विचार करो तो वास्तव में आध्यात्मिक अवस्थाओं का एक प्रतिबिम्बित चित्र है जैसा कि ख़ुदा तआला ने फ़रमाया कि - اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ (बनी इस्राईल :79) अर्थात् क़ायम करो नमाज़ को دُلُوْكِ الشَّمْسِ (सूर्य के ढलने के समय) से। अब देखो अल्लाह तआला ने यहां नमाज़ के क़ायम करने को सूर्य ढलने के समय से लिया है। 'दुलूक' के अर्थों में यद्यपि मत-भेद है परन्तु दोपहर के ढलने के समय का नाम 'दुलूक' है। अब दुलूक से लेकर पांच नमाज़ें रख दीं। इसमें नीति और रहस्य क्या है ? प्रकृति का नियम दिखाता है कि आध्यात्मिक विनय और नम्रता की श्रेणियां भी दुलूक ही से प्रारम्भ होती हैं और पाँच ही अवस्थाएं आती हैं। अत: यह स्वाभाविक नमाज़ भी उस समय से आरम्भ होती है जब क्षोभ और शोक-संताप के लक्षण आरम्भ होते हैं उस समय जब कि मनुष्य पर कोई आपदा या संकट आता है तो कितनी नम्रता और विनय करता है। अब यदि उस समय यदि भूकम्प आए तो तुम समझ सकते हो कि तबियत में कैसी आर्द्रता और नम्रता पैदा हो जाती है इसी प्रकार विचार करो कि यदि उदाहरणतया किसी व्यक्ति पर अभियोग हो तो सम्मन या वारंट आने पर उसे ज्ञात होगा कि अमुक फौजदारी धारा अथवा दीवानी में दावा हुआ है। अब वारंट का अध्ययन करने के पश्चात् उसकी दशा में मानो आधे दिन

के बाद ढलना आरम्भ हुआ क्योंकि वारंट या सम्मन तक तो उसे कुछ ज्ञात न था अब विचार पैदा हुआ कि ख़ुदा जाने इधर वकील हो या क्या हो? इस प्रकार के असमंजस और चिन्ताओं से जो अवनति पैदा होती है यह वही ढलने की अवस्था है, और यह प्रथम अवस्था है जो 'ज़ुहर की नमाज़' के स्थान पर है और इस की प्रतिबिम्बित अवस्था 'ज़ुहर की नमाज़' है। अब द्वितीय अवस्था उस पर वह आती है जब वह अदालत के कमरे में खड़ा है, प्रतिवादी और अदालत की ओर से प्रतिप्रश्न (जिरह) हो रहे हैं। वह एक विचित्र अवस्था होती है, यह वह अवस्था और समय है जो असर की नमाज़ का नमूना है, क्योंकि असर घोटने और निचोड़ने को कहते हैं, जब अवस्था और भी संवेदनशील हो जाती है और अभियोग पत्र (चार्जशीट) लग जाता है तो निराशा और हताशा बढ़ती है क्योंकि अब विचार होता है कि दण्ड मिल जाएगा। यह वह समय है जो मग़रिब की नमाज़ का प्रतिबिम्ब है। तत्पश्चात् जब आदेश सुनाया गया और सिपाही या कोर्ट इन्सपैकटर के सुपुर्द किया गया तो वह आध्यात्मिक तौर पर 'इशा की नमाज़' का प्रतिबिम्बित चित्र है, यहां तक कि नमाज़ का प्रभाव प्रकट हुआ और اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا (अलइन्शिराह :7) की अवस्था का समय आ गया तो आध्यात्मिक 'नमाज़े फ़ज्र' का समय आ गया , तथा 'फ़ज्र की नमाज़' उसका प्रतिबिम्बित चित्र है।

तुम अपने शिष्टाचार और प्रकृतियों में एक विशेष परिवर्तन करो जो दूसरे के लिए पथ-प्रदर्शन और सौभाग्य का कारण हो।

अन्त में मैं पुनः तुम्हें सम्बोधित करते हुए कहता हूँ कि तुम मेरे साथ जो सच्चा सम्बन्ध पैदा करते हो, उसका उद्देश्य यही है कि तुम अपने शिष्टाचार में, प्रकृतियों में एक विशेष परिवर्तन करो जो दूसरों के लिए पथ-प्रदर्शन और सौभाग्य का कारण हो।

(रिपोर्ट जलसा सालाना 1897 ई. संकलनकर्ता शैख याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी पृष्ठ 130 से 167)